सर्वश्रेष्ठ

आना

अभी बाक़ी है।

बाइबल स्वर्ग के बारे में क्या कहती है।

सर्वश्रेष्ठ

आना

अभी बाक़ी है।

बाइबल स्वर्ग के बारे में क्या कहती है।

द्वारा

डैनी कनेडी



ट्रू कनेक्शंस

प्रेस

सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाक़ी है: बाइबल स्वर्ग के बारे में क्या कहती है।

कॉपीराइट © 2018 द्वारा- डैनी कनेडी
आवरण डिज़ाइन: गीनो मॉरो

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (न्यू लिविंग ट्रांसलेशन) अंकित है, वे पवित्र बाइबल, न्यू लिविंग ट्रांसलेशन से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1996, 2004, 2007, 2013, 2015 टिंडेल हाउस फ़ाउंडेशन। टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, इंक., कैरल स्ट्रीम, इलिनॉय 60188 की अनुमति से उपयोग किया गया। सर्वाधिकार सुरक्षित।

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (न्यू इंटरनेशनल वर्शन) अंकित है, वे पवित्र बाइबल, न्यू इंटरनेशनल वर्शन से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1973, 1978, 1984, 2011 बिब्लिका, इंक.™। ज़ोंडरवन की अनुमति से उपयोग किया गया। विश्वभर में www.zondervan.com सर्वाधिकार सुरक्षित। "न्यू इंटरनेशनल वर्शन" तथा "एन.आई.वी." संयुक्त राज्य अमेरिका के पेटेंट एवं ट्रेडमार्क कार्यालय में बिब्लिका, इंक.™ के पंजीकृत ट्रेडमार्क हैं।

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (किंग जेम्स वर्शन) अंकित है, वे किंग जेम्स वर्शन से लिए गए हैं। यह सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध है।

एम्प्लीफाइड बाइबल (एम्प्लीफाइड बाइबल) से लिए गए पवित्रशास्त्र उद्धरण। कॉपीराइट © 1954, 1958, 1962, 1964, 1965, 1987 द लॉकमैन फ़ाउंडेशन www.Lockman.org । अनुमति से उपयोग किया गया।
न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल (न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल) से लिए गए पवित्रशास्त्र उद्धरण। कॉपीराइट © 1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977, 1995 द लॉकमैन फ़ाउंडेशन www.Lockman.org । अनुमति से उपयोग किया गया।

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (जे. बी. फ़िलिप्स) अंकित है, वे द न्यू टेस्टामेंट इन मॉडर्न इंग्लिश—संशोधित संस्करण से लिए गए हैं। जे. बी. फ़िलिप्स द्वारा। कॉपीराइट © 1958, 1960, 1972 जे. बी. फ़िलिप्स। साइमन एंड शूस्टर, इंक. के एक विभाग, स्क्रिब्नर की अनुमति से पुनर्मुद्रित। सर्वाधिकार सुरक्षित।

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (द लिविंग बाइबल) अंकित है, वे द लिविंग बाइबल से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1971। टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, इंक., कैरल स्ट्रीम, इलिनॉय 60188 की अनुमति से उपयोग किया गया। सर्वाधिकार सुरक्षित।

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (न्यू सेंचुरी वर्शन) अंकित है, वे पवित्र बाइबल, न्यू सेंचुरी वर्शन से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1987, 1988, 1991 वर्ड पब्लिशिंग, डलास, टेक्सास 75039। अनुमति से उपयोग किया गया।

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (कॉन्टेम्पररी इंग्लिश वर्शन) अंकित है, वे कॉन्टेम्पररी इंग्लिश वर्शन से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1991, 1992, 1995 अमेरिकन बाइबल सोसाइटी। अनुमति से उपयोग किया गया।

जिन पवित्रशास्त्र उद्धरणों के साथ (द वर्ड) अंकित है, वे द वर्ड: 26 अनुवादों से बाइबल से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1988, 1991, 1993 मैथिस पब्लिशर्स, इंक., मॉस पॉइंट, मिसिसिपी 39562।

जब तक अन्यथा उल्लेख न किया गया हो, सभी पवित्रशास्त्र उद्धरण द मैसेज से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 1993, 1994, 1995, 1996, 2000, 2001, 2002 यूजीन एच. पीटरसन। नैवप्रेस की अनुमति से उपयोग किया गया। सर्वाधिकार सुरक्षित। टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, इंक. द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया।

प्रकाशक: द्रू कनेक्शंस प्रेस
आई.एस.बी.एन.-13: 978-0-9846967-5-8

समर्पण

यह पुस्तक रिचेस इन क्राइस्ट परिवार को समर्पित है। आपके प्रेम, मित्रता, प्रार्थनाओं और सहयोग के बिना इस पुस्तक का लिखा जाना संभव नहीं होता। आपका धन्यवाद।

परमेश्वर को और अधिक गहराई से जानने तथा उनका और भी सही रूप में प्रतिनिधित्व करने की हमारी भूख निरंतर बढ़ती रहे।

विषय-सूची

भूमिका: स्वर्ग के बारे में एक पुस्तक क्यों? 7

परिचय 10

भाग एक: वर्तमान स्वर्ग।

अध्याय 1 — स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है 13
अध्याय 2 — मनुष्यों ने स्वर्ग का दर्शन किया है 19
अध्याय 3 — जब हम मर जाते हैं, तब क्या होता है? 25
अध्याय 4 — स्वर्ग में जीवन 31
अध्याय 5 — स्वर्ग में हम कैसे होंगे? 43
अध्याय 6 — स्वर्ग में विवाह 55

भाग दो: नई पृथ्वी।

अध्याय 7 — पृथ्वी परमेश्वर की योजना का एक भाग है 64
अध्याय 8 — हम सदा के लिए पृथ्वी पर रहेंगे 73
अध्याय 9 — पृथ्वी पर स्वर्ग की राजधानी 81
अध्याय 10 — भविष्यद्वक्ता नई पृथ्वी के बारे में क्या कहते हैं 92
अध्याय 11 — नई पृथ्वी पर राष्ट्र, संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ 100
अध्याय 12 — नई पृथ्वी पर जीवन 110
अध्याय 13 — नई पृथ्वी पर जीवन के बारे में और अधिक 121
अध्याय 14 — स्वर्ग में पशु 134
अध्याय 15 — पृथ्वी पर स्वर्ग 147
अध्याय 16 — सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाक़ी है 151

निष्कर्ष 163

स्वर्ग का मार्ग 165

संदर्भ-टिप्पणियाँ 167

संदर्भ सूची 174

भूमिका: स्वर्ग के बारे में एक पुस्तक क्यों?

हम सबमें एक बात समान है—एक दिन हम सबको मरना है। यह निश्चित सत्य एक ऐसे प्रश्न को जन्म देता है जिससे बचा नहीं जा सकता: कब्र के उस पार क्या है? यह पुस्तक इसी प्रश्न के उत्तर की खोज में कई वर्षों तक की गई मेरी व्यक्तिगत यात्रा का परिणाम है। इस खोज में जो मैंने पाया, उसने मेरे जीवन को बदल दिया। मेरा विश्वास है कि यह आपके जीवन को भी बदल देगा।

एक मसीही होने के नाते मैं मृत्यु के बाद के जीवन और स्वर्ग की आशा पर विश्वास करती हूँ। लेकिन हमारे अनन्त घर के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। जितनी थोड़ी-बहुत बातें कही जाती हैं, उनसे स्वर्ग कोई बहुत आकर्षक स्थान नहीं लगता—मानो वह केवल बादलों और वीणाओं का स्थान हो, जहाँ लोग एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं। मैंने ऐसे अनेक पुरुषों और स्त्रियों की पुस्तकें पढ़ी हैं जो दावा करते हैं कि वे स्वर्ग की यात्रा कर चुके हैं। सच कहूँ तो वे मेरे लिए अधिक सहायक सिद्ध नहीं हुईं। कुछ पढ़कर अच्छा लगा, कुछ मुझे निरर्थक लगीं, जबकि कुछ ने मसीही विश्वास की मूल शिक्षाओं का ही विरोध किया। आज के समय का अधिकांश प्रचार भी इस विषय में बहुत सहायता नहीं देता, क्योंकि अधिकांश संदेश इस बात पर केन्द्रित रहते हैं कि इस वर्तमान जीवन को कैसे सबसे अच्छा बनाया जाए, जबकि मृत्यु के बाद क्या होता है, इस विषय का शायद ही कभी उल्लेख किया जाता है।

इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं स्वयं बाइबल से जानूँ कि मृत्यु के बाद का जीवन कैसा होगा। पहले मैं लोगों को यह कहते सुन चुकी थी कि बाइबल में स्वर्ग के बारे में बहुत कम लिखा गया है। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। जितना अधिक मैंने खोजा, उतना ही अधिक मुझे मिला। मैंने यह पुस्तक इसलिए लिखी है ताकि परमेश्वर के वचन से आने वाले जीवन के विषय में जो भरपूर और लाभदायक सत्य मैंने प्राप्त किए हैं, उन्हें दूसरों के साथ भी बाँट सकूँ।

अब इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मैं इस पुस्तक के बारे में कुछ संक्षिप्त बातें बताना चाहती हूँ, जो इसे पढ़ते समय आपको अधिकतम लाभ प्राप्त करने में सहायता करेंगी।

सबसे पहले, इस वर्तमान जीवन के बाद के जीवन के विषय पर पूरी एक पुस्तक लिखने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि यह वर्तमान जीवन महत्वहीन है। हरगिज़ नहीं। हर संभव

प्रयास करें कि अभी का जीवन सबसे उत्तम ढंग से जिएँ। बड़े सपने देखें! अपने लिए लक्ष्य निर्धारित करें!

अपने सपनों और लक्ष्यों को अपनी पूरी क्षमता के अनुसार पूरा करें! लेकिन साथ ही यह भी स्मरण रखें कि हमारे अस्तित्व का अधिकांश भाग इस जीवन के बाद है। मनुष्य अनन्त प्राणी है, जो मृत्यु के साथ अस्तित्व में रहना बंद नहीं कर देता। इसलिए यदि हम सौ वर्ष तक भी जीवित रहें, तो भी वह अनन्तकाल की तुलना में अत्यन्त नगण्य है। यदि हम इस जागरूकता के साथ जीना नहीं सीखते कि जीवन केवल इसी संसार तक सीमित नहीं है, तो इस अत्यन्त चुनौतीपूर्ण संसार का सामना करना हमारे लिए कहीं अधिक कठिन हो जाएगा। इतना ही नहीं, आने वाले जीवन में जो हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, उसकी आशापूर्ण प्रतीक्षा से मिलने वाले आनन्द से भी हम वंचित रह जाएँगे। इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य आपकी सोच को एक नया दृष्टिकोण देना है, ताकि आप इस वर्तमान जीवन को पूरी परिपूर्णता के साथ जीते हुए भी अपने जीवन को अनन्तकाल के दृष्टिकोण से देखना आरम्भ करें।

दूसरी बात, इस पुस्तक को एक उद्देश्यपूर्ण और क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित किया गया है। स्वर्ग को परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना के संदर्भ में ही सही प्रकार से समझा जा सकता है। इसलिए मैंने हमारे अनन्त घर से संबंधित बातों को मानवजाति और पृथ्वी की रचना के पीछे परमेश्वर के उद्देश्य के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है। प्रारम्भिक अध्यायों में मैं कुछ ऐसी बातों का परिचय देती हूँ, जिनका विस्तार आगे के अध्यायों में क्रमशः किया गया है। इसका अर्थ यह है कि पुस्तक के आरम्भ में आपको कुछ ऐसी बातें मिलेंगी जिनकी पूरी चर्चा बाद में की जाएगी, इसलिए सम्भव है कि आपके मन में और अधिक जानने की इच्छा उत्पन्न हो। धैर्य रखें और पढ़ना जारी रखें, क्योंकि पुस्तक के दूसरे भाग में आपको उनका अधिक विस्तृत विवरण मिलेगा। चूँकि यह पुस्तक क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ती है, इसलिए केवल अधिक रुचिकर लगने वाले अध्यायों तक पहुँचने के लिए बीच के अध्याय छोड़ देना लाभदायक नहीं होगा। प्रत्येक अध्याय पहले के अध्यायों में रखी गई नींव पर आधारित है।

तीसरी बात, यह पुस्तक इस विषय का सम्पूर्ण और विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करने का दावा नहीं करती। मेरा एक उद्देश्य यह भी था कि पुस्तक यथासंभव संक्षिप्त रहे। इसलिए मैंने स्वर्ग के जीवन से जुड़े प्रत्येक विषय पर चर्चा नहीं की है। कुछ विषय ऐसे भी हैं जिन पर और अधिक विस्तार से लिखा जा सकता था। इसी प्रकार मैंने स्वर्ग के बारे में उठने वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास भी नहीं किया है। फिर भी मैंने उन सबसे सामान्य विचारों और चिंताओं पर चर्चा करने का प्रयास किया है जिन्हें लोग मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में प्रायः व्यक्त करते हैं। मेरा विश्वास है कि इस छोटी-सी पुस्तक को पूरा पढ़ लेने

के बाद, भले ही आपके हर प्रश्न का उत्तर अभी न मिला हो, फिर भी आपके हृदय में भविष्य के प्रति आशा और उत्साह अवश्य भर जाएगा।

चौथी बात, पढ़ते समय आप देखेंगे कि कहीं-कहीं मैंने कुछ शब्दों के मूल अर्थों का उल्लेख किया है और बाइबल के अनेक भिन्न-भिन्न अनुवादों का भी उद्धरण दिया है। बाइबल मूल रूप से अंग्रेज़ी भाषा में नहीं लिखी गई थी। इसके लेखकों ने पुराने नियम को इब्रानी भाषा में और नए नियम को यूनानी भाषा में लिखा था। सदियों के दौरान पवित्रशास्त्र का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया, जिनमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है। अंग्रेज़ी का सबसे प्रसिद्ध अनुवाद किंग जेम्स वर्शन है। मैं प्रायः इसी का अध्ययन करती हूँ और अपने अध्ययन में इसका सबसे अधिक उपयोग करती हूँ। लेकिन किंग जेम्स वर्शन का अनुवाद सन् 1611 में किया गया था, और तब से अंग्रेज़ी भाषा में बहुत परिवर्तन आ चुका है। सत्रहवीं शताब्दी में प्रचलित अनेक शब्द आज उपयोग में नहीं हैं, और कई शब्दों के अर्थ भी बदल चुके हैं। इसलिए कई बार किंग जेम्स वर्शन के कुछ पदों का सही अर्थ स्पष्ट करने के लिए मूल यूनानी और इब्रानी शब्दों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। साथ ही, उन अन्य अनुवादों को देखना भी उपयोगी होता है जिनमें आधुनिक अंग्रेज़ी के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग किया गया है, जबकि वे मूल इब्रानी और यूनानी भाषा के प्रति भी विश्वासयोग्य बने रहते हैं। इसके अतिरिक्त, इस पुस्तक में पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरणों को तिरछे अक्षरों में प्रस्तुत किया गया है ताकि वे स्पष्ट रूप से अलग दिखाई दें, और पवित्रशास्त्र के भीतर कुछ विशेष शब्दों तथा अंशों पर विशेष बल देने के लिए उन्हें गाढ़े अक्षरों में दर्शाया गया है।

अन्त में, पुस्तक में आपको कई स्थानों पर ऐसे संकेत मिलेंगे जहाँ किसी विशेष विषय से संबंधित अतिरिक्त जानकारी के लिए आपको टिप्पणियाँ देखने के लिए कहा जाएगा। ये टिप्पणियाँ पुस्तक के अंत में दी गई हैं।

परिचय

यद्यपि हम इसे स्वीकार करना नहीं चाहते, फिर भी हममें से अधिकांश लोग स्वर्ग जाने के लिए उतने उत्साहित नहीं होते। यदि हम पूरी ईमानदारी से अपने मन की बात कहें, तो हमारे लिए स्वर्ग का सबसे बड़ा आकर्षण केवल इतना है कि वह नरक नहीं है। आखिर कौन सचमुच हमेशा के लिए किसी बादल पर रहकर वीणा बजाना चाहेगा, चाहे उस बादल पर एक भव्य भवन और सोने की सड़क ही क्यों न हो? हममें से बहुत कम लोग अनन्तकाल तक केवल गीत गाते और आराधना करते हुए कभी समाप्त न होने वाली आराधना-सभा में समय बिताने की कल्पना से उत्साहित होते हैं। और यह विचार कि हम अपने प्रियजनों को पहचान भी नहीं पाएँगे, स्वर्ग को और भी कम आकर्षक बना देता है। इसके अतिरिक्त, क्या वास्तव में कोई इस सुंदर संसार को पीछे छोड़कर जाना चाहता है? निस्संदेह, हम जीवन की कठिनाइयों और परेशानियों से छुटकारा पाकर प्रसन्न होंगे। लेकिन यह सोचना कि हम फिर कभी किसी पहाड़ी झरने के किनारे नहीं बैठेंगे, एक और सूर्योदय नहीं देखेंगे, या अपने चेहरे पर गर्मियों की शीतल हवा का स्पर्श महसूस नहीं करेंगे, मन को बहुत उदास कर देता है।

सौभाग्य से, स्वर्ग के जीवन के बारे में कही गई ये सभी बातें बाइबल की शिक्षा के बिल्कुल विपरीत हैं। इस पुस्तक में हम यह जानेंगे कि स्वर्ग के बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है। स्वर्ग कहाँ है? वह कैसा है? वहाँ जाने के लिए आपको उत्साहित क्यों होना चाहिए? हमारे अनन्त घर के बारे में सही जानकारी के अभाव ने बहुत-से लोगों से वह आशा और आनन्द छीन लिया है जो उनके जीवन का एक महान स्रोत होना चाहिए था। सच्चाई यह है कि हम स्वर्ग जा रहे हैं, और हमारे अस्तित्व का कहीं अधिक महान और श्रेष्ठ भाग अभी हमारे सामने है!

बाइबल उन लोगों के वृत्तांत दर्ज करती है जिन्होंने हमारे भावी घर का दर्शन किया था। उन्होंने वहाँ जो देखा और सुना, उसकी गवाही प्रकट करती है कि जो लोग प्रभु को जानते हैं, उनके लिए सर्वश्रेष्ठ अभी आना बाकी है। उन लोगों में से एक महान प्रेरित पौलुस था, जो यीशु के प्रारम्भिक अनुयायियों में से एक था। उसकी मृत्यु से कई वर्ष पहले उसे स्वर्ग में ले जाया गया था। बाद में जब वह अपने विश्वास के कारण बन्दीगृह में था और उसके सामने मृत्युदण्ड दिए जाने की संभावना थी, तब उसने लिखा, *"क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ है... मेरी लालसा यह है कि मैं कूच करके मसीह के साथ रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही उत्तम है।"* (फिलिप्पियों अध्याय 1 आयत 21 से 23)। पौलुस को मृत्यु का कोई भय नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि उसके जीवन के सबसे उत्तम दिन अभी उसके सामने

हैं। लोग अक्सर इस जीवन के बाद के जीवन को परलोक कहते हैं। लेकिन यह ठीक नहीं है। वास्तव में, यह वर्तमान जीवन तो पूर्व-जीवन है।

अक्सर यह कहा जाता है कि जो लोग मर चुके हैं, वे अब एक बेहतर स्थान पर हैं। दुर्भाग्य से, स्वर्ग के बारे में फैली गलत धारणाओं के कारण यह गहरा सत्य केवल एक धार्मिक सांत्वना भर बनकर रह गया है। बेहतर का अर्थ है—श्रेष्ठ और इसलिए अधिक लाभदायक, न कि वैसा जैसा अधिकांश लोग स्वर्ग के बारे में सोचते हैं (वेब्स्टर्स न्यू स्टूडेंट्स डिक्शनरी, 1969)। पौलुस अपने स्वयं के अनुभव से जानता था कि स्वर्ग का जीवन वास्तव में बेहतर है। एक ऐसे व्यक्ति की गवाही के अनुसार जो स्वयं वहाँ जा चुका था, स्वर्ग का जीवन इस वर्तमान जीवन से कहीं बढ़कर है, क्योंकि वहाँ सब कुछ लाभ ही लाभ है।

जब हम मरते हैं, तब हमारे लिए क्या प्रतीक्षा कर रही है, इसके बारे में बाइबल बहुत कुछ कहती है। स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है, जहाँ वास्तविक लोग रहते हैं और वास्तविक कार्य करते हैं। पृथ्वी पर अनेक वस्तुएँ और गतिविधियाँ स्वर्ग की बातों के प्रतिरूप हैं, जो हमें इस बात की एक झलक देती हैं कि स्वर्ग कैसा है और वहाँ पुरुष तथा स्त्रियाँ किस प्रकार जीवन बिताते हैं। यद्यपि परमेश्वर का वचन मृत्यु के बाद के जीवन से जुड़े प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नहीं देता, फिर भी वह हमें इतनी जानकारी अवश्य देता है कि हम पूरे विश्वास के साथ जान सकें कि जो हमारे सामने है, वह कहीं अधिक श्रेष्ठ है। स्वर्ग हानि नहीं, बल्कि लाभ है, और सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाक़ी है।

भाग एक:



वर्तमान स्वर्ग।



स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है।

बहुत से लोग स्वर्ग जाने के विचार से संघर्ष करते हैं, क्योंकि वह उन्हें वास्तविक नहीं लगता। वह किसी दूसरी दुनिया की बात प्रतीत होती है। हम उसे देख नहीं सकते, छू नहीं सकते, और जब हम वहाँ जाते हैं तो हमारा यह शरीर हमारे साथ नहीं जाता। परन्तु स्वर्ग कोई भूत-जैसा लोक नहीं है, जहाँ पारदर्शी प्राणी निवास करते हों। वह एक वास्तविक स्थान है।

हम स्वर्ग को छू या देख नहीं सकते, इसका कारण यह नहीं कि वह अवास्तविक है या इस संसार से कम वास्तविक है, बल्कि इसलिए कि वह एक अन्य आयाम में स्थित है। मनुष्य एक ऐसे स्थान-काल के निरंतर क्रम में रहता है, जो भौतिक पदार्थ से बना है और जिसे हम अपनी पाँचों इंद्रियों के द्वारा अनुभव करते हैं। परन्तु वास्तविकता केवल उतनी ही नहीं है, जितनी हम अपनी आँखों से देखते, कानों से सुनते, स्पर्श करते, सूँघते या स्वाद लेते हैं। क्वांटम भौतिकी में हुई हाल की खोजों ने वैज्ञानिकों को इस निष्कर्ष पर पहुँचाया है कि मनुष्यों द्वारा पहचाने जा सकने वाले तीन आयामों—लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई—से परे भी दस ऐसे आयाम हैं, जिन्हें देखा और समझा जा सकता है (मिस्लर और ईस्टमैन, 1997, पृष्ठ 85–86)।

एक अदृश्य संसार।

विज्ञान अब धीरे-धीरे उस सत्य की पुष्टि करने लगा है, जिसे बाइबल सदियों से हमें बताती आई है: एक अदृश्य लोक है—एक ऐसा आयाम जो सामान्यतः पृथ्वी पर रहने वाले स्त्री-पुरुषों को दिखाई नहीं देता (2 कुरिन्थियों अध्याय 4 आयत 18; कुलुस्सियों अध्याय 1 आयत 16)। परमेश्वर का वचन अनेक ऐसी घटनाओं का वर्णन करता है, जब इस अदृश्य लोक का

परदा कुछ समय के लिए हट गया और कुछ व्यक्तियों को उस अदृश्य संसार को देखने की अनुमति मिली। आइए, उनमें से दो घटनाओं पर विचार करें।

स्वर्गदूत रक्षक।

पहली घटना आज से लगभग अट्ठाईस सौ वर्ष पहले की है। सीरिया के राजा ने इस्राएल के राज्य के विरुद्ध एक सैन्य अभियान आरम्भ किया। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सीरिया की गुप्त युद्ध-योजनाओं को महान इब्रानी भविष्यद्वक्ता एलीशा पर प्रकट कर दीं, जिससे इस्राएल को युद्ध में रणनीतिक बढ़त प्राप्त हुई। जब सीरिया के राजा के सलाहकारों ने उसे इस परिस्थिति से अवगत कराया, तब उसने इस्राएल के दोतान नगर में उस भविष्यद्वक्ता को पकड़ने के लिए सैनिक भेजे (2 राजा अध्याय 6 आयत 8 से 23)।

एक सुबह एलीशा का सेवक अपने प्रतिदिन के कार्य करने के लिए बहुत प्रातःकाल उठा। जब उसने देखा कि पूरा नगर शत्रु की सेना से घिरा हुआ है, तो वह भय से काँप उठा। परन्तु एलीशा तनिक भी भयभीत नहीं हुआ, क्योंकि वह जानता था कि अदृश्य आयाम में रहने वाले प्राणी उसकी रक्षा कर रहे हैं। वह पहले भी एक अवसर पर उन्हें देख चुका था। तब भविष्यद्वक्ता ने प्रभु से प्रार्थना की कि वह उस युवक की आँखें खोल दे, ताकि वह भी अपने रक्षकों को देख सके।

"तब यहोवा ने उस सेवक की आँखें खोल दीं, और उसने देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ी प्रदेश आग के घोड़ों और रथों से भरा हुआ है।" (2 राजा अध्याय 6 आयत 17)।

एलीशा और उसके सेवक ने वास्तविक घोड़ों और वास्तविक रथों को देखा। वे रथ और घोड़े आग के समान दिखाई देते थे। इसका कारण यह नहीं था कि वे अग्नि से बने हुए थे, बल्कि इसलिए कि वे उस अदृश्य लोक की महिमामय ज्योति को प्रतिबिंबित कर रहे थे।

स्वर्गदूत संदेशवाहक।

दूसरी घटना लगभग दो हज़ार वर्ष पहले उस रात घटी, जब यीशु ने इस संसार में जन्म लिया। जब चरवाहे बैतलहम नगर के निकट एक मैदान में अपने झुंडों की रखवाली कर रहे थे, तब एक स्वर्गदूत स्वर्गीय आयाम से प्रकट हुआ और उन्हें प्रभु के आगमन का समाचार सुनाया। शीघ्र ही उसके साथ असंख्य स्वर्गदूत आ मिले, जो परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। जब इन स्वर्गदूतों ने अपना संदेश सुना दिया, तब दृश्य और अदृश्य लोक के बीच खुला हुआ मार्ग फिर बंद हो गया।

"उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके सामने आ खड़ा हुआ, और प्रभु की महिमा का तेज उनके चारों ओर चमकने लगा। उसने कहा, 'मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ, जो सब लोगों के लिए होगा। क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है, जो मसीह प्रभु है।'... तभी उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्ग की सेना का एक विशाल समूह आ मिला, जो परमेश्वर की स्तुति करते हुए कह रहा था, 'सर्वोच्च स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर उन लोगों में शान्ति हो, जिनसे वह प्रसन्न है।'... तब वे स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को लौट गए।" (लूका अध्याय 2 आयत 9 से 15)।

इन दोनों घटनाओं में पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के सामने अदृश्य संसार का परदा कुछ समय के लिए हट गया, और वे उन बातों को देखने में समर्थ हुए जो पहले उनकी दृष्टि से ओझल थीं। स्वर्ग से आए ये आगन्तुक—स्वर्गदूत तथा घोड़े और रथ—उस समय अचानक अस्तित्व में नहीं आए थे, जब एलीशा, उसका सेवक और चरवाहों ने उन्हें देखा। वे तो पहले से ही वहाँ उपस्थित थे। अंतर केवल इतना था कि वे एक भिन्न आयाम में थे।

स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है।

स्वर्ग किसी हल्के, पारदर्शी बादलों से बना हुआ स्थान नहीं है। वह एक वास्तविक और ठोस स्थान है। स्वयं यीशु ने ऐसा कहा। उन्हें यह भली-भाँति ज्ञात था, क्योंकि वे इसी अदृश्य राज्य से आए थे (यूहन्ना अध्याय 3 आयत 13; यूहन्ना अध्याय 6 आयत 38)। उस बात पर ध्यान दीजिए जो प्रभु ने अपनी क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले अपने बारह शिष्यों से कही थी। उनके ये वचन उस अदृश्य आयाम की वास्तविकता को प्रकट करते हैं।

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो। तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में रहने के बहुत से स्थान हैं। यदि ऐसा न होता, तो मैं तुमसे कह देता। मैं तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।" (यूहन्ना अध्याय 14 आयत 1 से 3)।

यीशु अब स्वर्ग लौटने वाले थे और उन लोगों को छोड़ने वाले थे जिनके साथ उन्होंने साढ़े तीन वर्षों तक प्रतिदिन समय बिताया था। उनके ये वचन उन्हें सांत्वना देने और यह प्रोत्साहन देने के लिए थे कि उनका यह आने वाला बिछोह स्थायी नहीं, बल्कि केवल कुछ समय के लिए है। अंततः वे सब फिर से एक साथ होंगे। प्रभु ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि वे अपने पिता के घर में उनके लिए एक स्थान तैयार करेंगे।

वेब्स्टर न्यू स्टूडेंट्स डिक्शनरी (1969) में "स्थान" का अर्थ "अंतरिक्ष में एक निश्चित स्थान" बताया गया है। यीशु एक वास्तविक स्थान पर लौट रहे थे, जहाँ एक दिन उनके शिष्य भी उनके साथ होंगे।

कुछ लोग इस पद के आधार पर यह मानते हैं कि स्वर्ग में हम में से प्रत्येक को एक बहुत बड़ी हवेली मिलेगी—संगमरमर, ग्रेनाइट या किसी अन्य उत्कृष्ट पदार्थ से निर्मित एक महल, जो सोने और बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित होगा। वास्तव में यह धारणा हमारे भविष्य के घर को कुछ लोगों के लिए कम आकर्षक भी बना सकती है, क्योंकि ऐसा भवन बहुत से लोगों को आकर्षित नहीं करता। परन्तु यीशु ने कभी यह नहीं कहा कि हमें कोई विशाल महल मिलेगा।

"हवेली" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द का अर्थ है "निवास करना" या "ठहरे रहना।" प्रभु यीशु का अभिप्राय यह था कि उनके पिता के घर में पर्याप्त स्थान है, जहाँ वे और उनके सभी अनुयायी एक साथ रह सकते हैं।

"मेरे पिता के घर में रहने के बहुत से स्थान हैं।" (यूहन्ना अध्याय 14 आयत 2)।

"निवास करने के बहुत से स्थान [घर] हैं।" (यूहन्ना अध्याय 14 आयत 2)।

स्वर्ग का वास्तविक अस्तित्व है।

यद्यपि इस समय स्वर्ग हमारी दृष्टि से अदृश्य है, फिर भी उसका वास्तविक अस्तित्व है और वह ठोस वास्तविकता रखता है। परमेश्वर का निवास-स्थान इतना वास्तविक है कि कम-से-कम तीन व्यक्ति अपने भौतिक शरीर सहित वहाँ रह रहे हैं। यीशु इस समय उसी भौतिक शरीर में उस अदृश्य लोक में निवास कर रहे हैं, जिसे उन्होंने पृथ्वी पर रहते समय धारण किया था। क्रूस पर उनकी मृत्यु के बाद उनके निर्जीव शरीर को कब्र में रखा गया। तीन दिन बाद यीशु मृतकों में से जी उठे। बाइबल के अनुसार, उनके पुनर्जीवित होने के बाद लोगों ने उन्हें देखा और छुआ। उन्होंने उन्हें बोलते हुए सुना और खाते हुए भी देखा। उन्होंने यह भी देखा कि अपने पुनरुत्थान के चालीस दिन बाद हमारा उद्धारकर्ता उसी वास्तविक और भौतिक शरीर सहित स्वर्ग में उठा लिया गया।

"जब वे [उनके शिष्य] इन बातों के विषय में बात कर ही रहे थे [कि पुनर्जीवित प्रभु लोगों को दिखाई दे रहे हैं], तभी यीशु स्वयं उनके बीच में आ खड़े हुए और उनसे कहा, 'तुम्हें शान्ति मिले।' वे घबरा गए और भयभीत हो उठे, क्योंकि उन्हें लगा कि वे कोई आत्मा देख रहे हैं। तब उन्होंने उनसे कहा, 'तुम क्यों घबरा रहे हो? तुम्हारे मन में संदेह क्यों उठ रहे हैं? मेरे हाथों और मेरे पैरों को देखो। यह मैं ही हूँ। मुझे छूकर देखो, क्योंकि आत्मा के मांस और

हड्डियाँ नहीं होतीं, जैसी तुम मुझ में देख रहे हो।' यह कहकर उन्होंने उन्हें अपने हाथ और पैर दिखाए।" (लूका अध्याय 24 आयत 36 से 40)।

"जब वे आनन्द और आश्चर्य के कारण अब भी विश्वास नहीं कर पा रहे थे, तब उन्होंने उनसे पूछा, 'क्या तुम्हारे पास यहाँ खाने के लिए कुछ है?' उन्होंने उन्हें भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया। उन्होंने उसे लिया और उनके सामने खाया।" (लूका अध्याय 24 आयत 41 से 43)।

"[चालीस दिन बाद] जब वे [यीशु] उन्हें बैतनिय्याह के निकट तक ले गए, तब उन्होंने अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। और ऐसा हुआ कि आशीष देते-देते वे उनसे अलग हो गए और स्वर्ग में उठा लिए गए।" (लूका अध्याय 24 आयत 50 से 51)।

प्रभु के अपने स्वर्गीय पिता के घर लौटने के कुछ ही महीनों बाद स्तिफनुस नामक एक व्यक्ति को मसीह में अपने विश्वास के कारण पत्थरवाह करके मार डाला गया। वह यीशु के अनुयायियों में पहला शहीद बना। जब उसके हत्यारे उस पर पत्थरों की वर्षा कर रहे थे, तब दृश्य और अदृश्य संसार के बीच का परदा कुछ क्षणों के लिए हट गया और स्तिफनुस ने स्वर्ग में यीशु को देखा।

"परन्तु स्तिफनुस, जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, उसने स्वर्ग की ओर दृष्टि की और परमेश्वर की महिमा तथा यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़े देखा। तब उसने कहा, 'देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़ा देख रहा हूँ।'" (प्रेरितों के काम अध्याय 7 आयत 55 से 56)।

ध्यान दीजिए कि यीशु न तो पारदर्शी थे और न ही किसी आत्मा के समान दिखाई दे रहे थे। वे किसी बादल पर तैर भी नहीं रहे थे। वे अपने भौतिक शरीर में परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ खड़े थे। स्तिफनुस ने ऐसे आयाम की झलक देखी जिसमें वास्तविक अस्तित्व था और जहाँ वस्तुओं के बीच स्थानिक संबंध भी था। यही वह लोक था, जिसमें उसने अपनी अंतिम साँस लेते ही प्रवेश किया।

स्वर्ग में केवल यही एक भौतिक शरीर नहीं है।

बाइबल यह भी बताती है कि उस अदृश्य राज्य में अन्य लोग भी भौतिक शरीर सहित उपस्थित हैं। ये ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने शारीरिक मृत्यु का अनुभव नहीं किया, बल्कि सीधे स्वर्ग में उठा लिए गए, जहाँ वे अब निवास कर रहे हैं।

• हनोक ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने सम्पूर्ण जीवन में परमेश्वर के साथ संगति में चलना जारी रखा। वह अपने भौतिक शरीर सहित स्वर्ग में प्रवेश कर गया। "फिर वह लुप्त हो गया, क्योंकि परमेश्वर उसे उठा ले गया।" (उत्पत्ति अध्याय 5 आयत 24) "हनोक बिना मृत्यु का अनुभव किए उठा लिया गया।" (इब्रानियों अध्याय 11 आयत 5)।

• इब्रानी भविष्यद्वक्ता एलिय्याह भी मृत्यु का अनुभव किए बिना स्वर्ग में उठा लिए गए। उनके साथी भविष्यद्वक्ता और शिष्य एलीशा ने अपनी आँखों से यह घटना देखी। "जब वे [एलिय्याह और एलीशा] चलते-चलते बातें कर रहे थे, तभी अचानक आग का एक रथ और आग के घोड़े प्रकट हुए। उन्होंने उन दोनों को अलग कर दिया, और एलिय्याह बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लिए गए। एलीशा यह सब देख रहा था।" (2 राजा अध्याय 2 आयत 11 और 12)।

इसी कारण जब इस अध्याय में पहले वर्णित घटना के समय एलीशा शत्रु की सेना से घिर गया था, तब वह तनिक भी भयभीत नहीं हुआ।

इस समय भी स्वर्ग में भौतिक शरीर वाले मनुष्य उपस्थित हैं। फिर भी हमें कभी बादलों के बीच से किसी का हाथ या पैर दिखाई नहीं देता, क्योंकि स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है, जिसका अपना ठोस अस्तित्व, वास्तविक स्वरूप और भौतिकता है। केवल इसलिए कि हम उस अदृश्य लोक को अपनी आँखों से नहीं देख सकते, इसका अर्थ यह नहीं कि वह वास्तविक नहीं है। हमारा भविष्य का घर केवल एक ऐसे आयाम में स्थित है, जो वर्तमान में हमारी पाँचों भौतिक इन्द्रियों की पहुँच और अनुभूति से परे है।

परमेश्वर का वचन उन लोगों की गवाही का भी वर्णन करता है, जिन्होंने उस अदृश्य लोक में प्रवेश किया और फिर पृथ्वी पर लौटकर वहाँ जो कुछ उन्होंने देखा और सुना, उसकी गवाही दी। अगले अध्याय में हम यह जानना आरम्भ करेंगे कि स्वर्ग में रहते हुए उन्होंने क्या देखा और क्या सुना।



मनुष्यों ने स्वर्ग का दर्शन किया है।

बाइबल दो ऐसे व्यक्तियों का वर्णन करती है, जिन्होंने कुछ समय के लिए स्वर्ग की यात्रा की—प्रेरित पौलुस और प्रेरित यूहन्ना। उनके शब्द हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि हमारा भविष्य का घर कैसा है। दोनों यह प्रकट करते हैं कि यद्यपि उस अदृश्य लोक की कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, फिर भी उसका बहुत-सा भाग हमारे लिए परिचित है, क्योंकि पृथ्वी की रचना स्वर्गीय वास्तविकताओं के प्रतिरूप के अनुसार की गई है। जैसे परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया, वैसे ही उसने पृथ्वी को भी स्वर्ग के प्रतिरूप में बनाया। आइए देखें कि पौलुस और यूहन्ना ने अपने अनुभव के विषय में क्या बताया।

पौलुस स्वर्ग में।

यूनान के नगर कुरिन्थुस में रहने वाले विश्वासियों को लिखे गए एक पत्र में पौलुस ने बताया कि कई वर्ष पहले वह स्वर्ग में उठा लिया गया था। उसने लिखा कि स्वर्ग इतना वास्तविक है कि वह यह भी नहीं बता सका कि वह अपने भौतिक शरीर में था या शरीर के बाहर।

"मैं मसीह में एक ऐसे मनुष्य को जानता हूँ, जो चौदह वर्ष पहले—चाहे शरीर सहित था, मैं नहीं जानता, या शरीर से अलग था, मैं नहीं जानता; परमेश्वर जानता है—तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया… अर्थात् स्वर्गलोक में, जहाँ उसने ऐसी बातें सुनीं जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता और जिन्हें किसी मनुष्य को कहने की अनुमति नहीं है।" (2 कुरिन्थियों अध्याय 12 आयत 2 से 4)।

प्रेरित ने कहा कि वह तीसरे स्वर्ग में पहुँचा। उसके समय के धर्मशास्त्री तीन स्वर्गों की चर्चा किया करते थे। वे अपने चारों ओर के वायुमंडल को पहला स्वर्ग कहते थे। दूसरा स्वर्ग वह था जिसे आज हम बाह्य अंतरिक्ष कहते हैं। तीसरा स्वर्ग परमेश्वर का निवास-स्थान था। पौलुस ने उसे स्वर्गलोक भी कहा।

यद्यपि पौलुस को परमेश्वर के निवास-स्थान में बिताए अपने समय के विषय में विशेष विवरण देने की अनुमति नहीं थी, फिर भी उसके इस अनुभव की वास्तविकता उसके लेखों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (टिप्पणी 1 देखें)। स्मरण कीजिए, वही पौलुस है जिसने मृत्यु का सामना करते हुए लिखा कि "मर जाना लाभ है," क्योंकि स्वर्ग में जीवन कहीं अधिक उत्तम है। इसी व्यक्ति ने यह भी बताया कि हमारे चारों ओर दिखाई देने वाली यह भौतिक सृष्टि हमें प्रभु और उस अदृश्य लोक के विषय में भी बहुत कुछ सिखाती है।

"परमेश्वर के विषय में जो बातें दिखाई नहीं देतीं, अर्थात् उसकी अनन्त सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके बनाए हुए कार्यों के द्वारा स्पष्ट दिखाई देती हैं और समझी जाती हैं।" (रोमियों अध्याय 1 आयत 20)।

निस्संदेह, सृष्टि की भव्यता सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ्य और महिमा की एक झलक प्रस्तुत करती है। परन्तु बाइबल के अनुसार, पृथ्वी पर ऐसी अनेक वस्तुएँ और गतिविधियाँ भी हैं जो स्वर्ग में विद्यमान वास्तविकताओं के समान हैं। वे उस अदृश्य लोक की ओर देखने के लिए हमारे सामने एक खिड़की खोल देती हैं। जैसा कि पिछले अध्याय में उल्लेख किया गया है, जब अदृश्य आयाम एलीशा के सेवक और बैतलहम के चरवाहों के लिए खुला, तब उन्होंने ऐसी बातें देखीं और सुनीं जो उनके लिए परिचित और पहचानी जा सकने वाली थीं—जैसे रथ, घोड़े, और परमेश्वर की आराधना तथा स्तुति के स्पष्ट और समझ में आने वाले वचन।

पौलुस ने आगे यह भी बताया कि उस समय के लोगों के लिए परिचित एक भवन—यरूशलेम नगर में स्थित वह भव्य मन्दिर—स्वर्ग में स्थित एक वास्तविक भवन के प्रतिरूप के अनुसार बनाया गया था। उसने पृथ्वी पर बने उस मन्दिर को "आराधना का ऐसा स्थान, जो केवल स्वर्ग में स्थित वास्तविक वस्तु की प्रतिलिपि और छाया है," कहा। उसने यह भी लिखा कि "उसमें जो कुछ था... वह स्वर्गीय वस्तुओं की प्रतिलिपि था।"(इब्रानियों अध्याय 8 आयत 5; इब्रानियों अध्याय 9 आयत 23)।

प्रेरित पौलुस ने यह नहीं बताया कि स्वर्ग में रहते समय उसने उस स्वर्गीय मन्दिर को देखा था या नहीं, परन्तु यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से लिखा कि उसने उसे देखा (प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 आयत 15; प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 आयत 19; प्रकाशितवाक्य अध्याय 15 आयत 5) (टिप्पणी 2 देखें)।

यूहन्ना स्वर्ग में।

यूहन्ना यीशु के मूल बारह शिष्यों में से एक था। यीशु के स्वर्ग लौट जाने के लगभग साठ वर्ष बाद (लगभग 95 ईस्वी में), प्रभु यूहन्ना के सामने पतमुस नामक द्वीप पर प्रकट हुए, जो वर्तमान तुर्की के तट के निकट स्थित है। वहाँ उन्होंने उस समय उस क्षेत्र में स्थित सात कलीसियाओं के लिए उसे संदेश दिए। इसके बाद हमारे उद्धारकर्ता यूहन्ना को स्वर्ग में ले गए, जहाँ उसे वह प्रकाशना प्राप्त हुई जिसे उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखा (प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 आयत 19)।

यूहन्ना के लेख हमें बताते हैं कि मसीह के दूसरे आगमन से पहले के अंतिम कुछ वर्षों में स्वर्ग और पृथ्वी पर क्या-क्या घटित होगा। यद्यपि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अदृश्य लोक के दैनिक जीवन का विस्तृत वर्णन देने के लिए नहीं लिखी गई थी, फिर भी यूहन्ना ने जो कुछ देखा, उसके द्वारा हम उस लोक के विषय में बहुत कुछ जान सकते हैं। उसने स्वर्ग में अनेक ऐसी वस्तुएँ और गतिविधियाँ देखीं जो पृथ्वी पर भी पाई जाती हैं।

"इसके बाद मैंने देखा कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है। तब वही स्वर, जिसे मैंने पहले तुरही के समान बोलते हुए सुना था... मैंने स्वर्ग में एक सिंहासन देखा, और उस सिंहासन पर कोई विराजमान था... उसके चारों ओर चौबीस सिंहासन थे, और उन पर चौबीस प्राचीन बैठे थे। वे सब श्वेत वस्त्र पहने हुए थे और उनके सिरों पर सोने के मुकुट थे... तब वे चौबीस प्राचीन उस अनन्त जीवित रहने वाले के सामने गिरकर उसकी आराधना करते हैं और अपने मुकुट सिंहासन के सामने रखकर कहते हैं, 'हे प्रभु, हमारे परमेश्वर, आप ही योग्य हैं।'" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 आयत 1 से 4; प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 आयत 10)।

"फिर मैंने उस सिंहासन पर विराजमान व्यक्ति के दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी। वह भीतर और बाहर दोनों ओर लिखी हुई थी और सात मुहरों से बन्द की गई थी।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 1)।

"उनमें से प्रत्येक [प्राचीनों] के हाथ में एक वीणा थी, और वे सुगन्धित धूप से भरे हुए सोने के कटोरे लिए हुए थे, जो परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाएँ हैं। वे एक नया गीत गा रहे थे... फिर मैंने स्वर्ग, पृथ्वी, पृथ्वी के नीचे और समुद्र में रहने वाले प्रत्येक प्राणी को भी गाते हुए सुना।"(प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 8 और 9; प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 13)।

"इसके बाद मैंने एक ऐसी विशाल भीड़ देखी जिसे कोई गिन नहीं सकता था। वे हर जाति, हर गोत्र, हर लोगों के समूह और हर भाषा के लोग थे। वे सिंहासन और मेम्ने के सामने खड़े

थे। उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने हुए थे और उनके हाथों में खजूर की डालियाँ थीं।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 आयत 9)।

यूहन्ना के इन शब्दों के महत्व को अनदेखा मत कीजिए। उसने बताया कि स्वर्ग में उसने एक द्वार, बैठने के लिए सिंहासन, वस्त्र, मुकुट, लिखी हुई एक पुस्तक (पत्र), वीणाएँ, कटोरे, धूप और खजूर की डालियाँ देखीं। उसने गीत और गायन सुना तथा लोगों को सिर और हाथों के साथ अत्यन्त सक्रिय रूप से चलते-फिरते देखा। प्रेरित ने वहाँ जीवित प्राणियों को भी देखा। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "प्राणी" किया गया है, उसका अर्थ "जीवित प्राणी"है, और नए नियम के अन्य स्थानों पर यही शब्द पशुओं के लिए भी प्रयुक्त हुआ है (इब्रानियों अध्याय 13 आयत 11; 2 पतरस अध्याय 2 आयत 12; यहूदा अध्याय 1 आयत 10)। यूहन्ना ने, पौलुस की ही भाँति, यह अनुभव किया कि स्वर्ग का वास्तविक और भौतिक अस्तित्व है।

यूहन्ना ने लिखा कि जब वह उस अदृश्य लोक में था, तब उसके पास मुँह और पेट सहित एक शरीर था। उसने वस्तुओं को अपने हाथों से पकड़ा और उन्हें थामा। उसने भोजन किया और उसका स्वाद भी चखा।

"तब मैं उस [स्वर्गदूत] के पास गया और उससे वह छोटी पुस्तक माँगी। उसने मुझसे कहा, 'इसे ले लो और खा जाओ। यह तुम्हारे मुँह में तो मधु के समान मीठी लगेगी, परन्तु जब यह तुम्हारे पेट में जाएगी, तो उसे कड़वा कर देगी।' तब मैंने वह छोटी पुस्तक स्वर्गदूत के हाथ से ले ली और उसे खा लिया। वह मेरे मुँह में मधु के समान मीठी लगी, परन्तु उसे निगलने के बाद मेरा पेट कड़वा हो गया।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 आयत 9 और 10)।

अपने दर्शन के अंत में यूहन्ना ने स्वर्ग की राजधानी को पृथ्वी पर उतरते हुए देखा। इस विषय पर हम अध्याय 9 में और अधिक विस्तार से विचार करेंगे, परन्तु यह तथ्य कि अदृश्य लोक में एक ऐसा नगर है जो पृथ्वी पर भी आ सकता है, इस बात का एक और प्रमाण है कि स्वर्ग का वास्तविक और भौतिक अस्तित्व है। वह एक ठोस और वास्तविक स्थान है। प्रेरित ने बताया कि उस स्वर्गीय महानगर में माप, अनुपात और आयाम हैं। उस नगर की चार दिशाएँ हैं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण—और उसकी लंबाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई भी है। उस राजधानी में पृथ्वी के नगरों के समान अनेक विशेषताएँ हैं, जैसे भवन-निर्माण, नींव वाली शहरपनाह, फाटक, सड़कें, नदियाँ और वृक्ष। आगे चलकर यूहन्ना मोतियों और अन्य बहुमूल्य रत्नों का भी वर्णन करता है, जैसे नीलम, पन्ना, गोमेद और पुखराज—ये सभी वस्तुएँ पृथ्वी पर भी पाई जाती हैं।

एक वाटिका, एक देश और एक नगर।

पौलुस और यूहन्ना, दोनों को स्वर्ग की यात्रा करने से पहले ही उसके विषय में कुछ जानकारी थी। उन्होंने यह ज्ञान पुराने नियम से प्राप्त किया था, जो उनके समय तक बाइबल का पूर्ण हो चुका भाग था। इस पुस्तक के दूसरे भाग में हम और अधिक ध्यानपूर्वक देखेंगे कि पुराना नियम स्वर्ग के विषय में क्या प्रकट करता है। अभी केवल एक बात पर ध्यान दीजिए।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, पौलुस ने उस स्थान को, जहाँ वह गया था, स्वर्गलोक कहा। उसने यह शब्द केवल साहित्यिक सौन्दर्य के लिए नहीं चुना था। उसके समय में स्वर्गलोक धर्मी लोगों के मृत्यु के बाद के निवास-स्थान का एक प्रचलित नाम था। "स्वर्गलोक" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द पारादेइसोस है, जिसका अर्थ है "उद्यान" या "वाटिका।" उस समय यूनानी भाषा सबसे अधिक बोली जाती थी, और जब पुराने नियम का पहली बार इब्रानी भाषा से यूनानी में अनुवाद किया गया, तब पारादेइसोस शब्द का प्रयोग अदन की वाटिका के लिए किया गया था (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 8; यहेजकेल अध्याय 28 आयत 13)। पहली शताब्दी के लोग यह अपेक्षा रखते थे कि स्वर्ग अदन की वाटिका के समान एक स्वर्गलोक होगा।

चूँकि पृथ्वी की रचना स्वर्गीय वास्तविकताओं के प्रतिरूप के अनुसार की गई है, इसलिए यह मानना उचित है कि अदन की वाटिका, जो मानवजाति के लिए परमेश्वर का पहला निवास-स्थान थी, हमारे भविष्य के निवास के विषय में भी बहुत कुछ बताती है। बाइबल के आरम्भिक पृष्ठ उस वाटिका का वर्णन एक ऐसे सुन्दर स्थान के रूप में करते हैं, जहाँ हर आवश्यकता की भरपूर व्यवस्था थी। वहाँ वृक्ष, वनस्पतियाँ और भोजन था। वहाँ पशु, नदियाँ, बहुमूल्य खनिज और सोना भी था। पहले मनुष्य, आदम और हव्वा, अर्थपूर्ण कार्य करते थे और एक-दूसरे के साथ तथा स्वयं प्रभु के साथ घनिष्ठ संगति रखते थे (उत्पत्ति अध्याय 2)। जैसे-जैसे हम पवित्रशास्त्र में स्वर्ग के विषय में प्रकट की गई बातों का और गहराई से अध्ययन करेंगे, हम पाएँगे कि ये सभी बातें उस जीवन का भाग हैं जो हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

पौलुस ने आगे यह भी लिखा कि उससे पहले परमेश्वर के अनुयायी यह विश्वास रखते थे कि भविष्य के जीवन में वे केवल एक वाटिका ही नहीं, बल्कि एक देश और एक नगर भी प्राप्त करेंगे। उसने लिखा, "वे एक उत्तम देश की अभिलाषा रखते हैं, अर्थात् स्वर्गीय देश की।" (इब्रानियों अध्याय 11 आयत 16) और "हम उस आने वाले नगर की बाट जोह रहे हैं।" (इब्रानियों अध्याय 13 आयत 14)।

इनमें से प्रत्येक शब्द हमारे मन में ऐसे परिचित चित्र उपस्थित करता है, जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है, जिसमें ऐसे गुण और विशेषताएँ हैं

जिन्हें हम पहचान सकेंगे। यदि हमारा भविष्य का घर किसी न किसी रूप में एक वाटिका, एक देश और एक नगर के समान नहीं होता, तो पौलुस उसे इन नामों से क्यों पुकारता?

बाइबल उन लोगों की प्रत्यक्षदर्शी गवाही का वर्णन करती है, जिन्होंने उस अदृश्य लोक में प्रवेश किया था। उनके शब्द हमें यह बताते हैं कि स्वर्ग कोई धुँधला, अस्पष्ट या किसी कल्पनालोक जैसा स्थान नहीं है। उसका वास्तविक और ठोस अस्तित्व है। वह एक वास्तविक स्थान है, जहाँ वास्तविक लोग रहते हैं और वास्तविक कार्य करते हैं।

ये लेख हमें यह भी प्रकट करते हैं कि पृथ्वी की रचना स्वर्ग के प्रतिरूप के अनुसार की गई है। इसलिए पृथ्वी पर दिखाई देने वाली वस्तुओं और जीवन के विभिन्न पहलुओं को देखकर हम कुछ हद तक समझ सकते हैं कि आने वाला जीवन कैसा होगा। हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि हमारा भविष्य का घर हमारे लिए परिचित और पहचाना हुआ होगा।

आने वाले अध्यायों में मैं इन सभी बातों पर और अधिक विस्तार से चर्चा करूँगी। परन्तु उससे पहले यह आवश्यक है कि हम स्पष्ट रूप से समझ लें कि जब हमारी मृत्यु होती है, तब हमारे साथ वास्तव में क्या होता है।

3

जब हम मर जाते हैं, तब क्या होता है?

बहुत से लोग यह मानते हैं कि स्वर्ग में हम एक-दूसरे को पहचान नहीं पाएँगे और न ही पृथ्वी पर बिताए हुए अपने जीवन तथा संबंधों को याद रखेंगे। इस कारण हमारा भविष्य का घर उन्हें आकर्षक नहीं लगता। वास्तव में, ऐसी धारणाएँ बाइबल की शिक्षा के विपरीत हैं। इन गलत धारणाओं का एक कारण यह भी है कि हम यह ठीक से नहीं समझते कि मृत्यु के समय वास्तव में क्या होता है।

मनुष्य की रचना।

मृत्यु के समय क्या होता है, इसे समझने के लिए पहले यह जानना आवश्यक है कि मनुष्य की रचना कैसी है। प्रत्येक मनुष्य का एक बाहरी भौतिक भाग और एक भीतरी अभौतिक अर्थात् गैर-भौतिक भाग होता है (2 कुरिन्थियों अध्याय 4 आयत 16)। बाहरी भाग शरीर है, जबकि भीतरी भाग आत्मा और प्राण से मिलकर बना है (इब्रानियों अध्याय 4 आयत 12)। मृत्यु के समय यह भीतरी और बाहरी भाग एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। बाहरी मनुष्य मिट्टी में लौट जाता है, और भीतरी मनुष्य एक अन्य आयाम में प्रवेश करता है। शरीर को मिट्टी में सौंपे जाने की प्रक्रिया से हम सब परिचित हैं, क्योंकि हम सभी ने अंतिम संस्कार और कब्रिस्तान में होने वाले संस्कार देखे हैं। परन्तु भीतरी मनुष्य के साथ क्या होता है, यह बात बहुतों के लिए अस्पष्ट बनी रहती है।

जब यीशु पृथ्वी पर थे, तब उन्होंने दो ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख किया जिनकी मृत्यु लगभग एक ही समय हुई थी। उनके शब्द हमें अदृश्य लोक में मनुष्य की स्थिति की एक झलक प्रदान करते हैं।

"एक धनवान मनुष्य था, जो बैंगनी और मलमल के वस्त्र पहनता था और प्रतिदिन बड़े ठाट-बाट से जीवन बिताता था। उसके फाटक पर लाजर नाम का एक भिखारी पड़ा रहता था, जो घावों से भरा हुआ था और धनवान की मेज़ से गिरने वाले टुकड़ों से अपनी भूख मिटाना

चाहता था। यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके घाव चाटा करते थे। समय आया कि वह भिखारी मर गया, और स्वर्गदूत उसे इब्राहीम की गोद में ले गए। [इब्राहीम की गोद धर्मियों के निवास-स्थान का एक अन्य नाम था।] वह धनवान भी मर गया और उसे गाड़ दिया गया। अधोलोक में, जहाँ वह पीड़ा में था, उसने ऊपर दृष्टि उठाई और दूर इब्राहीम को देखा, और लाजर को उसकी गोद में देखा। तब उसने पुकारकर कहा, 'हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कीजिए और लाजर को भेज दीजिए कि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में डुबोकर मेरी जीभ ठंडी करे, क्योंकि मैं इस आग में बहुत तड़प रहा हूँ।'

परन्तु इब्राहीम ने कहा, 'पुत्र, स्मरण कर कि तूने अपने जीवनकाल में अपनी अच्छी वस्तुएँ पा ली थीं, और लाजर ने बुरी बातें भोगीं। अब वह यहाँ शान्ति और सांत्वना पा रहा है, और तू पीड़ा में है। इसके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई स्थिर कर दी गई है, ताकि जो यहाँ से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे जा न सकें, और न वहाँ से कोई हमारे पास आ सके।'

तब उसने कहा, 'हे पिता, मैं आपसे विनती करता हूँ कि लाजर को मेरे पिता के घर भेज दीजिए, क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं। वह उन्हें चेतावनी दे, ताकि वे भी इस यातना के स्थान में न आएँ।'

इब्राहीम ने उत्तर दिया, 'उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाएँ हैं; वे उन्हीं की सुनें।'

उसने कहा, 'नहीं, हे पिता इब्राहीम! यदि मरे हुओं में से कोई उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।'

इब्राहीम ने उससे कहा, 'यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की बात नहीं सुनते, तो यदि कोई मरे हुओं में से भी जी उठे, तब भी वे विश्वास नहीं करेंगे।'"(लूका अध्याय 16 आयत 19 से 31)।

ध्यान दीजिए कि जब लाजर और वह धनवान अपने-अपने शरीरों से अलग हो गए, तब भी वे उसी रूप में दिखाई देते थे जैसे पहले थे। वे एक-दूसरे को पहचानते थे और उन लोगों को भी पहचानते थे जो उनसे पहले मर चुके थे। दोनों पूरी तरह जागरूक और सचेत थे। दोनों के पास विचार, भावनाएँ और पृथ्वी पर बिताए गए अपने जीवन तथा पीछे छूट गए लोगों की स्मृतियाँ थीं। वह धनवान अपनी स्थिति से अत्यन्त दुःखी था, जबकि लाजर को सांत्वना मिली हुई थी (टिप्पणी 3 देखें)। यह घटना स्पष्ट करती है कि मृत्यु के बाद स्त्री और पुरुष अस्तित्व में बने रहते हैं; वे नष्ट नहीं हो जाते। मृत्यु के बाद न तो कोई निद्रा की अवस्था होती है और न ही अचेतन अवस्था। इतना ही नहीं, जब मनुष्य अपने शरीर को छोड़ देता है,

तब भी उसकी व्यक्तिगत पहचान बनी रहती है। वह वही व्यक्ति रहता है, जिसका वही जीवन, वही संबंध और वही स्मृतियाँ होती हैं।

हो सकता है आपने यह सुना हो कि मृत्यु के समय केवल आत्मा स्वर्ग में जाती है, जिससे यह धारणा बनती है कि हमारे अस्तित्व का केवल एक भाग ही उस अदृश्य लोक में प्रवेश करता है। परन्तु प्रभु यीशु की शिक्षा के अनुसार, अदृश्य लोक ऐसे लोगों से भरा हुआ है जो अपने भौतिक शरीर से अलग होने पर भी पूर्ण रूप से विद्यमान हैं। यह विचार कि केवल हमारी आत्मा ही स्वर्ग में जाती है, "प्राण" के अर्थ को ठीक से न समझने के कारण उत्पन्न हुआ है। पवित्रशास्त्र में "प्राण" शब्द का प्रयोग प्रायः हमारे मन और भावनाओं के लिए किया गया है (भजन संहिता अध्याय 42 आयत 4 से 6; भजन संहिता अध्याय 116 आयत 7)। लाजर और धनवान के विषय में यीशु द्वारा बताए गए वृत्तांत के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि जब मनुष्य मृत्यु के समय अपना शरीर छोड़ता है, तब वह अपना मन और अपनी भावनाएँ—अर्थात् अपना प्राण—भी अपने साथ ले जाता है।

मूसा और एलिय्याह।

मृत्यु के बाद क्या होता है, इसे हम एक और घटना से और अच्छी तरह समझ सकते हैं, जिसमें पृथ्वी पर रहने वाले लोगों ने अदृश्य लोक की एक झलक देखी। यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से कुछ समय पहले वे अपने तीन शिष्यों—पतरस, याकूब और यूहन्ना—को एक पहाड़ पर ले गए। वहाँ अचानक इस्राएल के प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता मूसा और एलिय्याह अदृश्य लोक से प्रकट हुए। शिष्यों ने उन दोनों को देखा और उन्हें प्रभु यीशु के साथ उनके निकट आने वाले क्रूसारोपण के विषय में बातचीत करते हुए सुना।

"लगभग आठ दिन बाद यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर गए। जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तब उनके मुख का रूप बदल गया और उनके वस्त्र अत्यन्त उज्ज्वल होकर चमकने लगे। तभी मूसा और एलिय्याह नाम के दो पुरुष प्रकट हुए और यीशु से बातें करने लगे। वे महिमा से परिपूर्ण दिखाई दे रहे थे और यरूशलेम में होने वाली उनकी मृत्यु के विषय में बातें कर रहे थे, जिसके द्वारा वे परमेश्वर की योजना को पूरा करने वाले थे।" (लूका अध्याय 9 आयत 28 से 31)।

जैसा कि मैंने पहले अध्याय में बताया था, एलिय्याह मृत्यु का अनुभव किए बिना अपने भौतिक शरीर सहित उस अदृश्य लोक में उठा लिए गए थे। दूसरी ओर, मूसा सदियों पहले मर चुके थे, अर्थात् उनका भौतिक शरीर उनसे अलग हो चुका था। फिर भी वे कोई तैरती हुई या पारदर्शी आत्मा नहीं थे। वे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, पहचाने जा सकते थे, और यीशु तथा एलिय्याह के साथ बातचीत कर रहे थे। मूसा और एलिय्याह, दोनों के व्यक्तित्व से उस

लोक की महिमामय ज्योति झलक रही थी, जो सदियों से उनका निवास-स्थान था। यद्यपि वे अब पृथ्वी पर नहीं रहते थे, फिर भी यरूशलेम में होने वाली आने वाली घटनाओं के विषय में यीशु के साथ उनकी बातचीत यह दर्शाती है कि वे पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं से परिचित थे और उनमें उनकी रुचि भी थी।

यूहन्ना ने क्या देखा।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना ने स्वर्ग में जिन लोगों का वर्णन किया है, वह उस बात से बहुत मिलता-जुलता है जिसे यीशु ने लाजर और धनवान के वृत्तांत में प्रकट किया था। यूहन्ना का वर्णन उस घटना के भी अनुरूप है जिसे उसने स्वयं पतरस और याकूब के साथ देखा था, जब मूसा और एलिय्याह ने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले यीशु से बातचीत की थी। यूहन्ना ने चौबीस प्राचीनों अर्थात् अधिकार रखने वाले व्यक्तियों को सिंहासनों पर बैठे हुए देखा। यद्यपि ये लोग अपने भौतिक शरीरों से अलग थे, फिर भी उन्होंने मुकुट और वस्त्र धारण किए हुए थे। वे सिंहासनों पर बैठे, झुककर परमेश्वर की आराधना करते थे। इससे स्पष्ट होता है कि उनके सिर, मुँह, आवाज़, पैर, भुजाएँ और हाथ थे (प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 आयत 4 से 10)। यूहन्ना ने स्वर्ग में व्यक्तिगत पहचान की निरंतरता देखी। उसने ऐसे लोगों को देखा जिन्हें मसीह में अपने विश्वास के कारण मार डाला गया था, फिर भी वे पृथ्वी पर अपने जीवन को याद रखते थे और उन लोगों की चिन्ता करते थे जिन्हें वे पीछे छोड़ आए थे।

"जब मेम्ने ने पाँचवीं मुहर खोली, तब मैंने वेदी के नीचे उन लोगों के प्राणों को देखा जिन्हें परमेश्वर के वचन और अपनी गवाही के कारण मार डाला गया था। वे ऊँचे स्वर से पुकारकर कह रहे थे, 'हे पवित्र और सच्चे प्रभु, आप कब तक पृथ्वी के निवासियों का न्याय करने और हमारे लहू का बदला लेने में विलम्ब करेंगे?' तब उनमें से प्रत्येक को एक-एक श्वेत वस्त्र दिया गया और उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर और विश्राम करें, जब तक उनके साथी सेवकों और भाइयों की संख्या भी पूरी न हो जाए, जिन्हें उसी प्रकार मार डाला जाना था जैसे वे मारे गए थे।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 आयत 9 से 11)।

यहाँ प्रेरित द्वारा प्रयुक्त "प्राण" शब्द का अर्थ किसी धुँधली आकृति या उनके अस्तित्व के केवल किसी एक भाग से नहीं है। इसका अर्थ स्वयं वे लोग हैं। यूहन्ना ने अपना वर्णन यूनानी भाषा में लिखा और "प्राण" के लिए प्सूखे शब्द का प्रयोग किया। बाइबल के अन्य स्थानों पर भी प्सूखे शब्द का अर्थ "सम्पूर्ण व्यक्ति" किया गया है (1 कुरिन्थियों अध्याय 15 आयत 45)।

दूसरे शब्दों में, यूहन्ना कह रहा है कि उसने उन लोगों को स्वर्ग में देखा। ध्यान दीजिए कि ये शहीद यह स्मरण रखते थे कि उनकी मृत्यु किस प्रकार हुई थी, और वे यह भी जानते थे कि पृथ्वी पर और भी लोग उसी प्रकार अपने प्राण देंगे जैसे उन्होंने दिए थे। यूहन्ना ने उन्हें ऊँचे स्वर से भावनापूर्ण पुकार करते हुए सुना, जब वे प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे कि वे कार्य करें और उन लोगों के लिए न्याय करें जिन्हें मार डाला गया था (टिप्पणी 4 देखें)।

मृत्यु मनुष्य को केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है।

पौलुस, जिसने अपने जीवनकाल में स्वर्ग की यात्रा की थी, मृत्यु को **प्रस्थान** कहता है। जब वह कारागार में था और उसे मृत्यु-दण्ड मिलने की सम्भावना थी, तब उसने लिखा कि उसकी "इच्छा है कि वह प्रस्थान करके मसीह के साथ रहे।" (फिलिप्पियों अध्याय 1 आयत 23) उस समय पौलुस की मृत्यु नहीं हुई, परन्तु कुछ वर्षों बाद, जब वह फिर से बन्दीगृह में था और उसकी मृत्यु निकट आ गई थी, तब उसने लिखा, "मेरे प्रस्थान का समय आ पहुँचा है।" (2 तीमुथियुस अध्याय 4 आयत 6)।

जब कोई प्रस्थान करता है, तो वह एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जाता है। मृत्यु हमें किसी और व्यक्ति या किसी दूसरी वस्तु में नहीं बदल देती। वह केवल हमें दृश्य संसार से अदृश्य लोक में पहुँचा देती है।

स्वर्ग में भी आप वही रहेंगे जो आज हैं। आपकी पहचान केवल आपके नाम से नहीं, बल्कि आपके स्वरूप, जीवन के अनुभवों, आपके संबंधों और आपकी स्मृतियों से भी होती है। यदि इनमें से कोई भी बात पूरी तरह समाप्त हो जाए और आप पहचान में न आएँ या पृथ्वी पर अपने जीवन को याद ही न रख सकें, तो इसका अर्थ होगा कि स्वर्ग में आप नहीं, बल्कि कोई और पहुँचा है। परन्तु ऐसा नहीं है। स्वर्ग में आप वही होंगे—बस इस टूटे हुए संसार के प्रभावों से पूर्णतः मुक्त। वहाँ दुर्घटनाओं, बीमारियों, दुर्बल कर देने वाली शारीरिक समस्याओं और बुढ़ापे के विनाशकारी प्रभावों का कोई अस्तित्व नहीं होगा।

इस अध्याय में पहले हमने लाजर नामक भिखारी के विषय में प्रभु यीशु के बताए हुए वृत्तांत का उल्लेख किया था। जब लाजर अपने शरीर से अलग हुआ, तब उसने अपने साथ केवल अपने वास्तविक व्यक्तित्व को लिया; उसने गरीबी, भूख और उनसे उत्पन्न होने वाली सारी पीड़ाएँ पीछे छोड़ दीं। उसके शरीर पर अब कोई घाव नहीं थे जिन्हें कुत्ते आकर चाटते।

जब आप मृत्यु के समय अपने शरीर को छोड़ेंगे, तब आप उस बीमारी या चोट को भी पीछे छोड़ देंगे जिसने आपके जीवन का अंत किया। यदि आपके जीवन में कोई पुरानी बीमारी या

शारीरिक विकलांगता थी जिसने किसी प्रकार आपके जीवन को प्रभावित किया, तो वह भी सदा के लिए समाप्त हो जाएगी। मानसिक दुर्बलता या स्मृतिभ्रंश (डिमेंशिया) के कारण जो स्मृतियाँ लुप्त हो गई थीं, वे फिर से पूर्ण रूप से लौटा दी जाएँगी। जो लोग इतने छोटे थे कि जीवन का अनुभव करने, स्मृतियाँ बनाने और संबंध विकसित करने का अवसर ही नहीं मिला, उन्हें भी हमारे भविष्य के घर में वे सभी अवसर प्राप्त होंगे। इन विषयों पर मैं आगे आने वाले अध्यायों में और अधिक विस्तार से चर्चा करूँगी।

स्वर्ग में प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत पहचान बनी रहती है। स्त्री और पुरुष वैसे ही दिखाई देते हैं जैसे वे वास्तव में हैं, और उनके जीवन का पूरा इतिहास उनके साथ बना रहता है। वे पृथ्वी पर अपने जीवन के समय जितने वास्तविक थे, उतने ही वास्तविक वहाँ भी हैं। मुख्य अंतर केवल इतना है कि उनमें से अधिकांश अपने भौतिक शरीरों से अलग हैं। शरीर से अलग हुए लोग न तो भूतों के समान होते हैं और न ही पारदर्शी। वे हवा में तैरते नहीं रहते। वे खड़े होते हैं, चलते हैं और बातचीत करते हैं। वे ऐसे लोक में रहते हैं जो यद्यपि हमारी आँखों से अदृश्य है, फिर भी उसका वास्तविक और भौतिक अस्तित्व है।

अब जबकि हम यह पहले से अधिक अच्छी तरह समझ चुके हैं कि मृत्यु के समय क्या होता है, तो अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि स्वर्ग में जीवन वास्तव में कैसा है।



स्वर्ग में जीवन।

स्वर्ग बहुत से लोगों को आकर्षक नहीं लगता, क्योंकि वे सोचते हैं कि वहाँ का जीवन नीरस होगा—एक ऐसी अंतहीन आराधना-सभा, जहाँ सभी लोग श्वेत वस्त्र पहने केवल गीत गाते रहेंगे और वीणा बजाते रहेंगे। परन्तु बाइबल के अनुसार हमारे भविष्य के घर का जीवन ऐसा नहीं है। परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप से बताता है कि जैसे हमारी व्यक्तिगत पहचान बनी रहती है, वैसे ही जीवन के अनेक परिचित पहलू भी बने रहते हैं। पवित्रशास्त्र एक ऐसे लोक का वर्णन करता है जहाँ भोजन और वस्त्र हैं, साथ ही अर्थपूर्ण कार्य और अनेक गतिविधियाँ भी हैं।

स्वर्ग में भोजन।

स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने कहा कि अदृश्य लोक में लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा कि उनके प्रति विश्वासयोग्य सेवा के प्रतिफल के रूप में "तुम मेरे राज्य में मेरी मेज़ पर मेरे साथ खाओगे और पियोगे।" (लूका अध्याय 22 आयत 30)।

उन्होंने यह भी कहा, "बहुत से लोग पूर्व और पश्चिम से आकर स्वर्ग के राज्य में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ भोज में सम्मिलित होंगे।"(मत्ती अध्याय 8 आयत 11)।

"भोज में सम्मिलित होंगे" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द का अर्थ है "पीछे टिककर बैठना" या "आराम से लेटकर भोजन करना।" उस समय लोग भोजन करते समय आसनों पर टिककर बैठते थे। वे अपना सिर मेज़ की ओर और पैर उससे दूर रखते थे। यीशु द्वारा इस शब्द का प्रयोग यह दर्शाता है कि वे वास्तविक भोजन के लिए मेज़ पर स्थान लेने की बात कर रहे थे।

यीशु प्रतीकात्मक या रूपकात्मक भाषा में नहीं बोल रहे थे। वे एक वास्तविक स्थान में होने वाली वास्तविक गतिविधि का वर्णन कर रहे थे। भोज के लिए मेज़, आसन और उन सबको रखने के लिए भवन की आवश्यकता होती है। विशेष भोज में विभिन्न प्रकार के भोजन और पेय के साथ-साथ उन्हें तैयार करने, परोसने और खाने के लिए आवश्यक बर्तन भी होते हैं। और कोई भी भोज बातचीत, जीवन की घटनाओं को साझा करने और हँसी-खुशी के बिना पूर्ण नहीं होता। खाने-पीने के विषय में यीशु के इन शब्दों से यह संकेत मिलता है कि अदृश्य लोक में ये सभी बातें भी विद्यमान हैं।

भोजन केवल आवश्यकता नहीं, आनन्द और संगति का माध्यम भी है।

निस्संदेह, स्वर्ग में लोगों को जीवित रहने के लिए भोजन करने की आवश्यकता नहीं होगी। परन्तु भोजन केवल जीवन बनाए रखने का साधन नहीं है। प्रभु ने आदम और हव्वा को उस समय भोजन करने की आज्ञा दी थी, जब वे अभी पाप के कारण मृत्यु के अधीन नहीं हुए थे। अदन की वाटिका ऐसे वृक्षों और फलों से भरी हुई थी जो स्वाद, सुगंध और रूप—तीनों ही दृष्टियों से मन को आकर्षित करते थे। भोजन करना उनके सृष्टिकर्ता द्वारा दिया गया आनन्द का एक उपहार था।

"यहोवा परमेश्वर ने उस वाटिका में सब प्रकार के ऐसे वृक्ष उगाए जो देखने में सुन्दर और जिनके फल खाने में स्वादिष्ट थे... और परमेश्वर ने कहा, 'तुम वाटिका के किसी भी वृक्ष का फल निःसंकोच खा सकते हो; परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उसी दिन अवश्य मर जाओगे।'" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 9; उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 16 और 17)।

भोजन केवल आनन्द का ही नहीं, बल्कि आपसी संबंध और संगति का भी माध्यम है। बाइबल में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ स्त्री और पुरुष परमेश्वर की आज्ञा से उसकी उपस्थिति में एक साथ भोजन करने के लिए एकत्र हुए।

• "[परमेश्वर के निमंत्रण पर] मूसा, हारून... और इस्राएल के सत्तर पुरनिए [सीनै पर्वत पर] चढ़ गए। वहाँ उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर को देखा। [अदृश्य लोक उनके लिए खुल गया।] उसके चरणों के नीचे नीलम के समान चमकदार फर्श था, जो आकाश की तरह निर्मल दिखाई देता था... और उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति में एक साथ भोजन किया।" (निर्गमन अध्याय 24 आयत 9 से 11)।

• प्रभु ने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे अपने बलिदान और भेंट उसकी पवित्र उपासना-स्थली में लाएँ, "जहाँ तुम और तुम्हारे परिवार यहोवा अपने परमेश्वर की उपस्थिति में भोजन करोगे और आनन्दित होओगे।" (व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 आयत 7)।

• उन्होंने यह विशेष निर्देश भी दिया: यदि तुम्हारा निवास बहुत दूर हो, तो "अपनी उपज और पशुओं का दशमांश बेचकर उसका धन अपने साथ ले जाना। जब तुम वहाँ पहुँचो, तो उस धन से अपनी इच्छा के अनुसार बैल, भेड़, दाखमधु या मदिरा अथवा जो कुछ तुम्हारा मन चाहे, खरीद लेना। फिर वहाँ यहोवा अपने परमेश्वर की उपस्थिति में अपने परिवार सहित भोजन करना और आनन्द मनाना।" (व्यवस्थाविवरण अध्याय 14 आयत 25 और 26)।

इन सभी वचनों में एक समान सत्य दिखाई देता है—सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अपने लोगों को अपने साथ और एक-दूसरे के साथ संगति करते हुए भोजन करने के लिए बुलाया। इसलिए यह पूरी तरह उचित है कि जब हम वास्तव में प्रभु के साथ उसके घर में निवास करेंगे, तब भी हम उसकी उपस्थिति में एक-दूसरे के साथ बैठकर भोजन करेंगे।

स्वर्ग में वस्त्र।

बाइबल स्वर्ग में वस्त्रों का भी उल्लेख करती है। स्वर्गदूत, जो उस अदृश्य लोक के निवासियों का एक भाग हैं, वस्त्र पहने हुए दिखाई देते हैं।

"अचानक [पुनरुत्थान की सुबह] एक बड़ा भूकम्प आया, क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से उतर आया। उसने यीशु की कब्र के द्वार पर रखे हुए पत्थर को लुढ़का दिया और उसी पर बैठ गया। उसका मुख बिजली के समान चमक रहा था और उसके वस्त्र हिम के समान श्वेत थे।" (मत्ती अध्याय 28 आयत 2 और 3)।

जब मूसा और एलिय्याह क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले यीशु से बातचीत करने के लिए अदृश्य लोक से प्रकट हुए, तो इस बात का संकेत मिलता है कि वे भी वस्त्र पहने हुए थे, क्योंकि उस घटना में यीशु के वस्त्रों का उल्लेख किया गया है। यह सोचना उचित नहीं होगा कि मूसा और एलिय्याह बिना वस्त्रों के थे, जबकि यीशु पूर्णतः वस्त्र पहने हुए थे।

"जब वे [पतरस, याकूब और यूहन्ना] देख रहे थे, तब यीशु का रूप उनके सामने बदल गया। उनका मुख सूर्य के समान चमकने लगा और उनके वस्त्र अत्यन्त उज्ज्वल होकर श्वेत हो गए। तभी मूसा और एलिय्याह प्रकट हुए और यीशु से बातचीत करने लगे।" (मत्ती अध्याय 17 आयत 2 और 3)।

स्वर्ग में अपने दर्शन के दौरान प्रेरित यूहन्ना ने असंख्य लोगों को श्वेत वस्त्र पहने हुए देखा।

• उसने लिखा कि "चौबीस प्राचीन [सिंहासनों पर] बैठे थे और वे सब श्वेत वस्त्र पहने हुए थे।" उसने यह भी लिखा कि "जो लोग अपने विश्वास के कारण शहीद किए गए थे... उन्हें श्वेत वस्त्र दिए गए।" आगे उसने "एक ऐसी विशाल भीड़" को देखा जो "श्वेत वस्त्र पहने हुए थी।"(प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 आयत 4; प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 आयत 9 से 11; प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 आयत 9)।

• यूहन्ना ने लोगों को यीशु के साथ आनन्द मनाते हुए भी देखा। वे भी "उत्तम और निर्मल श्वेत मलमल के वस्त्र" पहने हुए थे। उसने यह भी देखा कि प्रभु के साथ स्वर्ग से निकलने वाली स्वर्गीय सेनाएँ भी "शुद्ध श्वेत मलमल के वस्त्र" पहने हुए थीं। (प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 आयत 8; प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 आयत 14)।

क्या श्वेत वस्त्र ही हमारी अनन्त अवस्था होंगे?

यूहन्ना द्वारा स्वर्ग के वस्त्रों का वर्णन पढ़ते समय सहज ही मन में गायक-मण्डली के वस्त्रों या कफ़न का चित्र उभर सकता है। परन्तु जब हम समझते हैं कि ये वस्त्र किस बात का प्रतीक हैं, तब यह बात हमारे लिए आनन्द का कारण बन जाती है। ये वस्त्र उस निष्पाप धार्मिकता का प्रतीक हैं, जो उन्हें प्रभु यीशु के द्वारा प्राप्त हुई है।

परमेश्वर के सिंहासन के निकट बैठे चौबीस प्राचीनों में से एक ने स्वयं यूहन्ना से यही बात कही। उसने कहा,

"ये वे लोग हैं जो बड़े क्लेश में से निकलकर आए हैं। उन्होंने अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत कर लिए हैं।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 आयत 14)।

स्वर्ग में रहने वाले लोग प्रभु यीशु मसीह के बहाए गए लहू के कारण पाप से इतने पूर्ण रूप से शुद्ध किए जा चुके हैं कि वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने अपने अतीत के किसी भी पाप या दोष के बिना निडर होकर खड़े हो सकते हैं।

यद्यपि यूहन्ना ने अन्य प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख नहीं किया, फिर भी बाइबल इस बात के प्रबल संकेत देती है कि श्वेत वस्त्र ही वे एकमात्र वस्त्र नहीं होंगे जिन्हें हम स्वर्ग में पहनेंगे। वास्तव में, यूहन्ना द्वारा स्वर्ग का किया गया वर्णन हमारे भविष्य के घर में प्रतिदिन के जीवन और दैनिक पहनावे का विवरण नहीं है। प्रेरित को स्वर्ग में इसलिए ले जाया गया था कि वह प्रभु यीशु के दूसरे आगमन से ठीक पहले होने वाली घटनाओं का दर्शन करे और उन्हें लिखे। उसने प्रभु के पुनरागमन से संबंधित विशेष घटनाओं को देखा। इसलिए यह मानना अत्यन्त उचित है कि जिन श्वेत वस्त्रों को यूहन्ना ने देखा, वे विशेष अवसरों के लिए पहने जाने वाले विशेष वस्त्र थे, और अन्य समयों में हम भिन्न प्रकार के वस्त्र धारण करेंगे।

स्वयं यीशु ने भी अपने एक दृष्टान्त के द्वारा इसी बात का संकेत दिया। उन्होंने एक धनी व्यक्ति के पुत्र की कथा सुनाई, जिसने अपनी विरासत का हिस्सा लिया, घर छोड़ दिया और अपने धन को उच्छृंखल तथा पापमय जीवन में नष्ट कर दिया। जब वह युवक ऐसी दयनीय स्थिति में पहुँच गया कि सूअरों के बाड़े में रहने लगा, तब उसका मन बदल गया और उसने अपने पिता के घर लौटने का निश्चय किया। उसके प्रेमपूर्ण पिता ने उसका बड़े आनन्द से स्वागत किया और उसके लिए नए वस्त्र तथा एक भव्य भोज की व्यवस्था की।

"परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, 'जल्दी से सबसे उत्तम वस्त्र लाओ और इसे पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी पहना दो और इसके पैरों में जूते पहना दो। फिर पाला-पोसा हुआ बछड़ा लाकर काटो, ताकि हम खाएँ, आनन्द मनाएँ और उत्सव करें।'" (लूका अध्याय 15 आयत 22 और 23)।

यीशु ने यह दृष्टान्त इसलिए सुनाया कि यह समझाया जा सके कि जब कोई पापी परमेश्वर के पास लौट आता है, तो स्वर्ग में कैसी प्रसन्नता होती है। ऐसा करते हुए उन्होंने हमें स्वर्ग के जीवन की एक झलक भी दी। अभी के लिए केवल एक बात पर ध्यान दें। उत्सव के समय उस पुत्र को पहनने के लिए एक विशेष वस्त्र दिया गया। जिन लोगों ने सबसे पहले यह दृष्टान्त सुना था, वे इस प्रकार के वस्त्र से भली-भाँति परिचित थे। उनके समाज में ऐसा वस्त्र केवल विशेष अवसरों—जैसे जन्मदिन या किसी पर्व—पर ही पहना जाता था। जब उत्सव समाप्त हो जाता और वह पुत्र अपने पिता के घर के सामान्य जीवन में लौटता, तो वह प्रतिदिन पहनने योग्य अन्य उपयुक्त वस्त्र धारण करता। निश्चय ही दृष्टान्त में दिखाई गई व्यवस्था स्वयं स्वर्ग की वास्तविकता से बढ़कर नहीं हो सकती। यदि हमारे पिता के घर लौटने पर विशेष अवसरों के लिए विशेष वस्त्र होंगे, तो यह भी बहुत सम्भावित है कि कार्य करने और आनन्दपूर्वक समय बिताने के लिए भी उपयुक्त वस्त्र होंगे। आने वाले एक अध्याय में मैं भविष्य के जीवन में वस्त्रों के विषय में और अधिक चर्चा करूँगी।

स्वर्ग में कार्य।

बहुत से लोग स्वर्ग की प्रतीक्षा उत्साह से नहीं करते, क्योंकि वे कल्पना ही नहीं कर पाते कि हम अनन्तकाल तक वहाँ क्या करेंगे। इसके अतिरिक्त, यह सोच पाना भी कठिन लगता है कि वहाँ हम ऐसा कोई कार्य करेंगे जिसमें वास्तव में हमें आनन्द आए, क्योंकि बहुतों को ऐसा विचार अनुचित या अधार्मिक प्रतीत होता है। फिर भी, प्रेरित पौलुस के इस कथन के आधार पर कि "मरना लाभ है," हम यह विश्वास कर सकते हैं कि आने वाले जीवन में हम जो कुछ भी करेंगे, वह हमारे इस संसार के किसी भी अनुभव से कहीं अधिक सन्तोषदायक और परिपूर्ण करने वाला होगा।

स्वर्ग की गतिविधियों पर चर्चा करने से पहले, हमें उस मूल उद्देश्य को समझना आवश्यक है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें रचा है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने हमें इस प्रकार बनाया कि हम आराधना और सेवा के द्वारा उसकी महिमा करें। यही हमारे सृजे जाने का मूल उद्देश्य है।

"परमेश्वर का भय मान, उसकी महिमा और आदर कर, उसकी आराधना कर और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि यही मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य है [यही उसके सृजे जाने का मूल उद्देश्य, परमेश्वर की योजना का लक्ष्य, चरित्र की जड़ और सच्चे आनन्द की नींव है…]।" (सभोपदेशक अध्याय 12 आयत 13)।

संभव है कि मेरी यह बात आपको बहुत उत्साहवर्धक न लगे, क्योंकि ऐसा प्रतीत हो सकता है कि मैं फिर से उसी धारणा की पुष्टि कर रही हूँ कि स्वर्ग एक अंतहीन आराधना-सभा होगा। परन्तु यह विचार इस कारण उत्पन्न होता है कि हम आराधना और प्रभु की सेवा के वास्तविक अर्थ को ठीक प्रकार से नहीं समझते। हम अक्सर सोचते हैं कि परमेश्वर की आराधना केवल रविवार को कलीसिया में की जाने वाली एक गतिविधि है। किन्तु आराधना केवल कुछ गीत गाने तक सीमित नहीं है। इस विषय को और स्पष्ट रूप से समझने के लिए आइए एक बार फिर अदन की वाटिका की ओर लौटें।

अदन की वाटिका में कार्य।

पवित्रशास्त्र में कार्य का उल्लेख पहली बार अदन की वाटिका के संदर्भ में मिलता है।

"यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को लेकर अदन की वाटिका में रखा, ताकि वह उसकी खेती करे और उसकी देखभाल करे।" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 15)।

मूल इब्रानी भाषा में "खेती करे" के लिए प्रयुक्त शब्द उन अनेक शब्दों में से एक है जिनका अर्थ कार्य करना है। और "देखभाल करे" के लिए प्रयुक्त इब्रानी शब्द का अर्थ है निगरानी करना, रक्षा करना या सावधानीपूर्वक देखभाल करना।

आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि यदि अदन की वाटिका स्वर्ग-समान सिद्ध स्थान थी, तो वहाँ मनुष्य को कार्य करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? और उस वाटिका की देखभाल करने की आवश्यकता ही क्यों थी?

परमेश्वर ने वनस्पति-जगत की सृष्टि पूर्ण विकसित अवस्था में की थी, ताकि जब मनुष्य पृथ्वी पर आए, तब उसके लिए फल और उपज पहले से उपलब्ध हों। क्योंकि उस वाटिका में पौधे और वृक्ष स्वाभाविक रूप से भरपूर बढ़ते और फलते-फूलते थे, इसलिए उनके अत्यधिक

फैलाव को नियंत्रित रखने और वाटिका को सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिए नियमित देखभाल आवश्यक थी। यही वह कार्य था जिसे परमेश्वर ने आदम को सौंपा था।

पवित्रशास्त्र के अन्य स्थानों पर "खेती करे" के लिए प्रयुक्त यही मूल शब्द "आराधना करना" और "सेवा करना" के अर्थ में भी प्रयोग किया गया है। (निर्गमन अध्याय 3 आयत 12; यहोशू अध्याय 24 आयत 15)।

जैसा कि मैंने पहले कहा, हमने भूलवश इन दोनों कार्यों—आराधना और सेवा—को केवल कलीसिया या धार्मिक सभाओं तक सीमित कर दिया है। परन्तु यदि परमेश्वर की सेवा करना मनुष्य के सृजे जाने का मूल उद्देश्य है, तो यह ऐसा कार्य होना चाहिए जिसे हर युग का प्रत्येक व्यक्ति, चाहे जीवन में उसकी परिस्थितियाँ कैसी भी हों, कर सके।

आदम और हव्वा ने उस समय भी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सेवा की और उसकी महिमा की, जब न तो कलीसिया की इमारतें थीं, न भजन-पुस्तकें और न ही कोई प्रचारक। वे अदन की वाटिका में रहते हुए ही अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर की महिमा करते थे।

• प्रेरित पौलुस ने रोमी साम्राज्य के दासों को भी शिक्षा दी कि वे अपने साधारण और कठिन कार्यों को परमेश्वर की महिमा के लिए करें। उसने लिखा,

"हे दासो, अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा का पालन करो। केवल उनकी आँखों के सामने अच्छा दिखने या उनकी कृपा पाने के लिए नहीं, बल्कि प्रभु के प्रति सच्ची भक्ति से प्रेरित होकर ऐसा करो। जो कुछ भी तुम्हारा कार्य हो, उसे पूरे मन और पूरे प्राण से ऐसे करो मानो वह मनुष्यों के लिए नहीं, बल्कि प्रभु के लिए किया जा रहा हो। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें अपने वास्तविक प्रतिफल के रूप में प्रभु से ही विरासत मिलेगी। वास्तव में तुम प्रभु मसीह की ही सेवा कर रहे हो।" (कुलुस्सियों अध्याय 3 आयत 22 से 24)।

• पौलुस ने यूनान के मसीहियों को भी लिखा,

"इसलिए चाहे तुम खाओ या पियो, या जो कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।" (1 कुरिन्थियों अध्याय 10 आयत 31)।

हम जो कुछ भी करते हैं, वह सब प्रभु के प्रति हमारे आदर, सम्मान और श्रद्धा की अभिव्यक्ति होना चाहिए। हमारा प्रत्येक विचार, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक कार्य इस बात का प्रमाण होना चाहिए कि हम उस पर विश्वास करते हैं, उससे प्रेम करते हैं और उसी पर निर्भर रहते हैं। और हमारे जीवन की हर गतिविधि—चाहे हम कोई भजन गा रहे हों, एक गिलास दूध पी रहे हों या एक पेड़ लगा रहे हों—हमारे लिए आनन्द और गहरे सन्तोष का स्रोत बनने के लिए ही है।

अब परिश्रम और कठिन श्रम नहीं होगा।

मनुष्य के भीतर अर्थपूर्ण और सन्तोषदायक कार्य करने की इच्छा स्वयं परमेश्वर द्वारा रखी गई है। यह कोई गलत बात नहीं है, बल्कि यह इस बात का एक हिस्सा है कि परमेश्वर ने हमें किस प्रकार बनाया है। कार्य का उद्देश्य कभी भी वह कठिन, थका देने वाला और बोझिल परिश्रम नहीं था, जैसा कि इस वर्तमान जीवन में प्रायः अनुभव होता है। परमेश्वर के वचन के अनुसार, ऐसा कष्टदायक श्रम आदम के पाप का परिणाम है।

"फिर उसने आदम से कहा, 'तेरे कारण भूमि शापित हुई। तू जीवनभर दुःख उठाकर उसी से अपनी जीविका प्राप्त करेगा। वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उत्पन्न करेगी, और तू मैदान की उपज खाएगा। अपने माथे के पसीने की रोटी खाएगा, जब तक कि तू फिर मिट्टी में न लौट जाए, क्योंकि उसी में से तू लिया गया था।'" (उत्पत्ति अध्याय 3 आयत 17 से 19)।

परन्तु आने वाले जीवन में यह सब बदल जाएगा। तब कार्य वही बन जाएगा जिसके लिए उसे आरम्भ से बनाया गया था—एक ऐसा आनन्ददायक और सन्तोषदायक कार्य जो प्रभु की महिमा करे और दूसरों के जीवन में भी आशीष का कारण बने। तब हम अपने सृजे जाने के वास्तविक उद्देश्य को पूरा करेंगे, क्योंकि हम जो कुछ भी करेंगे, वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सेवा और आराधना का ही एक कार्य होगा।

हाँ, स्वर्ग में सामूहिक आराधना के अवसर भी होंगे। प्रेरित यूहन्ना ने ऐसे अनेक दृश्य देखे थे। परन्तु बाइबल यह भी प्रकट करती है कि हमारे भविष्य के घर में केवल आराधना-सभाएँ ही नहीं होंगी, बल्कि और भी बहुत-सी गतिविधियाँ होंगी—कार्य भी और आनन्ददायक मनोरंजन भी।

हम वहाँ क्या-क्या करेंगे?

इसके विषय में मैं आने वाले अध्यायों में विस्तार से बताऊँगी। अभी केवल इतना संकेत दे दूँ कि जिन अनेक गतिविधियों का हम इस जीवन में आनन्द लेते हैं, उनमें से बहुत-सी आने वाले जीवन में भी हमारे साथ बनी रहेंगी।

स्वर्ग में ज्ञान और समय।

मैंने अनेक लोगों को यह कहते सुना है कि स्वर्ग में पहुँचते ही हमें सब कुछ तुरंत ज्ञात हो जाएगा। कुछ अन्य लोग यह भी कहते हैं कि अनन्तकाल में समय का कोई अस्तित्व ही नहीं होगा। परन्तु ये दोनों धारणाएँ सही नहीं हैं और यही कारण है कि बहुत-से लोगों को आने वाले जीवन के विषय में उत्साह अनुभव नहीं होता। यदि किसी ऐसे लोक में, जहाँ समय

का कोई प्रवाह ही न हो, हमें एक ही क्षण में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाए, तो वहाँ न कोई परिवर्तन होगा और न ही कोई नई चुनौती। निस्संदेह, इस वर्तमान जीवन में परिवर्तन और चुनौतियाँ कभी-कभी कठिन लगती हैं, परन्तु यदि ये बिल्कुल ही न हों, तो स्वर्ग का जीवन अत्यन्त एकरस और नीरस प्रतीत होगा।

क्या स्वर्ग में पहुँचते ही हमें सब कुछ ज्ञात हो जाएगा?

यह धारणा कि स्वर्ग में पहुँचते ही हमें सम्पूर्ण ज्ञान मिल जाएगा, प्रेरित पौलुस के एक कथन को गलत समझने के कारण उत्पन्न हुई है।

"अब हम दर्पण में धुँधला-सा प्रतिबिम्ब देखते हैं, परन्तु तब आमने-सामने देखेंगे। अब मैं आंशिक रूप से जानता हूँ, परन्तु तब मैं उसी प्रकार पूरी स्पष्टता से जानूँगा, जैसे मैं स्वयं पूरी तरह जाना गया हूँ।" (1 कुरिन्थियों अध्याय 13 आयत 12)।

पौलुस ने यह नहीं कहा कि हमें सब कुछ ज्ञात हो जाएगा। उसका आशय यह था कि स्वर्ग में हम वस्तुओं को कहीं अधिक स्पष्ट रूप से देखेंगे और इसलिए उन्हें अधिक सही ढंग से समझ सकेंगे। यदि प्रेरित का उद्देश्य यह कहना होता कि हमें सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा, तो वह इसके लिए भिन्न शब्दों का प्रयोग करता। इसके स्थान पर उसने एक ही यूनानी मूल शब्द के विभिन्न रूपों का तीन बार प्रयोग किया है—"जानता हूँ," "जानूँगा," और "जाना गया हूँ।" इस शब्द का अर्थ है—जानना, पहचानना, समझना या पूरी स्पष्टता से समझ लेना।

दर्पण के धुँधले प्रतिबिम्ब का उदाहरण पौलुस के आशय को और भी स्पष्ट कर देता है। कुरिन्थ नगर, जहाँ के विश्वासियों को उसने यह पत्र लिखा, अपने चमकाए हुए काँसे के दर्पणों के लिए प्रसिद्ध था। उसके पाठक भली-भाँति जानते थे कि धातु से बने वे दर्पण स्पष्ट प्रतिबिम्ब नहीं दिखाते थे, बल्कि छवि को विकृत कर देते थे। उस समय की संस्कृति में देखना और जानना एक-दूसरे से जुड़े हुए विचार माने जाते थे। इसलिए वे तुरन्त समझ गए कि पौलुस क्या कहना चाहता है। हममें से कोई भी इस समय वास्तविकता को पूरी स्पष्टता से नहीं देखता। पाप के प्रभाव के कारण हमारी समझ में अनेक भ्रम और गलत धारणाएँ हैं। परन्तु स्वर्ग में ये सभी भ्रम समाप्त हो जाएँगे और तब हम वास्तविकता को ठीक वैसे ही समझेंगे जैसी वह वास्तव में है।

जब प्रेरित यूहन्ना स्वर्ग में था, तब उसने वहाँ पुरुषों और स्त्रियों को परमेश्वर से यह पूछते हुए सुना कि वह पृथ्वी पर न्याय कब करेगा। उन्हें उत्तर दिया गया कि उन्हें अभी कुछ समय और प्रतीक्षा करनी होगी। इसका अर्थ यह है कि वे स्वर्ग में होने पर भी ऐसी

जानकारी पूछ रहे थे जो उन्हें पहले ज्ञात नहीं थी, और परमेश्वर ने उन्हें वह नई जानकारी दी। दूसरे शब्दों में, उन्होंने वहाँ कुछ नया सीखा।

"उन्होंने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, 'हे पवित्र और सत्य प्रभु, तू पृथ्वी के रहने वालों का न्याय करके हमारे लहू का बदला कब तक नहीं लेगा?'... तब उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर और विश्राम करें, जब तक कि उनके उन साथी सेवकों और भाइयों की संख्या पूरी न हो जाए जिन्हें उनकी ही तरह मार डाला जाना था।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 आयत 10 और 11)।

हम कभी भी सब कुछ नहीं जान पाएँगे—कभी भी नहीं। केवल परमेश्वर ही सब कुछ जानता है। सर्वज्ञता केवल परमेश्वर का गुण है। हम उसकी सृष्टि हैं और सदा सीमित प्राणी ही रहेंगे, जिनकी अपनी निश्चित सीमाएँ हैं—यहाँ तक कि स्वर्ग में भी। परमेश्वर हमें पूरी तरह जानता है और उसके ज्ञान में हमारे विषय में कोई भ्रम या त्रुटि नहीं होती। परन्तु हम कभी भी सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विषय में जानने योग्य सब कुछ पूरी तरह नहीं जान पाएँगे, क्योंकि वह अनन्त है।

क्या स्वर्ग में समय नहीं होगा?

यह धारणा बहुत प्रचलित है कि स्वर्ग में समय का कोई अस्तित्व नहीं होगा। परन्तु बाइबल जो प्रकट करती है, वह इससे भिन्न है। प्रेरित यूहन्ना ने अदृश्य लोक के अपने दर्शन में अनेक बार समय के बीतने का उल्लेख किया है।

• जैसा कि पहले बताया गया, स्वर्ग में वे शहीद जो पृथ्वी पर न्याय की प्रतीक्षा कर रहे थे, उनसे कहा गया कि वे "थोड़ी देर और विश्राम करें।"(प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 आयत 11)।

• जब यूहन्ना अदृश्य लोक में था, तब उसने लोगों को "परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होकर उसके मन्दिर में दिन-रात उसकी सेवा करते हुए"देखा। (प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 आयत 15)।

• प्रेरित ने यह भी लिखा कि "स्वर्ग में लगभग आधे घंटे तक मौन छाया रहा।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 8 आयत 1)।

• उसने प्रभु यीशु के इन शब्दों का भी उल्लेख किया कि "परमेश्वर के स्वर्गलोक में जीवन का वृक्ष है... जो बारह प्रकार के फल देता है और हर महीने नया फल उत्पन्न करता है।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 आयत 7; प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 आयत 2)।

यूहन्ना ने यह भी लिखा कि उसने एक स्वर्गदूत को यह घोषणा करते हुए सुना, "अब फिर विलम्ब न होगा।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 आयत 6)।

कुछ लोग इस वचन को इस बात का प्रमाण मानते हैं कि स्वर्ग में समय का अस्तित्व नहीं होगा। परन्तु मूल यूनानी भाषा में इसका अर्थ यह नहीं है। द एक्सपैंडेड वाइन्स डिक्शनरी ऑफ न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स (1984) के अनुसार, यहाँ जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "समय" किया गया है, उसका वास्तविक अर्थ "विलम्ब" है। जिस स्वर्गदूत को यूहन्ना ने यह घोषणा करते हुए सुना, उसका आशय यह था कि अब परमेश्वर के न्याय के पूरा होने और उसकी उद्धार-योजना की परिपूर्णता में और कोई विलम्ब नहीं रहेगा।

"अब फिर कोई विलम्ब नहीं होगा! जब सातवें स्वर्गदूत के तुरही फूँकने का समय आएगा, तब परमेश्वर का वह गुप्त उद्देश्य, जिसकी उसने अपने सेवकों अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं को घोषणा की थी, पूर्ण हो जाएगा।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 आयत 6 और 7)।

स्वर्ग में परिवर्तन और प्रगति भी होगी।

बहुत से लोग यह भी मानते हैं कि स्वर्ग में सब कुछ सदा एक-सा ही रहेगा और कभी कोई परिवर्तन नहीं होगा। परन्तु ऐसा नहीं है। अनन्तकाल में भी प्रक्रिया, अर्थात् क्रमिक प्रगति, बनी रहेगी।

वेब्स्टर्स न्यू स्टूडेंट्स डिक्शनरी (1969) के अनुसार, "प्रक्रिया" का अर्थ है—"क्रियाओं, कार्यों या परिवर्तनों की ऐसी श्रृंखला जो किसी परिणाम तक पहुँचती है।" समय और प्रक्रिया एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, क्योंकि जब घटनाएँ एक निश्चित क्रम में घटित होती हैं, तभी समय का प्रवाह भी दिखाई देता है।

प्रेरित यूहन्ना ने स्वर्ग में अनेक ऐसी घटनाएँ देखीं जो एक निश्चित क्रम में घटित हुईं। उदाहरण के लिए, सातों मुहरें एक-एक करके खोली गईं; सातों तुरहियाँ क्रमशः फूँकी गईं; और सातों कटोरे भी एक के बाद एक उँडेले गए। उसने लोगों को गीत गाते हुए भी सुना। किसी भी गीत का एक आरम्भ, मध्य और अन्त होता है। उसमें लय और गति होती है तथा वह भी एक निश्चित क्रम में आगे बढ़ता है। इसलिए अनन्तकाल में भी हम समय के प्रवाह के भीतर रहेंगे, परन्तु वहाँ यह दबाव कभी नहीं होगा कि समय हमारे हाथ से निकल रहा है।

आने वाले जीवन के विषय में प्रेरित पौलुस ने भी यही सत्य प्रकट किया। उसने कहा कि सम्पूर्ण अनन्तकाल में परमेश्वर निरन्तर हमें अपनी उस अद्भुत अनुग्रह-सम्पदा को और अधिक प्रकट करता रहेगा, जो उसने उन लोगों के लिए तैयार की है जिन्होंने उसके उद्धार

को ग्रहण किया है। इसका अर्थ है कि अनन्तकाल में भी निरन्तर प्रगति होगी और परमेश्वर अपने अनुग्रह को लगातार नई-नई गहराइयों में प्रकट करता रहेगा।

"और उसने हमें मसीह यीशु में उसके साथ जिलाया और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया, ताकि आने वाले युगों में वह मसीह यीशु में हम पर की गई अपनी कृपा के द्वारा अपने अनुग्रह के अत्यन्त महान धन को प्रकट करता रहे।" (इफिसियों अध्याय 2 आयत 6 और 7)।

इस पुस्तक के दूसरे भाग में हम स्वर्ग के जीवन का और भी विस्तार से अध्ययन करेंगे। परन्तु अभी के लिए इस सत्य से उत्साहित हों कि स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है, जहाँ वास्तविक लोग रहते हैं और वास्तविक कार्य करते हैं—ऐसे अनेक कार्य, जो हम इस पृथ्वी पर भी करते हैं। आने वाला जीवन हमें न तो अपरिचित लगेगा और न ही विचित्र। बल्कि वह ऐसा अनुभव होगा जैसे हम अपने सच्चे घर लौट आए हों।

किन्तु अपने अनन्त निवास के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर और अधिक चर्चा करने से पहले, हमें यह समझना आवश्यक है कि स्वर्ग में रहने वाले लोग वास्तव में कैसे होते हैं।



स्वर्ग में हम कैसे होंगे?

हममें से बहुत-से लोगों के मन में आने वाले जीवन के विषय में अनेक गलत धारणाएँ हैं। हमें अक्सर यह सिखाया गया है कि स्वर्ग में पहुँचने के बाद परिवार और मित्रों के साथ हमारे संबंध समाप्त हो जाएँगे और हमें परमेश्वर के अतिरिक्त किसी और की आवश्यकता या इच्छा नहीं रहेगी। कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि वहाँ हमारी व्यक्तिगत पहचान समाप्त हो जाएगी और हम एक बड़े सामूहिक समूह का भाग बन जाएँगे, जिसका कार्य केवल परमेश्वर की आराधना करना होगा। इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि ऐसे विचारों के कारण लोग स्वर्ग की प्रतीक्षा उत्साह से नहीं करते। परन्तु परमेश्वर का वचन यह प्रकट करता है कि हम वहाँ भी अपनी अलग-अलग पहचान और विशिष्ट व्यक्तित्व वाले व्यक्ति बने रहेंगे, और अपने मित्रों तथा प्रियजनों के साथ हमारे संबंध भी बने रहेंगे।

सम्पूर्ण चित्र।

मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में अधिकांश गलत धारणाएँ इस कारण उत्पन्न होती हैं कि लोग मनुष्य के लिए परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना को नहीं समझते। जब हम स्वर्ग को परमेश्वर की इस महान योजना के संदर्भ में देखते हैं, तब यह विचार बिल्कुल तर्कसंगत नहीं लगता कि वहाँ पहुँचकर हम एक-दूसरे को पहचान नहीं पाएँगे या हमारी व्यक्तिगत भिन्नता समाप्त हो जाएगी। यद्यपि इस पुस्तक में परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना का विस्तार से अध्ययन करना सम्भव नहीं है, फिर भी उसके कुछ मुख्य बिन्दु संक्षेप में इस प्रकार हैं।

• अनादिकाल में ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने यह योजना बनाई कि वह स्त्री और पुरुष को अपने स्वरूप में रचे और उन्हें अपने परिवार का सदस्य बनाए। परन्तु प्रथम मनुष्य आदम ने पाप के द्वारा परमेश्वर से स्वतंत्र होकर जीने का मार्ग चुन लिया। उसकी इस अवज्ञा का प्रभाव सम्पूर्ण मानवजाति पर पड़ा और मनुष्य का स्वभाव मूल रूप से बदल गया। तभी से प्रत्येक मनुष्य एक ऐसी पतित मानवजाति में जन्म लेता है जिसका स्वभाव परमेश्वर के

विरोध में है, और यही स्वभाव उसके पापमय कार्यों में प्रकट होता है। (रोमियों अध्याय 3 आयत 23; रोमियों अध्याय 5 आयत 19; इफिसियों अध्याय 2 आयत 1 से 3)।

• तब प्रभु ने मनुष्य को इस स्थिति से बचाकर अपने परिवार में वापस लाने का मार्ग तैयार किया। प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के कारण परमेश्वर अब पापी मनुष्यों को पाप के दोष, उसकी शक्ति और उसके विनाशकारी प्रभाव से छुड़ाकर उन्हें अपने पवित्र और धर्मी पुत्र-पुत्रियों में बदल सकता है। प्रभु यीशु ही हमारे उद्धारकर्ता हैं।

• "उसने जगत की उत्पत्ति से पहले ही हमें मसीह में चुन लिया, ताकि हम उसके सामने प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। उसने अपनी इच्छा और प्रसन्नता के अनुसार पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने पुत्र-पुत्रियों के रूप में गोद ले... उसी में उसके लहू के द्वारा हमें छुटकारा, अर्थात् हमारे अपराधों की क्षमा प्राप्त हुई।" (इफिसियों अध्याय 1 आयत 4 से 7)।

क्रूस पर प्रभु यीशु मसीह ने पाप का पूरा मूल्य चुका दिया, ताकि पाप को सदा के लिए दूर किया जा सके। जब हम उसके बलिदान को विश्वास से स्वीकार करते हैं, तब हमारे पाप धो दिए जाते हैं और हमें अनन्त जीवन प्राप्त होता है।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना अध्याय 3 आयत 16)।

यह अनन्त जीवन केवल अनन्तकाल तक जीवित रहने का नाम नहीं है। इस अर्थ में तो प्रत्येक मनुष्य अनन्त अस्तित्व रखता है, क्योंकि शारीरिक मृत्यु के बाद कोई भी अस्तित्वहीन नहीं हो जाता। वास्तविक प्रश्न यह है कि हम अनन्तकाल कहाँ बिताएँगे—परमेश्वर के साथ उसके घर में, या उससे सदा के लिए अलग होकर।

जो अनन्त जीवन सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रभु यीशु पर विश्वास करने वालों को देता है, वह केवल जीवन की अवधि नहीं, बल्कि जीवन का एक नया स्वरूप है। जब हम यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार करते हैं, तब परमेश्वर अपने ही जीवन का अंश हमारे भीतर प्रदान करता है। उसका अनादि, अनन्त और अजन्मा जीवन हमारे भीतरी मनुष्य, अर्थात् हमारी आत्मा में प्रवाहित हो जाता है, और हम वास्तव में उसी से जन्म लेते हैं। (1 यूहन्ना अध्याय 5 आयत 1; यूहन्ना अध्याय 1 आयत 12)।

यही नया जन्म हमारे भीतर एक परिवर्तन की प्रक्रिया आरम्भ करता है, जो अन्ततः हमें उसी स्वरूप में पुनर्स्थापित कर देता है जैसा परमेश्वर ने आरम्भ से हमारे लिए चाहा था—ऐसे पुत्र और पुत्रियाँ जो अपने सम्पूर्ण अस्तित्व में पवित्र, धर्मी और निर्दोष हों। यह रूपान्तरण तब

आरम्भ होता है जब हम नया जन्म प्राप्त करते हैं, हमारे पृथ्वी के जीवनभर चलता रहता है और आने वाले जीवन में जाकर पूर्ण हो जाता है।

इसी कारण बाइबल स्वर्ग के वर्तमान निवासियों को "धर्मी जन, जो सिद्ध किए जा चुके हैं," कहती है। (इब्रानियों अध्याय 12 आयत 23)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर का उद्धार का उद्देश्य हमारे संपूर्ण अस्तित्व को पाप और उसके सभी प्रभावों से स्वतंत्र करना है, न कि हमें किसी और व्यक्ति या किसी दूसरी वस्तु में बदल देना। उनका उद्देश्य हमें सिद्ध बनाना है, न कि हमें मिटा देना या हमारे स्थान पर किसी और को स्थापित कर देना। आने वाले जीवन में हम वही सब कुछ होंगे, जैसा प्रभु ने सदा से चाहा था कि हम हों। यही परमेश्वर की योजना है।

आप केवल अपने शारीरिक रूप-रंग से कहीं बढ़कर हैं। जो बात आपको वास्तव में आप बनाती है, वह है आपके जीवन का इतिहास, आपके संबंध, और आपके अनुभव। यही आपकी व्यक्तित्व की पहचान है; आपकी प्रतिभाएँ, योग्यताएँ, रुचियाँ, पसंद और नापसंद ही आपको विशिष्ट बनाती हैं। निस्संदेह, इन सब पर पाप का प्रभाव पड़ा है, परंतु स्वर्ग में इन सबका शुद्धीकरण होगा। तब आप वही बन जाएँगे, जैसा बनने के लिए परमेश्वर ने आपको ठहराया था। इसका यह अर्थ नहीं कि इस जीवन में हमें मसीह के समान चरित्र और पवित्रता में बढ़ना नहीं चाहिए। अवश्य बढ़ना चाहिए। परंतु यह जान लें कि यह प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होगी, जब तक हम स्वर्ग में नहीं पहुँच जाते।

परमेश्वर ने हमें एक-दूसरे से भिन्न बनाया है।

हम सब स्वर्ग में एक जैसे नहीं होंगे, क्योंकि हम अभी भी एक जैसे नहीं हैं। हमारी विशिष्टता और व्यक्तिगत पहचान परमेश्वर की अपने परिवार के लिए बनाई गई योजना का भाग है। जब प्रभु ने आदम की रचना की, तब पृथ्वी के सभी लोगों के समूह उसी में समाहित थे। जैसा लिखा है, "उसने एक ही पूर्वज [आदम] से मनुष्यों की सब जातियों को उत्पन्न किया, ताकि वे सारी पृथ्वी पर निवास करें।" (प्रेरितों के काम अध्याय 17 आयत 26)।

पहले दो मनुष्य, आदम और हव्वा, भी एक-दूसरे से भिन्न थे। आदम पुरुष था और हव्वा स्त्री थी। आदम आकार में बड़ा और अधिक बलवान था, जबकि हव्वा अत्यंत सुंदर थी।

शायद आप सोच रहे हों, "क्या बाइबल यह नहीं कहती कि स्वर्ग में हम न तो पुरुष रहेंगे और न स्त्री? आखिरकार, गलातियों अध्याय 3 आयत 28 में लिखा है, 'न वहाँ यहूदी रहा, न यूनानी; न दास, न स्वतंत्र; न पुरुष, न स्त्री, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।'"

इस पद का अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी लैंगिक पहचान खो देंगे। इसके संदर्भ को देखने पर स्पष्ट हो जाता है कि यह कथन मसीह में पुरुष और स्त्री की समानता के विषय में है। अपने अनंतकालीन घर में भी हम परमेश्वर के लिए समान रूप से मूल्यवान बने रहेंगे, फिर भी हम एक-दूसरे से भिन्न रहेंगे।

प्रेरित यूहन्ना ने भी इस बात की पुष्टि की कि स्वर्ग में हमारी व्यक्तिगत पहचान और विशिष्टता बनी रहेगी। यद्यपि उसने लोगों की एक इतनी बड़ी भीड़ देखी कि जिसकी गिनती करना असंभव था, फिर भी वह पहचान सका कि वह भीड़ विभिन्न जातियों और राष्ट्रों के लोगों से बनी हुई थी। यह तब तक संभव नहीं होता, जब तक वे स्त्री और पुरुष अपनी-अपनी राष्ट्रीय पहचान से जुड़ी विशेषताओं को बनाए न रखते।

"इसके बाद मैंने देखा कि हर एक जाति, हर एक गोत्र, हर एक लोगों और हर एक भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़ थी, जिसे कोई गिन नहीं सकता था। वे सिंहासन और मेम्ने के सामने खड़े थे।" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 आयत 9)।

केवल परमेश्वर ही नहीं।

शायद आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि स्वर्ग में हमें प्रभु के सिवा किसी भी वस्तु या किसी भी व्यक्ति की चाह नहीं रहेगी। यद्यपि यह बात बहुत आत्मिक प्रतीत होती है, फिर भी यह एक गलत धारणा पर आधारित है—कि परमेश्वर के अतिरिक्त किसी और व्यक्ति या किसी और बात में आनंद पाना या उसकी लालसा रखना किसी प्रकार गलत है। निस्संदेह, स्वर्ग का सर्वोच्च और सबसे महान आनंद प्रभु को आमने-सामने देखना और उन्हें उस रीति से जानना होगा, जैसा हम अभी नहीं जानते। कल्पना कीजिए उस आनंद की, जब हम उस प्रभु का दर्शन करेंगे जिसने हमें अपने लिए रचा, जो हमसे प्रेम करता है और जिसने हमें एक अद्भुत उद्देश्य तथा महिमामय भविष्य के लिए छुटकारा दिया है। फिर भी, यह तथ्य कि प्रभु परमेश्वर स्वर्ग का सबसे बड़ा आनंद हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि वहाँ किसी अन्य प्रकार का आनंद नहीं होगा।

• क्योंकि संबंध अगले जीवन में भी बने रहेंगे, इसलिए जिन लोगों को हम पृथ्वी पर जानते और प्रेम करते थे, उनके प्रति हमारा प्रेम भी बना रहेगा। ज़रा उस आनंद की कल्पना कीजिए जो आपको तब होगा, जब आप उस प्रियजन से फिर मिलेंगे जिसे आपने वर्षों से नहीं देखा, क्योंकि वह आपसे पहले स्वर्ग चला गया था।

• और क्योंकि अनंतकाल में भी हमारी परमेश्वर द्वारा दी गई विशिष्ट पहचान बनी रहेगी, इसलिए हमारी बहुत-सी वही रुचियाँ और अभिरुचियाँ भी बनी रहेंगी जो इस पृथ्वी पर थीं।

कल्पना कीजिए कि जब जीवन की वे सभी बाधाएँ, जो आज हमारे मार्ग में आती हैं, सदा के लिए हट जाएँगी, तब उन रुचियों को पूरा करने में आपको कितना आनंद मिलेगा।

आने वाले जीवन में हमारी रुचियाँ और भावनाएँ समाप्त नहीं कर दी जाएँगी। इसके विपरीत, वे पूर्ण रूप से शुद्ध कर दी जाएँगी और पाप के सभी दोष तथा उसके प्रभाव सदा के लिए दूर कर दिए जाएँगे। उन इच्छाओं के साथ हमारा संघर्ष, जो कभी-कभी हमें अधार्मिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं, पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। हमारी लालसाएँ और भावनाएँ उसी प्रकार कार्य करेंगी, जैसा परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए बनाया था, और वे परमेश्वर की महिमा करने वाली अभिव्यक्तियों के रूप में प्रकट होंगी। हमारे संपूर्ण अस्तित्व की गहराइयों से केवल यही इच्छा होगी कि हम प्रभु को प्रसन्न करें, और तब हम ऐसा पूर्ण रूप से करने में सक्षम होंगे।

हर अच्छी वस्तु का स्रोत।

परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य बात में आनंद पाना गलत नहीं है। बाइबल बताती है कि हर अच्छी वस्तु का स्रोत वही हैं, और वह हमें शिक्षा देती है कि हम उनके द्वारा दिए गए अनेक वरदानों के लिए कृतज्ञ रहें और उनका आनंद लें। स्वर्ग में भी यह सत्य कभी नहीं बदलेगा।

“हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है और न ही बदलने से पड़ने वाली छाया।” (याकूब अध्याय 1 आयत 17)।

“परमेश्वर... जो हमारे आनंद के लिए हमें सब कुछ बहुतायत से और निरंतर प्रदान करता है।” (1 तीमुथियुस अध्याय 6 आयत 17)।

“क्योंकि परमेश्वर की बनाई हुई हर एक वस्तु अच्छी है, और यदि धन्यवाद के साथ ग्रहण की जाए तो कोई भी वस्तु त्यागने योग्य नहीं है, क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा पवित्र ठहराई जाती है।” (1 तीमुथियुस अध्याय 4 आयत 4 से 5)।

जब हम उन वस्तुओं की इच्छा करते हैं और उनमें आनंद पाते हैं जिन्हें प्रभु ने बनाया है, तब हम उनकी महिमा करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप अपने बगीचे में उगाई गई सब्जियों का कृतज्ञता के साथ आनंद लेते हैं, तो आप उस परम स्रोत की महिमा करते हैं जिसने वह सब उपलब्ध कराया है—अर्थात् प्रभु परमेश्वर की। जब आप अपने घर और अपनी गाड़ी के लिए धन्यवाद प्रकट करते हैं, तब भी आप प्रभु का आदर करते हैं, क्योंकि

उन्हीं ने वे मूल पदार्थ बनाए जिनसे ये वस्तुएँ तैयार की गईं, और मनुष्यों को उन्हें बनाने की बुद्धि और कौशल भी उसी ने दिया।

हाँ, वर्तमान समय में यह संभव है कि हम लोगों या वस्तुओं को परमेश्वर से अधिक महत्व देने लगें, क्योंकि हम अभी तक पाप के प्रभाव से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हुए हैं। परंतु स्वर्ग में ऐसा कभी नहीं होगा।

क्या केवल परमेश्वर ही?

प्रभु ने हमें इस प्रकार बनाया है कि सबसे बढ़कर हम उनके साथ संबंध रखने की लालसा करें। साथ ही, उन्होंने हमें इस प्रकार भी बनाया है कि हमें अन्य मनुष्यों की आवश्यकता हो। जब परमेश्वर ने आदम की रचना की, तब वे दोनों साथ-साथ चलते और बातचीत करते थे। फिर भी प्रभु ने कहा कि आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है। इसका अर्थ नैतिक दृष्टि से बुरा होना नहीं था, बल्कि यह था कि परमेश्वर की योजना कभी भी केवल एक मनुष्य बनाने की नहीं थी। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आदम को—और आदम में समस्त मानवजाति को—अपने समान अन्य लोगों के साथ संगति और सहभागिता की इच्छा के साथ बनाया।

"तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, 'मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिए उसके योग्य एक ऐसा सहायक बनाऊँगा, जो उसके अनुरूप हो और उसे पूर्ण करे।'" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 18)।

जब आदम ने पहली बार हव्वा को देखा, तो उसकी पहली प्रतिक्रिया थी, "अब जाकर यह मिली!" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 23)। परमेश्वर ने इस बात के लिए आदम को नहीं डाँटा कि वह अपने अतिरिक्त किसी और के कारण इतना आनंदित था। इसके विपरीत, प्रभु ने उन दोनों को आशीष दी और उस वाचा-आधारित संबंध की स्थापना की, जिसे हम विवाह कहते हैं (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 23 से 25)।

दूसरे लोगों में आनंद और प्रसन्नता पाना पाप नहीं है। दूसरों के साथ संबंध रखना आवश्यक रूप से हमें प्रभु से दूर नहीं करता। वास्तव में, एक अच्छा मित्र—ऐसा व्यक्ति जिसमें आप परमेश्वर के गुणों को देखते हैं और जो आपको मसीह के समान चरित्र को और अधिक प्रभावी ढंग से प्रकट करने में सहायता करता है—आपको एक बेहतर मनुष्य बना सकता है।

• जब यीशु इस पृथ्वी पर थे, तब उन्होंने लोगों के साथ बहुत समय बिताया। यहाँ तक कि उनके कुछ विशेष निकट मित्र भी थे—यूहन्ना, पतरस और याकूब। निस्संदेह, इन मित्रताओं ने कभी भी यीशु का ध्यान उनके पिता से नहीं हटाया।

• पौलुस ने फिलिप्पी नगर के विश्वासियों के प्रति अपने गहरे प्रेम और उनके साथ रहने की अपनी लालसा के विषय में लिखा, "परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं मसीह यीशु के समान स्नेह के साथ तुम सब के लिए कैसी लालसा रखता हूँ।" (फिलिप्पियों अध्याय 1 आयत 8)। यह स्पष्ट है कि उन लोगों के प्रति उसका प्रेम, परमेश्वर के प्रति उसके उत्साह को तनिक भी कम नहीं करता था।

स्वर्ग में जाना इस पृथ्वी पर स्थापित संबंधों को समाप्त नहीं कर देता। कोई भी बात हमारे अतीत के इतिहास को नहीं बदल सकती—इस तथ्य को नहीं कि हम किसी परिवार का भाग थे या किसी व्यक्ति के साथ हमारा गहरा और घनिष्ठ मित्रता का संबंध था। पौलुस जानता था कि स्वर्ग में उसकी प्रतीक्षा करने वाले प्रतिफलों में से एक यह भी होगा कि जिन लोगों को उसने मसीह पर विश्वास करने के लिए अगुवाई की थी, उनके साथ उसका संबंध अनंतकाल तक बना रहेगा।

"आखिर हमारी आशा, हमारा आनंद, और वह कौन-सा मुकुट है जिस पर हमें गर्व होगा? क्या वह तुम ही नहीं हो, जब हम अपने प्रभु यीशु के सामने खड़े होंगे? हाँ, तुम ही हमारे लिए बड़े आनंद का कारण बनोगे... क्योंकि तुम ही हमारी महिमा और हमारा आनंद हो।" (1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2 आयत 19 से 20)।

प्रेम का नियम।

यीशु ने कहा कि परमेश्वर की सारी व्यवस्था दो आज्ञाओं में समाई हुई है—परमेश्वर से प्रेम करो और अपने पड़ोसी से प्रेम करो (मत्ती अध्याय 22 आयत 37 से 40)। अदन की वाटिका में आदम भी इसी प्रेम की व्यवस्था के अधीन था। जैसा लिखा है, "क्योंकि जो आज्ञा तुम ने आरम्भ से सुनी है, वह यही है कि हम एक-दूसरे से प्रेम रखें।" (1 यूहन्ना अध्याय 3 आयत 11)। प्रेम करने की यह अनंत आज्ञा स्वर्ग में भी कभी समाप्त नहीं होगी। और क्योंकि वहाँ हम पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिए जाएँगे, इसलिए हम प्रभु से भी और एक-दूसरे से भी पूर्ण प्रेम कर सकेंगे।

मानवीय संबंध पूर्ण धार्मिकता और सच्ची शुद्धता से संचालित होंगे। वहाँ न घमंड होगा, न असुरक्षा की भावना; न स्वयं को ऊँचा दिखाने की इच्छा होगी और न दूसरों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति। छिपे हुए स्वार्थ, विश्वासघात, दिखावा, कटु वचन, क्रोध के विस्फोट और कपटपूर्ण व्यवहार वहाँ अस्तित्व ही नहीं रखेंगे। यह कल्पना करना भी कठिन है कि हमारे भावी घर में परिवार और मित्रों के साथ संबंध कितने पूर्ण सामंजस्य, शांति और संतुष्टि से भरे होंगे। जिन लोगों को हम पहले से जानते हैं, उनके साथ हमारे संबंध और भी गहरे होंगे, और साथ ही

हम उन लोगों से भी नए संबंध स्थापित करेंगे जिनसे हम अभी तक नहीं मिले हैं—जैसे अपने पूर्वजों से, बाइबल में वर्णित स्त्री-पुरुषों से, और विभिन्न देशों के लोगों से।

स्वर्ग में परमेश्वर सभी का पिता होगा, और वहाँ रहने वाले सभी मनुष्य उसके पुत्र और पुत्रियाँ होंगे। इसका अर्थ है कि हमारा संबंध केवल उन लोगों से ही नहीं रहेगा जो पृथ्वी पर हमारे रक्त-संबंधी थे, बल्कि हमारे मित्रों से भी होगा। हम सब मिलकर एक बड़ा, आनंदित और स्वस्थ परिवार होंगे, और अंततः एक-दूसरे के साथ उसी प्रकार व्यवहार करेंगे जैसा प्रभु सदा से चाहता है। स्वर्ग सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उस महान योजना की परिपूर्णता है, जिसके द्वारा वह पाप से नष्ट और क्षतिग्रस्त हुई हर वस्तु को—यहाँ तक कि मानवीय संबंधों को भी—छुड़ाकर फिर से पूर्ण रूप में बहाल करेगा।

मैं उस व्यक्ति को स्वर्ग में नहीं देखना चाहता!

संभव है कि कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे आप स्वर्ग में नहीं देखना चाहते। ऐसा नहीं कि आप यह चाहते हों कि वह नरक में जाए; बल्कि आप केवल यह नहीं चाहते कि अनंतकाल में आपका उससे सामना हो। कई लोगों ने मुझसे स्वीकार किया है कि आने वाले जीवन में किसी विशेष व्यक्ति के आमने-सामने आने का विचार ही उन्हें भयभीत कर देता है। उनमें ऐसे लोग भी शामिल हैं:

• एक स्त्री जिसने गर्भपात कराया था और अब अपने उस बच्चे से मिलने के विचार से डरती है, क्योंकि उसे अपने किए पर गहरा अपराधबोध है।

• एक महिला जिसका अपनी एक मित्र के साथ गंभीर मतभेद हो गया था, और उसकी वह मित्र मृत्यु से पहले उससे मेल-मिलाप नहीं कर सकी।

• एक पुरुष जो अपने जीवन को यीशु मसीह के प्रति समर्पित करने से पहले प्रत्यक्ष रूप से अपनी ही माँ की मृत्यु का कारण बना था।

• एक बेटी जिसके पिता ने उसके साथ दुर्व्यवहार करके उसे गहरी भावनात्मक और शारीरिक पीड़ा पहुँचाई। यद्यपि मृत्युशय्या पर उसके पिता ने पश्चाताप किया और परमेश्वर के उद्धारकारी अनुग्रह को ग्रहण कर लिया, फिर भी वह चाहती है कि स्वर्ग में भी वह उससे जितना संभव हो सके उतनी दूर रहे।

बाइबल हमें एक अद्भुत शुभ समाचार देती है। इस प्रकार की सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा, और संबंधों में आई टूटन तथा उनसे पहुँचे हुए सभी घाव पूरी तरह चंगे कर दिए जाएँगे, जब हम सब पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिए जाएँगे। जिस प्रियजन ने आपको पीड़ा

पहुँचाई थी, वह पूरी तरह बदल दिया जाएगा, और आपको जो भी चोट पहुँची थी, उससे आप पूर्णतः स्वतंत्र कर दिए जाएँगे। यदि इस जीवन में आपने किसी को दुख पहुँचाया है, तो वहाँ पूर्ण क्षमा और पूर्ण पुनर्स्थापना होगी।

क्या आपको पिछले अध्याय में उल्लेख किया गया उचक्के पुत्र का दृष्टांत याद है? यीशु ने यह कहानी इस बात को समझाने के लिए सुनाई थी कि जब कोई खोया हुआ पुत्र या पुत्री परमेश्वर के पास लौट आता है, तो स्वर्ग में कैसी प्रतिक्रिया होती है। इस कहानी में उन्होंने एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात भी बताई, जो टूटे हुए संबंधों की पुनर्स्थापना से जुड़ी हुई है। जैसा कि आपको स्मरण होगा, उस युवक ने अपनी विरासत का हिस्सा लिया, अपने परिवार को छोड़ दिया, और उसके पिता द्वारा दी गई सारी संपत्ति शराब और वेश्याओं पर उड़ा दी। जब वह पुत्र अंततः अपने घर लौट आया, तो उसके पिता ने उसका स्वागत किया। यद्यपि उस बेटे ने अपने पिता के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया था, फिर भी उस घटना का कोई उल्लेख नहीं किया गया। पिता ने उससे यह नहीं कहा, "तूने मेरे साथ ऐसा कैसे कर दिया?" न ही उसे कोई डाँट-फटकार सुनाई। इसके बजाय, उसने अपने बेटे को गले लगाया, उसे चूमा और उसके लौट आने की खुशी में भोज का आयोजन किया। वह जानता था कि उसका पुत्र सच्चे मन से पश्चाताप कर चुका है, और सब कुछ पूरी तरह क्षमा कर दिया गया है तथा भुला दिया गया है।

"तब वह उठकर अपने पिता के पास चला गया। जब वह अभी बहुत दूर ही था, तभी उसके पिता ने उसे देख लिया। उसका हृदय करुणा से भर गया। वह दौड़कर अपने पुत्र के पास पहुँचा, उसे गले लगाया और बार-बार चूमा। पुत्र ने उससे कहा, 'पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके विरुद्ध पाप किया है। अब मैं आपका पुत्र कहलाने योग्य नहीं रहा।' परन्तु पिता ने अपने सेवकों से कहा, 'शीघ्र जाओ... उत्तम वस्त्र ले आओ... हम भोज करेंगे और आनंद मनाएँगे, क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था और अब फिर जीवित हो गया है; यह खो गया था और अब मिल गया है।' तब उत्सव आरम्भ हुआ।" (लूका अध्याय 15 आयत 20 से 24)।

मैं यह पूरी तरह नहीं समझा सकता कि हर प्रकार की संबंधगत कठिनाई किस प्रकार सुलझाई जाएगी। परन्तु परमेश्वर के वचन ने मुझे इस बात का दृढ़ विश्वास दिलाया है कि जो कुछ हमारे सामने है, वह हानि नहीं बल्कि लाभ है; वह पहले से कहीं बेहतर है, बदतर नहीं। इसलिए हम पूरे विश्वास के साथ निश्चिंत रह सकते हैं कि चाहे यह सब जिस प्रकार भी पूरा हो, परमेश्वर हर बात को पूर्णतः ठीक कर देंगे। स्वर्ग के किसी भी पहलू से हमें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

उन प्रियजनों का क्या होगा जो नरक में होंगे?

यदि कोई ऐसा व्यक्ति, जिससे आप स्वर्ग में मिलने की आशा रखते थे, वहाँ न पहुँचे तो क्या होगा? यदि आपका कोई मित्र या प्रियजन नरक में हो, तो आने वाले जीवन में आप कैसे आनंदित रह सकेंगे? इस प्रश्न का उत्तर अपने आप में एक पूरी पुस्तक का विषय हो सकता है। फिर भी, आशा है कि आगे दिए गए विचार इस विषय को समझने में आपके लिए सहायक सिद्ध होंगे।

सभी मनुष्य एक पवित्र परमेश्वर के सामने पाप के दोषी हैं। हमारे लिए इस सत्य को समझना कठिन हो सकता है, क्योंकि हममें से अधिकांश स्वयं को तथा अपने मित्रों और प्रियजनों को अच्छे लोग मानते हैं। परन्तु स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए अच्छाई का मापदंड हम नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर हैं, और हममें से कोई भी उस पूर्ण मापदंड पर खरा नहीं उतरता। "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों अध्याय 3 आयत 23)।

यीशु ने हमारे पापों का मूल्य चुकाने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दे दिए, ताकि हमारे पाप दूर किए जा सकें और हमें निर्दोष ठहराया जा सके। कलवरी पर उनके बलिदान ने हमें वह धार्मिकता प्रदान की, जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए आवश्यक है। यीशु ही स्वर्ग का द्वार हैं। हमारे उद्धारकर्ता ने कहा, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे द्वारा बिना कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" (यूहन्ना अध्याय 14 आयत 6)। स्वर्ग में प्रवेश इस बात पर आधारित नहीं है कि हम कितने अच्छे हैं, बल्कि इस पर आधारित है कि हम यीशु मसीह पर और उनके उद्धार के कार्य पर विश्वास करते हुए परमेश्वर के अनुग्रह को ग्रहण करते हैं।

परमेश्वर समस्त मानवजाति से प्रेम करते हैं और मसीह के द्वारा स्त्री और पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह सब कुछ करते हैं जो उनके प्रेम और न्याय के अनुरूप है। उनकी इच्छा नहीं है कि कोई भी उस उद्देश्य से वंचित रह जाए जिसके लिए उन्होंने हमें बनाया है—अर्थात् उनके पुत्र-पुत्री बनना और उनके अनंतकालीन घर में उनके साथ संबंध रखना। "प्रभु... यह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि यह कि सब मन फिराव तक पहुँचें।" (2 पतरस अध्याय 3 आयत 9)। परन्तु सर्वशक्तिमान परमेश्वर किसी को भी यीशु को स्वीकार करने या उनकी सेवा करने के लिए बाध्य नहीं करते। जो लोग इस जीवन में उनसे अलग रहना चुनते हैं, वे आने वाले जीवन में भी उसी अलगाव में बने रहेंगे। यही नरक है—परमेश्वर से पूर्ण और अनंतकालीन पृथक्करण, जिसके साथ उसके सभी परिणाम जुड़े हुए हैं। नरक में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं होगा जिसने वहाँ जाने का चुनाव स्वयं न किया हो। प्रभु किसी को नरक में नहीं भेजते; स्त्री और पुरुष स्वयं उस मार्ग को चुनते हैं (टिप्पणी 5 देखें)।

जब यूहन्ना को स्वर्ग में ले जाया गया और उसे परमेश्वर की उद्धार की योजना की अंतिम परिपूर्णता का दर्शन कराया गया, तब उसने उन सब लोगों के अंतिम न्याय को देखा जिन्होंने इतिहास भर प्रभु को अस्वीकार किया था। अभिलेखों की पुस्तकें खोली गईं, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि जिन लोगों ने स्वयं परमेश्वर के शत्रु बने रहने का चुनाव किया, उन्हें सदा के लिए नरक में ठहराना परमेश्वर का पूर्णतः धर्मी और न्यायपूर्ण निर्णय है (प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 आयत 11 से 15)। इन घटनाओं के संबंध में यूहन्ना ने यह भी देखा कि स्वर्ग के सभी निवासी—स्वर्गदूत और उद्धार पाए हुए स्त्री-पुरुष—परमेश्वर की धार्मिकता और न्याय के कारण उनकी स्तुति कर रहे थे (प्रकाशितवाक्य अध्याय 15 आयत 3; प्रकाशितवाक्य अध्याय 16 आयत 7; प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 आयत 2)। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हम भी परमेश्वर के धर्मी न्याय की प्रशंसा में सहभागी होंगे।

बाइबल कहती है कि स्वर्ग में शोक के आँसू नहीं होंगे (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 4)। इसका अर्थ है कि उस अदृश्य लोक में कोई भी नरक में रहने वालों के लिए शोक नहीं करेगा। यद्यपि इस समय इस बात की कल्पना करना हमारे लिए कठिन है, परन्तु जब हम स्वर्ग में होंगे, तब हमारी दृष्टि पूरी तरह बदल जाएगी। आने वाले जीवन में हम सब कुछ पहले से कहीं अधिक स्पष्ट और सत्य रूप में देखेंगे (1 कुरिन्थियों अध्याय 13 आयत 12)। तब हम समझेंगे कि प्रत्येक मनुष्य, यहाँ तक कि हमारे प्रियजनों को भी, प्रभु की ओर प्रत्युत्तर देने के लिए पर्याप्त प्रकाश और अवसर दिया गया था, परन्तु उन्होंने स्वयं उसे अस्वीकार कर दिया। तब हम यह भी जानेंगे कि जिन्होंने मसीह के क्रूस के द्वारा दिए गए परमेश्वर के उद्धार के वरदान को ठुकराया, उनका अनंतकाल तक परमेश्वर से अलग रहने के स्थान में ठहराया जाना पूर्णतः धर्मी और न्यायसंगत है।

परमेश्वर का उद्धार देने का उद्देश्य हमें बदलकर किसी और व्यक्ति में परिवर्तित कर देना या हमारे स्थान पर किसी और को स्थापित कर देना नहीं है। उनका उद्देश्य अपनी सामर्थ्य के द्वारा हमारा रूपांतरण करना और हमें उसी स्थिति में पुनः स्थापित करना है, जिसके लिए उन्होंने आरम्भ से हमें बनाया था—ऐसे पुत्र और पुत्रियाँ, जो पाप के हर चिन्ह और उसके प्रत्येक प्रभाव से पूर्णतः मुक्त हों, और जो उनसे तथा उनके लोगों से सिद्ध प्रेम करने में सक्षम हों। आने वाले जीवन में हम इस उद्देश्य की पूर्णता को प्राप्त करेंगे।

इस पुस्तक में आगे चलकर मैं और विस्तार से बताऊँगी कि हमारे भावी घर, अर्थात् स्वर्ग में, हमारी व्यक्तिगत पहचान और विशिष्टता किस प्रकार प्रकट होगी। परन्तु उससे पहले मुझे एक ऐसे विषय पर चर्चा करनी है, जिसे लेकर बहुत गलतफहमियाँ हैं और जिसके कारण बहुत-से लोग स्वर्ग में जाने के लिए उतने उत्साहित नहीं होते—स्वर्ग में विवाह।

6

स्वर्ग में विवाह।

मैंने एक से अधिक ऐसे वृद्ध दम्पतियों से बात की है जो सुखी वैवाहिक जीवन जी रहे हैं, और उन्होंने बड़े दुःख के साथ मुझसे कहा कि स्वर्ग में वे एक-दूसरे को नहीं जान पाएँगे और उनका साथ का जीवन समाप्त हो जाएगा। जब मैं इसका विरोध करती हूँ, तो वे उदासी से मुझे याद दिलाते हैं कि यीशु ने कहा था कि आने वाले जीवन में विवाह नहीं होगा। यह केवल एक सामान्य धारणा ही नहीं है जो गलत है, बल्कि यह स्वर्ग को लोगों की दृष्टि में कम आकर्षक भी बना देती है।

निस्संदेह, प्रभु ने यह कहा था, "क्योंकि पुनरुत्थान में न तो वे विवाह करेंगे और न उनका विवाह कराया जाएगा, परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के समान होंगे" (मत्ती अध्याय 22 आयत 30)। लेकिन जब हम उनके इन शब्दों को उनके मूल संदर्भ में ध्यान से देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे विवाहित लोगों से यह नहीं कह रहे थे कि उनका जीवनसाथी अब उनका जीवनसाथी नहीं रहेगा। आइए, इसे और ध्यान से समझें और इस विषय को स्पष्ट करें।

जाल से बच निकलना।

उस समय के धार्मिक अगुवे, अर्थात् फरीसी और सदूकी, न तो यीशु को स्वीकार करते थे और न ही उनकी शिक्षाओं को। वास्तव में, वे आपस में बैठकर योजनाएँ बनाया करते थे कि किस प्रकार उनके अनुयायियों के सामने यीशु को बदनाम किया जाए और उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाई जाए। ऐसा ही एक विचार-विमर्श उन्होंने यीशु से उस भेंट से कुछ समय पहले किया था, जिसके परिणामस्वरूप यीशु ने स्वर्ग में विवाह के विषय में वह कथन कहा, जिसे आज बहुत से लोग गलत समझते हैं।

सबसे पहले फरीसियों ने यीशु का सामना किया। उन्होंने उनसे पूछा कि क्या परमेश्वर के किसी अनुयायी के लिए रोमी सरकार को कर देना उचित है। यीशु उनके दुष्ट इरादों को

भली-भाँति जानते थे और उन्होंने ऐसा उत्तर दिया जिसने वहाँ उपस्थित लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया।

"'मुझे वह रोमी सिक्का दिखाओ जिससे कर दिया जाता है।' जब वे वह सिक्का उनके पास लाए, तो उन्होंने उनसे पूछा, 'इस पर किसका चित्र और नाम अंकित है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'कैसर का।' तब यीशु ने कहा, 'अच्छा, तो जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।' उनका यह उत्तर सुनकर वे चकित रह गए और वहाँ से चले गए" (मत्ती अध्याय 22 आयत 19 से 22)।

इसके बाद सदूकियों ने विवाह के विषय में एक प्रश्न पूछा। उनकी धार्मिक व्यवस्था के अनुसार, यदि किसी पुरुष की बिना सन्तान के मृत्यु हो जाती थी, तो उसके भाई का यह कर्तव्य होता था कि वह उस विधवा से विवाह करे, उसके द्वारा सन्तान उत्पन्न करे, और उस सन्तान को अपने मृत भाई का उत्तराधिकारी ठहराए। इन धार्मिक अगुवों ने यीशु के सामने ऐसा ही एक उदाहरण रखा, लेकिन उन्होंने कहा कि जिस पुरुष ने अपने भाई की विधवा से विवाह किया था, उसकी भी बिना सन्तान के मृत्यु हो गई। तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह किया, परन्तु वह भी मर गया। उन्होंने यह उदाहरण सात भाइयों तक बढ़ाया। उन सबने उस स्त्री से विवाह किया, परन्तु उनमें से कोई भी उत्तराधिकारी उत्पन्न किए बिना ही मर गया। अन्त में वह स्त्री भी मर गई। तब सदूकियों ने यीशु से पूछा, "तो पुनरुत्थान में वह किसकी पत्नी होगी?" (मत्ती अध्याय 22 आयत 28)।

मैंने उनके प्रश्न के अंतिम भाग पर विशेष ध्यान दिलाया है, क्योंकि यही यीशु के उत्तर को समझने की कुंजी है। पुनरुत्थान शब्द उस समय की एक सामान्य मान्यता को दर्शाता था कि एक दिन मरे हुए लोग अपनी कब्रों से जी उठे हुए शरीरों के साथ फिर से जीवित किए जाएँगे। परन्तु जिन लोगों ने यह प्रश्न पूछा था, वे न तो मृत्यु के बाद मनुष्य के अस्तित्व में बने रहने पर विश्वास करते थे और न ही आने वाले पुनरुत्थान पर। इसलिए उनका उद्देश्य आने वाले जीवन में विवाह के विषय में जानकारी प्राप्त करना नहीं था। इसके विपरीत, ये धार्मिक अगुवे अपने इस उदाहरण के द्वारा यीशु को उलझाना चाहते थे, ताकि उन्हें लोगों के सामने निरुत्तर सिद्ध करके उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचा सकें। प्रभु ने उनके वास्तविक इरादे को पहचान लिया और उसी के अनुसार उन्हें उत्तर दिया।

यीशु ने सबसे पहले उन लोगों को यह कहकर डाँटा कि वे अपने ही पवित्रशास्त्र को नहीं जानते। उन्होंने पुराने नियम के उस अंश का उल्लेख किया जहाँ प्रभु परमेश्वर स्वयं को इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर कहते हैं—ये तीनों सदूकियों के प्रसिद्ध और बहुत पहले मर चुके पूर्वज थे (निर्गमन अध्याय 3 आयत 6)। इसके बाद यीशु ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर कहा। इससे उन्होंने यह प्रकट

किया कि इब्राहीम, इसहाक और याकूब जीवित हैं और परमेश्वर अपनी सामर्थ्य से एक दिन उनके शरीरों को भी मिट्टी में से फिर जीवित करेंगे। अपने उत्तर के इसी भाग में यीशु ने वह कथन कहा है, जिसके कारण बहुत से लोग यह मान बैठे हैं कि स्वर्ग में पहुँचने पर पति-पत्नी का संबंध समाप्त हो जाएगा।

"तुम भूल में हो, क्योंकि तुम न तो पवित्रशास्त्र को जानते हो और न ही परमेश्वर की सामर्थ्य को। क्योंकि पुनरुत्थान में न तो लोग विवाह करेंगे और न उनका विवाह कराया जाएगा, परन्तु वे स्वर्ग में स्वर्गदूतों के समान होंगे। और मरे हुओं के पुनरुत्थान के विषय में, क्या तुमने यह नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने तुमसे कहा, 'मैं इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ'? वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है" (मत्ती अध्याय 22 आयत 29 से 32)।

हम यीशु के इन शब्दों के आधार पर अदृश्य लोक में पति-पत्नी के संबंधों के विषय में कोई अंतिम और निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाल सकते। पहली बात, उनका उद्देश्य स्वर्ग में विवाहित लोगों के संबंधों की प्रकृति को समझाना नहीं था। यीशु उस जाल से बच रहे थे जो सदूकियों ने उनके लिए बिछाया था, क्योंकि वे उनसे ऐसी बात का उत्तर माँग रहे थे जिस पर वे स्वयं विश्वास ही नहीं करते थे। दूसरी बात, विवाह, स्वर्गदूतों और पुनरुत्थान के विषय में प्रभु की इस टिप्पणी में ऐसी बहुत-सी बातें हैं जिन्हें इस समय कोई भी पूरी तरह नहीं समझता।

जो बातें हम नहीं जानते, उन्हें उन सच्चाइयों पर हावी नहीं होने देना चाहिए जिन्हें हम जानते हैं। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि मृत्यु के बाद भी मनुष्य की पहचान और उसके संबंध बने रहते हैं। यदि आपका जीवनसाथी पृथ्वी पर आपका सबसे निकट का साथी था, तो वह निकटता आगे भी बनी रहेगी। यह सत्य है कि परमेश्वर का वचन विस्तार से यह नहीं बताता कि जो लोग पृथ्वी पर पति-पत्नी थे, वे आने वाले जीवन में एक-दूसरे के साथ किस प्रकार संबंध रखेंगे। परन्तु इतना निश्चित जान लीजिए कि आने वाले जीवन में आप अपने प्रिय जीवनसाथी को नहीं खोएँगे। स्वर्ग हानि का नहीं, बल्कि प्राप्ति का स्थान है।

स्वर्ग में विवाह नहीं?

उन लोगों का क्या होगा जो विवाह करने की लालसा रखते हैं, परन्तु कभी विवाह नहीं कर पाते, या उन लोगों का क्या जो अपने वैवाहिक जीवन में सुखी नहीं हैं? क्या स्वर्ग में उनके लिए कोई आशा है? हाँ, अवश्य है! यूहन्ना ने लिखा कि जब वह प्रभु के निवासस्थान में गया, तब उसने वहाँ एक विवाह और विवाह-भोज देखा—मेम्ने (यीशु) का विवाह उसकी दुल्हन (उस पर विश्वास करने वालों) के साथ।

“तब मैंने एक बड़ी भीड़ के शब्द के समान, बहुत से जलों के शब्द के समान, और बड़े-बड़े गरजने के शब्द के समान यह कहते हुए सुना, ‘हालेलूयाह! क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर, जो सर्वशक्तिमान है, राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित हों, मगन हों और उसकी महिमा करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है और उसकी दुल्हन ने अपने आप को तैयार कर लिया है’” (प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 आयत 6 से 7)।

“फिर उसने मुझसे कहा, ‘लिख, धन्य हैं वे जो मेम्ने के विवाह-भोज में बुलाए गए हैं।’ और उसने मुझसे कहा, ‘ये परमेश्वर के सच्चे वचन हैं’” (प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 आयत 9)।

मैं समझती हूँ कि यूहन्ना के ये शब्द शायद आपको उतना उत्साहित न करें, क्योंकि जो उसने देखा, वह उस प्रकार का विवाह नहीं है जिसकी कल्पना हममें से अधिकांश लोग विवाह के बारे में सोचते समय करते हैं। विवाह की हमारी कल्पना मुख्य रूप से हॉलीवुड ने बनाई है—एक भव्य और सुंदर विवाह, जिसके बाद रोमांस से भरा कभी समाप्त न होने वाला मधुयामिनी का समय। लेकिन सबसे अच्छे विवाह भी वैसे नहीं होते जैसे हम फिल्मों में देखते हैं। वास्तविक विवाह दो ऐसे अपूर्ण लोगों का मिलन है जो एक साथ जीवन बिताने का प्रयास करते हैं, जबकि वे पाप से प्रभावित इस संसार की चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करते हुए आपसी सामंजस्य में रहने की कोशिश करते हैं। बहुत-से लोगों को विवाह के बाद वैसा जीवन नहीं मिलता जिसकी उन्होंने विवाह के समय कल्पना की थी।

यूहन्ना ने जिस विवाह समारोह और उत्सव को देखा तथा हमारे भविष्य के लिए उसके महत्व को समझने के लिए, हमें परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना को स्मरण रखना होगा। कृपया मेरे साथ बने रहिए, क्योंकि अब मैं इसे समझाने जा रही हूँ।

मसीह के साथ एकता।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मानव इतिहास के प्रारम्भिक दिनों में ही विवाह की व्यवस्था स्थापित की, जब उन्होंने आदम और हव्वा को एक साथ मिलाया: “और वे दोनों एक तन होंगे” (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 24)। इस जीवन में विवाह के कई व्यावहारिक उद्देश्य हैं। यह स्थायी प्रतिबद्धता के साथ संगति प्रदान करता है, साथ ही परिवार स्थापित करने तथा सन्तान उत्पन्न करने और उनका पालन-पोषण करने के लिए एक स्थिर आधार भी देता है। विवाह में एक पुरुष और एक स्त्री के एक होने का यह चित्रण मसीह के साथ हमारे संबंध के एक महत्वपूर्ण पक्ष को भी दर्शाता है—हम उसके साथ एक हैं। प्रेरित पौलुस ने लिखा:

“जैसा पवित्रशास्त्र कहता है, ‘इस कारण मनुष्य अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।’ यह एक बड़ा भेद है, परन्तु मैं मसीह और

कलीसिया [अर्थात् यीशु पर विश्वास करने वालों] के विषय में कह रहा हूँ" (इफिसियों अध्याय 5 आयत 31 से 32)।

जब कोई व्यक्ति यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करता है, तब उसके अस्तित्व के सबसे भीतरी भाग में वह अनन्त जीवन का सहभागी बन जाता है, अर्थात् उस जीवन का जो स्वयं परमेश्वर में है। जैसा कि मैंने पिछले अध्याय में बताया था, जीवन का यह आन्तरिक संचार परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया का आरम्भ है, जो अन्ततः हमें पाप, भ्रष्टता और मृत्यु के हर चिन्ह से पूरी तरह मुक्त कर देगी। बाइबल इस जीवित और गहरे संबंध को मसीह के साथ एकता कहती है। इस संसार में चलते हुए यही एकता हमारे लिए सामर्थ्य, आनन्द, शान्ति और शक्ति का स्रोत है। परन्तु आने वाले जीवन में हम प्रभु के साथ अपनी इस एकता को पूरी तरह जानेंगे और उसकी सभी आशीषों का पूर्ण अनुभव करेंगे।

पूर्ण तृप्ति।

हर मनुष्य प्रेम किया जाना और समझा जाना चाहता है। हम सभी घनिष्ठता की लालसा रखते हैं—केवल शारीरिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और आत्मिक भी। हम गहरे संबंध और स्वीकार किए जाने की इच्छा रखते हैं, और प्रायः आशा करते हैं कि विवाह के माध्यम से ये आवश्यकताएँ पूरी होंगी। जब लोग अपने जीवनसाथी की खोज की बात करते हैं, तो उनका अभिप्राय अक्सर यह होता है, "मैं ऐसे व्यक्ति को खोज रहा हूँ जो हर प्रकार से मुझे पूर्ण कर दे।" लेकिन कोई भी मनुष्य हमारी हर आवश्यकता को पूरी नहीं कर सकता, क्योंकि सम्पूर्ण तृप्ति केवल परमेश्वर के साथ एकता में ही प्राप्त होती है। केवल वही हमें पूर्ण कर सकता है। मसीह के साथ अपनी एकता तथा उसके प्रेम और हमारी देखभाल के अनुभवात्मक ज्ञान का आनन्द पृथ्वी के सबसे सफल वैवाहिक संबंधों से भी कहीं बढ़कर होगा। स्वर्ग में अन्ततः हमें वही मिलेगा जिसकी हमारे हृदय को लालसा है, और हमारी सभी गहरी अभिलाषाएँ पूर्णतः सन्तुष्ट हो जाएँगी।

मैं समझती हूँ कि विवाह के विषय में यीशु के साथ संबंध और इस जीवन के बाद के जीवन के संदर्भ में बात करना सहज नहीं है। परन्तु यदि हम विवाह को पूर्ण प्रेम, सम्पूर्ण स्वीकार्यता और पूर्ण तृप्ति के साथ एक अनन्त एकता के रूप में समझें, जो एक विशेष रूप से तैयार किए गए घर में सदा के लिए बनी रहती है, तो स्वर्ग में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति विवाहित होगा, क्योंकि हम सब प्रभु के साथ एक हैं। यह सत्य है कि इस समय इन बातों का बहुत-सा भाग हमारी समझ से परे है। फिर भी, मुझे आशा है कि अब आप यह समझने लगे होंगे कि जो हमारे आगे है, वह हानि नहीं, बल्कि प्राप्ति है—यहाँ तक कि विवाह के विषय में भी।

आगे क्या है?

जिन लोगों को इस जीवन में एक सुखी वैवाहिक जीवन का आशीष मिला है, स्वर्ग में मसीह के साथ अपनी एकता का पूर्ण बोध होने पर उनका संबंध और भी अधिक समृद्ध और गहरा हो जाएगा। क्या आप दोनों के अलग-अलग घर होंगे, या आप साथ रहेंगे? यदि पृथ्वी पर आपके दो सुखी विवाह रहे हों, तो आप किसके साथ रहेंगे? यदि आपका विवाह सुखद नहीं है और आप अपने जीवनसाथी से अलग होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो क्या होगा? यदि आपने व्यभिचार या अत्याचार के कारण अपने जीवनसाथी को तलाक दे दिया था और वह भी अन्ततः स्वर्ग में पहुँच जाए, तो क्या आपको फिर उसके साथ रहना होगा? यद्यपि बाइबल इन प्रश्नों का प्रत्यक्ष उत्तर नहीं देती, फिर भी वह हमें इतनी जानकारी अवश्य देती है कि हम निश्चित जान सकें कि आने वाला जीवन हमारी अब तक की हर अनुभूति से कहीं अधिक श्रेष्ठ होगा। वहाँ सब कुछ पूर्णतः सही होगा, और हर बात इससे कहीं बेहतर होगी।

हमारे भविष्य के जीवन की समझ हमें इस वर्तमान जीवन को अधिक बुद्धिमानी और प्रभावशाली ढंग से जीने में सहायता देती है। कितने लोगों ने ऐसे व्यक्ति से विवाह कर लिया जिससे उन्हें विवाह नहीं करना चाहिए था, केवल इसलिए कि उन्होंने इस झूठ पर विश्वास कर लिया, "यदि मैंने अभी यह नहीं किया, तो मैं इस अवसर से वंचित रह जाऊँगा।" कितने अविवाहित लोग परमेश्वर से इसलिए नाराज़ हैं कि उसने उन्हें जीवनसाथी नहीं दिया? यदि वे यह सत्य जान लें कि यह जीवन तो केवल आने वाले जीवन की एक छाया है, तब क्या होगा? यदि इस जीवन में आपका कभी विवाह न हो, आपका विवाह दुखद हो, या आपका तलाक हो जाए, तो भी आप इस सच्चाई में सांत्वना पा सकते हैं कि स्वर्ग में यीशु के द्वारा आपको वह प्रेम और पूर्ण तृप्ति मिलेगी जिसकी आपके हृदय ने सदा लालसा की है। और यदि इस जीवन में आपके विवाह ने आपको आनन्द दिया है, तो यह जान लीजिए कि अपने जीवनसाथी के साथ आपके सबसे उत्तम दिन अभी आने बाकी हैं।

योजना की पूर्णता।

आइए, फिर से यूहन्ना के उस कथन पर लौटें जिसमें उसने कहा कि उसने मेम्ने के विवाह-भोज को देखा। विवाह-भोज का उसका यह उल्लेख उन लोगों के मन में एक अत्यन्त सजीव चित्र प्रस्तुत कर देता, जिन्होंने सबसे पहले स्वर्ग की उसकी इस यात्रा का वर्णन पढ़ा था। इसका कारण यह है कि यद्यपि बाइबल एक कालातीत पुस्तक है, जो हर पीढ़ी से बातें करती है, फिर भी उसके लेखकों ने मूल रूप से अपनी बातों को इस प्रकार लिखा कि उनके समय के स्त्री-पुरुष उन बातों को सहज रूप से समझ सकें।

यूहन्ना के समय और उस संस्कृति में विवाह की प्रक्रिया तीन चरणों में पूरी होती थी। विवाह की शुरुआत तब होती थी जब दो पिता एक वैधानिक अनुबंध करते थे, जिसके द्वारा वे अपने छोटे पुत्र और पुत्री को एक-दूसरे के लिए वचनबद्ध कर देते थे। जब वे दोनों विवाह योग्य आयु तक पहुँच जाते और उस अनुबंध को पूरा करने का समय आता, तब दूल्हा अपने पिता के घर से निकलकर अपनी दुल्हन को लेने जाता। वह उसे अपने घर ले आता, जहाँ उनका विवाह सम्पन्न होता था। इस समारोह का समापन एक भव्य उत्सव से होता था—एक विवाह-भोज, जिसमें दूल्हा अपनी दुल्हन, अपने परिवार और अपने मित्रों के साथ आनन्द मनाता था। यूहन्ना के प्रथम पाठक भली-भाँति जानते थे कि यह एक हर्षोल्लास का अवसर होता था, जो बहुत वर्षों पहले किए गए वचन की पूर्णता का प्रतीक था।

स्वर्ग में रहते हुए यूहन्ना ने उद्धार की योजना की पूर्णता को देखा। उसने परमेश्वर और उसके परिवार को अन्ततः एक साथ, उसके घर में आनन्द मनाते हुए देखा। जिस प्रकार यूहन्ना के प्रारम्भिक पाठकों के लिए विवाह-भोज एक परिचित और हर्ष से भरा उत्सव था, उसी प्रकार परमेश्वर के उस वचन की पूर्णता का उत्सव भी, जिसमें उसने हमें सदा के लिए अपने साथ रहने के लिए अपने पास ले आने का प्रतिज्ञा किया है, ऐसा आनन्दमय और महिमामय उत्सव होगा जैसा हमने पहले कभी अनुभव नहीं किया।

स्वर्ग के विषय में बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिन्हें हम नहीं जानते और इस समय जान भी नहीं सकते। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के घर में उसकी उपस्थिति में होना कितना अद्भुत होगा, इसका वर्णन कोई भी शब्द पूरी तरह नहीं कर सकते। उसकी सम्पूर्ण महिमा, प्रताप और पवित्रता में उसे आमने-सामने देखना कैसा होगा? पूर्णता और सम्पूर्ण तृप्ति का अनुभव करना, साथ ही परम आनन्द और शान्ति को प्राप्त करना कैसा लगेगा? पवित्रशास्त्र इन बातों की कुछ झलक अवश्य देता है।

“तू मुझे जीवन का मार्ग दिखाएगा। तेरी उपस्थिति में भरपूर आनन्द है, और तेरे दाहिने हाथ में सर्वदा के सुख-भोग हैं” (भजन संहिता अध्याय 16 आयत 11)।

“परन्तु मेरे लिए तो मेरा सन्तोष धन-सम्पत्ति में नहीं, बल्कि तुझे देखने और यह जानने में है कि हमारे बीच सब कुछ ठीक है। और जब मैं स्वर्ग में जागूँगा, तब मैं पूर्णतः तृप्त हो जाऊँगा, क्योंकि मैं तुझे आमने-सामने देखूँगा” (भजन संहिता अध्याय 17 आयत 15)।

आइए, हम अपने भविष्य के घर के विषय में जिन बातों को अभी तक नहीं समझते, उन्हें परमेश्वर के वचन द्वारा स्पष्ट रूप से प्रकट की गई सच्चाइयों को कमज़ोर न करने दें। हो सकता है कि हमारे पास हर बात का विस्तृत विवरण न हो, परन्तु हमारे पास इतनी सामान्य जानकारी अवश्य है कि उससे हमें उस अद्भुत स्थान की एक स्पष्ट झलक मिलती है।

• हम जानते हैं कि स्वर्ग अनेक बातों में पृथ्वी के समान है। वह कोई धुँधला, काल्पनिक या इस संसार से बिल्कुल अलग स्थान नहीं है। वह एक वास्तविक स्थान है, जहाँ वास्तविक लोग रहते हैं और वास्तविक कार्य करते हैं।

• हम जानते हैं कि वहाँ लोग एक-दूसरे के साथ प्रेमपूर्ण संबंधों में रहते हैं। वे उन लोगों को याद रखते हैं जिन्हें वे पृथ्वी पर छोड़ आए हैं और उनसे फिर मिलने की आशा रखते हैं। वे अर्थपूर्ण और संतोष देने वाले कार्यों तथा गतिविधियों में लगे रहते हैं। वे प्रभु के साथ संगति करते हुए जीवन का भरपूर आनन्द लेते हैं।

• हम जानते हैं कि सबसे उत्तम अभी आना बाकी है। हम किसी बात से वंचित नहीं होंगे। इसके विपरीत, हमें कहीं अधिक प्राप्त होगा।

भाग दो:



नई पृथ्वी।

7



पृथ्वी परमेश्वर की योजना का एक भाग है।

सच-सच बताइए। अब तक जिन बातों पर हमने विचार किया है, वे जितनी भी अद्भुत क्यों न लगें, फिर भी हममें से अधिकांश लोग यही कहेंगे कि हमें पृथ्वी की याद आएगी—जीवन की कठिनाइयों और दुखों की नहीं, बल्कि इस संसार की सुंदरता और उसके आश्चर्यजनक वैभव की। जिस घर को हमने अब तक जाना है, उसे छोड़ने की हमारी कोई इच्छा नहीं है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि बाइबल हमें एक अद्भुत समाचार देती है: यह पृथ्वी भी परमेश्वर की अनन्त योजना का एक भाग है।

मृतकों का पुनरुत्थान।

हमारे भविष्य के विषय में जो बहुत-सी उलझनें हैं, उनका कारण हमारे भौतिक शरीरों की अन्तिम नियति के संबंध में फैली हुई गलत धारणाएँ हैं। जैसा कि मैंने अध्याय 3 में बताया था, जब मनुष्य मरते हैं, तो वे अपने शरीर से अलग होकर एक दूसरे आयाम में प्रवेश कर जाते हैं। परन्तु मनुष्य के लिए परमेश्वर का अन्तिम उद्देश्य यही नहीं है। उनका कभी भी यह इरादा नहीं था कि हम बिना शरीर वाली आत्माओं के रूप में किसी अभौतिक आयाम में जीवन बिताएँ। प्रभु ने हमें भौतिक संसार में जीवन जीने के लिए भौतिक शरीरों के साथ रचा है। जब परमेश्वर ने आदम की सृष्टि की, तब उन्होंने पहले उसके शरीर को बनाया और मनुष्यों को ऐसी इन्द्रियाँ प्रदान कीं, जिनके द्वारा वे पृथ्वी के दृश्यों, ध्वनियों, सुगंधों, स्वादों, स्पर्शों और विभिन्न अनुभूतियों का आनन्द ले सकें (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 7)। हमारे शरीर न तो महत्वहीन हैं और न ही त्याग देने योग्य।

शरीर से अलग होना केवल एक अस्थायी अवस्था है, जिसे मृतकों के पुनरुत्थान के द्वारा समाप्त कर दिया जाएगा। मृतकों का पुनरुत्थान कोई विचित्र या विज्ञान-कथा जैसी घटना नहीं है। यह उस भीतरी मनुष्य और बाहरी मनुष्य का पुनर्मिलन है, जो मृत्यु के समय एक-दूसरे से अलग हो गए थे। अपने उद्धार की योजना के एक भाग के रूप में, सर्वशक्तिमान

परमेश्वर हमारे शरीरों को कब्र से उठाएँगे, अर्थात् उन्हें उनकी नींद से जगाएँगे, और फिर से जीवन प्रदान करेंगे। बाइबल शरीर की मृत्यु को "नींद" कहती है, क्योंकि यह एक अस्थायी अवस्था है, जिसे पुनरुत्थान के द्वारा समाप्त कर दिया जाएगा (यशायाह अध्याय 26 आयत 19; 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 4 आयत 13 से 14)।

जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे, तब वे सभी लोग जो अदृश्य स्वर्ग में रहते हैं, उनके साथ आएँगे ताकि वे अपने-अपने शरीरों के साथ फिर से एक हो जाएँ। प्रभु हमारे मूल डीएनए को पुनः प्राप्त करेंगे और हमारे शरीर के प्रत्येक अणु को पुनर्स्थापित करके उसमें फिर से जीवन का संचार करेंगे। हमारे शरीर महिमामय होंगे, अर्थात् अनन्त जीवन के द्वारा रूपान्तरित होकर अविनाशी और अमर बना दिए जाएँगे। इसका अर्थ है कि वे सदा-सर्वदा के लिए हर प्रकार की बीमारी, दुर्बलता और बुढ़ापे के प्रत्येक चिन्ह से पूरी तरह मुक्त होंगे। वे फिर कभी किसी भी प्रकार के रोग, विकलांगता या मृत्यु के अधीन नहीं होंगे।

“क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी, और मरे हुए अविनाशी दशा में जिलाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे। क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान [शरीर] अविनाशिता को पहन ले, और यह मरणहार [शरीर] अमरता को पहन ले। और जब यह नाशमान [शरीर] अविनाशिता को पहन लेगा, और यह मरणहार [शरीर] अमरता को पहन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा होगा, ‘मृत्यु जय में निगल ली गई’” (1 कुरिन्थियों अध्याय 15 आयत 52 से 54)।

कुछ लोग कहते हैं कि हमें नए शरीर मिलेंगे, अर्थात् हमारे वर्तमान शरीर से बिल्कुल भिन्न शरीर। यह सही नहीं है। आपका पुनरुत्थान का शरीर वही होगा जो मृत्यु को प्राप्त हुआ था, परन्तु उसे फिर से जीवित कर दिया जाएगा। आने वाले जीवन में यही निरंतरता का एक भाग है। आप स्वर्ग में जाते हैं, और पुनरुत्थान के द्वारा अपने उसी मूल शरीर के साथ फिर से एक हो जाते हैं। सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ परमेश्वर हमारे शरीरों को पुनः जीवित करने और बहाल करने के लिए जो कुछ आवश्यक है, उसे पुनः प्राप्त करने में पूर्णतः समर्थ हैं—चाहे शरीर जंगली पशुओं द्वारा फाड़ दिया गया हो, समुद्र में खो गया हो, आग में जल गया हो, या मिट्टी में मिलकर धूल बन गया हो। प्रेरित पौलुस ने लिखा कि जब यीशु लौटेंगे, तब “वह हमारे इन निर्बल और नश्वर शरीरों का रूप बदलकर उन्हें अपने महिमामय शरीर के समान बना देगा। वह यह सब उसी महान सामर्थ्य के द्वारा करेगा, जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने अधीन कर लेता है” (फिलिप्पियों अध्याय 3 आयत 21)।

हमारे पुनर्जीवित शरीर मसीह के पुनरुत्थान के बाद के शरीर के समान होंगे। जिस शरीर ने क्रूस पर मृत्यु सही थी, उसी को फिर से जीवित किया गया, और अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु को देखा भी जा सकता था और छुआ भी जा सकता था। वह कोई भूत या प्रेत के समान नहीं थे। यीशु केवल अपने जैसे दिखाई ही नहीं देते थे, बल्कि वे खड़े हो सकते थे, चल

सकते थे और बात भी कर सकते थे। उन्होंने अपने चेलों के लिए भोजन भी तैयार किया और कई अवसरों पर उनके साथ खाया और पिया भी (लूका अध्याय 24 आयत 39 से 43; प्रेरितों के काम अध्याय 10 आयत 41; यूहन्ना अध्याय 21 आयत 9 से 13)।

बाइबल हमारे महिमामय शरीर की विशेषताओं के विषय में प्रत्येक विवरण नहीं बताती। उदाहरण के लिए, यह नहीं बताती कि उस समय हमारी आयु कितनी होगी। मैंने कुछ आदरणीय बाइबल शिक्षकों को यह अनुमान लगाते हुए सुना है कि हमारी आयु तैंतीस वर्ष होगी, अर्थात् वही आयु जो यीशु की थी जब उनका शरीर कब्र से जीवित किया गया। सम्भव है कि ऐसा ही हो। परन्तु चाहे जैसा भी हो, मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना के आधार पर हम उचित रूप से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हम अपने जीवन की पूर्ण सामर्थ्य और श्रेष्ठ अवस्था में होंगे। और पवित्रशास्त्र हमें इतना अवश्य बताता है कि हम पूरे विश्वास के साथ यह जान सकते हैं कि न केवल हमारा मूल शरीर नया बना दिया जाएगा, बल्कि वह भौतिक संसार में जीवन बिताने के लिए पूरी तरह उपयुक्त भी होगा। मृतकों में से पुनरुत्थान का अर्थ है हमारे भौतिक शरीर की पुनर्स्थापना, ताकि हम फिर से पृथ्वी पर जीवन व्यतीत कर सकें! यही हमारा भविष्य है।

परमेश्वर के परिवार का घर।

आने वाले समय के विषय में फैली हुई बहुत-सी गलत धारणाएँ इस कारण उत्पन्न होती हैं कि लोग मनुष्यजाति के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर के समग्र उद्देश्य को नहीं समझते। हमें उनकी योजना को सदैव स्मरण रखना चाहिए। प्रभु पुत्रों और पुत्रियों को चाहते हैं, और बाइबल प्रकट करती है कि उन्होंने पृथ्वी को अपने परिवार का घर बनने के लिए रचा है।

“क्योंकि यहोवा, जिसने आकाश की सृष्टि की, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा, उसे बनाया और स्थिर किया। उसने उसे सुनसान और व्यर्थ रहने के लिए नहीं, बल्कि बसाए जाने के लिए बनाया” (यशायाह अध्याय 45 आयत 18)।

दुःख की बात है कि आदम ने पाप के द्वारा परमेश्वर से स्वतंत्रता का मार्ग चुन लिया और अपने पुत्र होने के अधिकार को ठुकरा दिया। परिवार के प्रधान और पृथ्वी के प्रथम भण्डारी होने के कारण, उसके कार्यों का गहरा प्रभाव न केवल समस्त मानवजाति पर, बल्कि स्वयं पृथ्वी पर भी पड़ा। केवल पुरुष और स्त्री ही पाप और मृत्यु के अधीन नहीं हुए, बल्कि समस्त भौतिक सृष्टि भी मृत्यु के शाप से प्रभावित हो गई। पेड़-पौधे और पशु मरने लगे। वे प्राकृतिक नियम और प्रक्रियाएँ, जिन्हें परमेश्वर ने आरम्भ में स्थापित किया था, विकृत हो गईं। परिणामस्वरूप भूमि का नष्ट होना, सूखा, अकाल, विनाशकारी आँधियाँ और भूकम्प जैसी विपत्तियाँ उत्पन्न हुईं।

“जब आदम ने पाप किया, तब पाप पूरी मानवजाति में प्रवेश कर गया। उसके पाप के कारण मृत्यु सारे संसार में फैल गई, इसलिए सब कुछ बूढ़ा होने और मरने लगा” (रोमियों अध्याय 5 आयत 12)।

मनुष्य के पाप के प्रभाव के कारण पृथ्वी अब प्रभु के परिवार के रहने योग्य घर नहीं रही। परन्तु जब यीशु मसीह लौटेंगे और मृतकों का पुनरुत्थान होगा, तब प्रभु उस सबको फिर से प्राप्त करेंगे जिसे उन्होंने खो दिया था, और परिवार के इस घर को पहुँचे हुए समस्त नुकसान को पूरी तरह दूर कर देंगे।

“समस्त सृष्टि बड़ी उत्कंठा से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बाट जोह रही है [मृतकों के पुनरुत्थान के समय]... क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक एक साथ कराहती और प्रसव-पीड़ा के समान पीड़ा सहती आ रही है। और केवल सृष्टि ही नहीं, बल्कि हम भी, जिन्होंने आत्मा का प्रथम फल [नया जन्म] पाया है, अपने भीतर कराहते हुए उस समय की उत्कंठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं... अर्थात् अपने शरीरों के छुटकारे की [मृतकों के पुनरुत्थान के द्वारा]” (रोमियों अध्याय 8 आयत 19; रोमियों अध्याय 8 आयत 22 से 23)।

“क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उसके कारण जिसने उसे उसके अधीन कर दिया [आदम], व्यर्थता [भ्रष्टता और मृत्यु] के अधीन की गई, इस आशा के साथ कि स्वयं सृष्टि भी विनाश की दासता से छुड़ाई जाएगी और परमेश्वर की सन्तानों की महिमामय स्वतंत्रता में सहभागी होगी” (रोमियों अध्याय 8 आयत 20 से 21)।

“छुड़ाई जाएगी” जिस मूल शब्द से लिया गया है, उसका अर्थ है “पाप की शक्ति और उसके दण्ड से मुक्त करना, जो छुटकारे का परिणाम है।” परमेश्वर की प्रकट होती हुई उद्धार की योजना के एक भाग के रूप में, जिस प्रकार हमारे भौतिक शरीर क्षय और मृत्यु से मुक्त किए जाएँगे, उसी प्रकार समस्त भौतिक सृष्टि भी क्षय और नश्वरता से मुक्त कर दी जाएगी।

जब आदम ने पाप किया था, तब जो भ्रष्टता का शाप सृष्टि में प्रवेश कर गया था, प्रभु परमेश्वर उसे पूरी तरह उलट देंगे। वे क्षय के प्रत्येक चिन्ह को मिटा देंगे और इस पृथ्वी को एक बार फिर अपने परिवार के रहने योग्य घर बना देंगे। तब जीविका कमाने के लिए भूमि पर कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। न काँटे होंगे, न ऊँटकटारे। न कोई भ्रष्टता होगी। न मृत्यु रहेगी।

क्या पृथ्वी आग से नष्ट कर दी जाएगी?

बहुत से लोग गलत रूप से यह मानते हैं कि एक दिन पृथ्वी आग से नष्ट कर दी जाएगी। यह धारणा प्रेरित पतरस द्वारा लिखे गए एक वचन की गलत व्याख्या से उत्पन्न हुई है।

"परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा। उस दिन आकाश बड़े शब्द के साथ जाता रहेगा, तत्त्व अत्यन्त तप्त होकर पिघल जाएँगे, और पृथ्वी तथा उस पर किए गए सब काम जलकर प्रकट हो जाएँगे... जब ये सब वस्तुएँ इस प्रकार नष्ट हो जाएँगी... और आकाश आग लगने से नष्ट हो जाएगा तथा तत्त्व अत्यन्त तप्त होकर पिघल जाएँगे" (2 पतरस अध्याय 3 आयत 10 से 12)।

पतरस यहाँ पृथ्वी के विनाश का चित्र प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं। वे उसके रूपान्तरण का वर्णन कर रहे हैं। प्रेरित ने प्रकट किया कि जब प्रभु लौटेंगे, तब वे परमाणु और अणु, जिनसे यह समस्त भौतिक संसार बना है, भ्रष्टता और मृत्यु की दासता से मुक्त कर दिए जाएँगे। जब हम कुछ महत्वपूर्ण यूनानी शब्दों के मूल अर्थ को समझते हैं, तब पतरस का आशय स्पष्ट हो जाता है।

• "जाता रहेगा" के लिए प्रयुक्त शब्द दो यूनानी शब्दों से मिलकर बना है, जिनका अर्थ है "पास से होकर निकल जाना" या "एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करना।" इसका प्रयोग नए नियम में अनेक बार हुआ है, और इसका अर्थ कभी भी "अस्तित्व समाप्त हो जाना" नहीं होता। इसका भाव यह है कि कोई वस्तु एक स्थिति या अवस्था से दूसरी स्थिति या अवस्था में चली जाती है।

• "तत्त्व" के लिए प्रयुक्त शब्द एक यूनानी शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है "भौतिक संसार के सबसे मूलभूत घटक," अर्थात् वे सूक्ष्म कण जिनसे समस्त भौतिक सृष्टि का निर्माण हुआ है।

• "पिघल जाएँगे" (आयत 10) और "नष्ट हो जाएँगे" (आयत 11 और 12) के लिए मूल भाषा में एक ही यूनानी शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है "बंधन खोल देना" या "मुक्त कर देना।" यीशु ने भी इसी शब्द का प्रयोग तब किया था जब उन्होंने लाज़र को मृतकों में से जीवित किया। जब उनका मित्र कफ़न में लिपटा हुआ कब्र से बाहर आया, तब यीशु ने आज्ञा दी, "उसे खोल दो और जाने दो" (यूहन्ना अध्याय 11 आयत 44)।

• "जलकर भस्म हो जाएँगे" यह वाक्यांश नए नियम की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपियों में नहीं पाया जाता। इसके स्थान पर उन आरम्भिक प्रतियों में एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ है "प्रकट होना" या "प्रकाश में लाया जाना।"

अर्थ यह नहीं है कि पृथ्वी का विनाश होगा, बल्कि यह है कि उसमें विद्यमान भ्रष्टता को प्रकट किया जाएगा ताकि उसे पूरी तरह दूर कर दिया जाए। "और पृथ्वी तथा उस पर की सब वस्तुएँ प्रकट कर दी जाएँगी" (2 पतरस अध्याय 3 आयत 10)।

• "पिघल जाएँगे" (आयत 12) के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द का भावार्थ है "जमे हुए प्रभाव का समाप्त हो जाना।" जैसे वसन्त के आगमन पर शीत ऋतु का प्रभाव समाप्त हो जाता है और जमी हुई वस्तुएँ फिर से अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ जाती हैं, उसी प्रकार एक दिन भ्रष्टता और मृत्यु भी इस संसार पर से अपना अधिकार छोड़ देंगी।

जब पतरस ने पृथ्वी के भविष्य के विषय में लिखा, तब उनके मन में जो चित्र था, वह विनाश का नहीं, बल्कि रूपान्तरण का था। जिस संदर्भ में उन्होंने यह बात कही, वह उनके आशय को पूरी तरह स्पष्ट कर देता है। पृथ्वी के भविष्य के विषय में यह घोषणा लिखने से ठीक पहले प्रेरित ने नूह के जलप्रलय का उल्लेख किया। पतरस ने लिखा, "उसी जल के द्वारा उस समय का संसार जलप्रलय में डूबकर नष्ट हो गया" (2 पतरस अध्याय 3 आयत 6)। परन्तु उस सारे संसार में आए जलप्रलय ने पृथ्वी का विनाश नहीं किया था। इसके विपरीत, उस जल ने पृथ्वी को बुराई से शुद्ध किया। और यद्यपि उस प्रबल जलप्रवाह ने पृथ्वी का स्वरूप बदल दिया था, फिर भी जलप्रलय से पहले की पृथ्वी और उसके बाद की पृथ्वी के बीच निरन्तरता बनी रही।

उस महान जलप्रलय ने पृथ्वी की सतह को तो शुद्ध किया, परन्तु मूल समस्या—मृत्यु का वह अभिशाप, जिसने आदम के पाप करने पर सम्पूर्ण सृष्टि को अपने वश में कर लिया था—उसका समाधान नहीं हुआ। वह कार्य अभी भविष्य में होना है, और शुद्ध करने की वह प्रक्रिया आग के द्वारा पूरी की जाएगी।

यह अन्तिम शुद्ध करने वाली अग्नि प्राकृतिक आग नहीं होगी। बाइबल में आग का प्रयोग अनेक स्थानों पर प्रतीकात्मक रूप से सर्वशक्तिमान परमेश्वर के गुणों और उनके कार्यों का वर्णन करने के लिए किया गया है, जिसमें उनका बोला हुआ वचन भी सम्मिलित है।

"इसलिए सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यों कहता है [भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह से]: 'क्योंकि ये लोग [पापपूर्ण] बातें बोलते हैं, इसलिए मैं अपने वचनों को तेरे मुँह में आग के समान कर दूँगा, और यह लोग लकड़ी के समान होंगे, और वह आग उन्हें भस्म कर देगी'" (यिर्मयाह अध्याय 5 आयत 14)।

"यहोवा कहता है, 'क्या मेरा वचन आग के समान नहीं है? और क्या वह उस हथौड़े के समान नहीं है जो चट्टान को चूर-चूर कर देता है?'" (यिर्मयाह अध्याय 23 आयत 29)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने वचन की अग्नि के द्वारा उन भौतिक तत्त्वों को शुद्ध करेंगे जिनसे यह समस्त दृश्य संसार बना है। जैसे आदि में परमेश्वर ने वचन कहा और आकाश तथा पृथ्वी की सृष्टि हुई, वैसे ही वे फिर एक बार वचन बोलेंगे, और भौतिक सृष्टि के मूलभूत कण वास्तव में अपनी वर्तमान भ्रष्ट अवस्था से मुक्त कर दिए जाएँगे। इसके बाद उन्हें फिर से एक नए आकाश और नई पृथ्वी के रूप में व्यवस्थित किया जाएगा। इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि क्षय और मृत्यु की दासता से मुक्त कर दी जाएगी।

क्या आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे?

आपमें से कुछ लोग यह सोच रहे होंगे, "क्या यीशु ने यह नहीं कहा था कि आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे?" निस्सन्देह, उन्होंने ऐसा कहा था, परन्तु हमें उनके इन वचनों को उनके सन्दर्भ में समझना चाहिए। यीशु ने यह बात अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से कुछ दिन पहले कही थी। उनके ये शब्द उस उत्तर का एक भाग थे जो उन्होंने अपने अनुयायियों को तब दिया, जब उन्होंने उनसे पूछा कि कौन-से चिन्ह यह प्रकट करेंगे कि उनका इस संसार में लौटना निकट है। प्रभु ने अनेक घटनाओं का उल्लेख किया और कहा कि जो पीढ़ी इन चिन्हों का आरम्भ देखेगी, वही उन सबकी पूर्णता भी देखेगी।

"मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी टलेगी नहीं। आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी नहीं टलेंगी" (मत्ती अध्याय 24 आयत 34 से 35)।

यीशु इन लोगों को यह नहीं बता रहे थे कि एक दिन संसार का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। वे उन्हें अपने वचन की अटल विश्वसनीयता का विश्वास दिला रहे थे। उन्होंने अभी-अभी उनके प्रश्न के उत्तर में भविष्य की अनेक घटनाओं की घोषणा की थी और अन्त में यह कहकर अपनी बात पूरी की कि उनका वचन इतना अटल और भरोसेमन्द है कि उसके पूरा होने से पहले आकाश और पृथ्वी टल सकते हैं, परन्तु उनका एक भी वचन निष्फल नहीं होगा। पहली शताब्दी के वे लोग यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि कोई शक्ति पृथ्वी का अस्तित्व मिटा सकती है। इसलिए वे यीशु का आशय भली-भाँति समझ गए कि परमेश्वर के वचन की पूर्ति को कोई भी नहीं रोक सकता। आज हम और आप प्रभु के इन शब्दों को उसी प्रकार अनुभव नहीं करते जैसे उनके प्रथम अनुयायियों ने किया था, क्योंकि हम संसार के नष्ट होने की कल्पना कर सकते हैं। हम परमाणु हथियारों और उनकी विनाशकारी शक्ति के विषय में जानते हैं, और हमने अनेक चलचित्र भी देखे हैं जिनमें विशाल आकाशीय पिंड पृथ्वी से टकराते हुए दिखाए जाते हैं।

क्या हम केवल इस संसार के यात्री हैं?

आप यह भी सोच रहे होंगे, "क्या बाइबल यह नहीं कहती कि यह संसार हमारा घर नहीं है और हम केवल यहाँ से होकर जाने वाले यात्री हैं?"

पवित्रशास्त्र वास्तव में विश्वासियों को परदेशी और प्रवासी कहता है (1 पतरस अध्याय 2 आयत 11; इब्रानियों अध्याय 11 आयत 13)। परन्तु इन वचनों का अर्थ यह नहीं है कि हम यहाँ से होकर ऐसे चले जाएँगे कि फिर कभी लौटकर नहीं आएँगे। इसका आशय यह है कि हम इस पृथ्वी की वर्तमान अवस्था से होकर गुजर रहे हैं—ऐसी पृथ्वी से जो भ्रष्टता और मृत्यु के बन्धन में जकड़ी हुई है। जब यह संसार पूरी तरह शुद्ध कर दिया जाएगा और नया बना दिया जाएगा, तब हम यहीं लौटकर सदा के लिए निवास करेंगे।

उद्धार महान है!

उद्धार इतना महान है कि वह न केवल मनुष्यजाति को, बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी को भी पाप और उसके परिणामों से छुड़ा सकता है। यदि यह बात आपको आश्चर्यजनक लगती है, तो इन बातों पर विचार कीजिए।

• यीशु क्रूस पर इसलिए गए कि वे मनुष्य और पृथ्वी में शैतान के कार्यों का नाश करें, न कि उन लोगों या उस संसार का, जिसे उन्होंने स्वयं बनाया है। "परमेश्वर का पुत्र इसी उद्देश्य से प्रकट हुआ कि वह शैतान के कार्यों को नष्ट कर दे" (1 यूहन्ना अध्याय 3 आयत 8)। यहाँ "नष्ट कर दे" के लिए जिस मूल शब्द का प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है बंधन खोल देना, मुक्त कर देना और पूरी तरह समाप्त कर देना।

• यदि प्रभु मनुष्यों को पाप और उसके परिणामों से बचाकर उन्हें अपने पुत्र और पुत्रियाँ बनाने में समर्थ हैं, परन्तु उनका उद्धार परिवार के घर को बचाने के लिए पर्याप्त नहीं है, तो फिर वह कैसा उद्धार होगा?

यह संसार परमेश्वर का है। "पृथ्वी और जो कुछ उसमें है वह यहोवा का है" (भजन संहिता अध्याय 24 आयत 1)। वे अपनी भौतिक सृष्टि का एक भी कण पाप, शैतान, भ्रष्टता या मृत्यु के हवाले नहीं करेंगे। उनका उद्धार वहाँ तक पहुँचता है जहाँ तक पाप और मृत्यु का शाप पहुँचा है। जब यीशु मसीह फिर से आएँगे, तब वे भ्रष्टता की दासता से सम्पूर्ण सृष्टि को मुक्त करके और मृत्यु के प्रत्येक चिन्ह को मिटाकर उद्धार की प्रक्रिया को पूर्ण करेंगे।

"वही [यीशु] आदि से सर्वोपरि है, और मृतकों में से जी उठने वालों में प्रथम होकर अन्त में भी सर्वोपरि है। आदि से अन्त तक वही सब पर प्रधान है, सबसे ऊँचा और सबसे महान। परमेश्वर ने अपनी सम्पूर्ण परिपूर्णता को उसी में निवास करने योग्य ठहराया। इतना ही

नहीं, बल्कि उसकी यही इच्छा थी कि क्रूस पर बहाए गए उसके लहू के द्वारा सब वस्तुओं का अपने साथ मेल करा ले—चाहे वे पृथ्वी पर हों या स्वर्ग में। इस प्रकार इस समस्त सृष्टि की टूटी-बिखरी और अस्त-व्यस्त हो चुकी हर वस्तु—मनुष्य, अन्य प्राणी और सम्पूर्ण भौतिक सृष्टि—उसकी मृत्यु के कारण फिर से अपने उचित स्थान पर स्थापित होकर पूर्ण सामंजस्य में आ जाएगी" (कुलुस्सियों अध्याय 1 आयत 18 से 20)।

बाइबल हमें बताती है कि "यह संसार अपनी वर्तमान अवस्था में टलता जा रहा है" (1 कुरिन्थियों अध्याय 7 आयत 31)। परन्तु साथ ही वह हमें यह भी विश्वास दिलाती है कि आकाश और पृथ्वी का विनाश नहीं होगा। उन्हें पाप के प्रभाव से छुड़ाया और पुनर्स्थापित किया जाएगा, ताकि वे वही बन जाएँ जिसकी परमेश्वर ने आरम्भ से ही इच्छा की थी—अपने और अपने परिवार के लिए एक सिद्ध और पूर्ण निवास-स्थान।

हमारा अनन्त घर यही पृथ्वी होगी, जिसे हम जानते हैं और जिससे हम प्रेम करते हैं।



हम सदा के लिए पृथ्वी पर रहेंगे।

जब यीशु लगभग दो हज़ार वर्ष पहले इस संसार में आए, तब उनका जन्म एक यहूदी के रूप में हुआ। उनके सभी प्रथम अनुयायी पुरानी वाचा के यहूदी थे। इसका अर्थ यह था कि अन्य बातों के साथ-साथ, उनकी वास्तविकता की समझ व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं से निर्मित हुई थी, जिन्हें आज हम पुराना नियम कहते हैं। इन पवित्र लेखों ने पतरस, यूहन्ना, पौलुस और अन्य चेलों को यह विश्वास दिलाया था कि उनकी (और हमारी भी) अन्तिम नियति पृथ्वी पर सदा जीवित रहना है।

पुरानी वाचा के स्त्री और पुरुष जानते थे कि एक दिन प्रभु परमेश्वर अपना प्रत्यक्ष राज्य इसी पृथ्वी पर स्थापित करेंगे। वे विश्वास करते थे कि मृत्यु इस संसार से केवल एक अस्थायी विदाई है, और वे इस आशा में रहते थे कि उनके शरीर कब्र से फिर जीवित किए जाएँगे ताकि वे पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में सदा जीवित रह सकें। यद्यपि वे यह नहीं जानते थे कि वे किस प्रकार या कब पृथ्वी पर लौटेंगे, फिर भी उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि वे अवश्य लौटेंगे।

भविष्य के विषय में उनकी समझ।

प्रेरित पतरस यीशु के अत्यन्त समर्पित अनुयायी थे। एक दिन उन्होंने हमारे उद्धारकर्ता से पूछा कि उनके और अन्य ग्यारह मूल चेलों को सब कुछ छोड़कर उनकी सेवा करने के बदले में क्या प्रतिफल मिलेगा। यीशु ने उत्तर दिया,

“मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब सब कुछ नया कर दिया जाएगा और मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा, तब तुम, जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। और जिसने भी मेरे नाम के

कारण घरों, भाइयों, बहनों, पिता, माता, पत्नी, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है, वह उसका सौ गुना पाएगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा" (मत्ती अध्याय 19 आयत 28 से 29)।

प्रभु ने अपने चेलों से कहा कि उनका प्रतिफल उस समय मिलेगा जब सब कुछ नया कर दिया जाएगा। यहाँ जिस यूनानी शब्द का प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ है "नया जन्म"।" अर्थात्, "नए युग में—जब संसार का मसीही दुबारा जन्म होगा" तथा "जब सब वस्तुओं का नवीनीकरण होगा" (मत्ती अध्याय 19 आयत 28 से 29)।

ध्यान दीजिए कि यीशु ने यह नहीं समझाया कि उनका आशय "सब कुछ नया कर दिए **जाने"** से क्या था। उन्हें इसकी आवश्यकता भी नहीं थी, क्योंकि उनके चेले पहले से जानते थे कि वे किस विषय की बात कर रहे हैं। पुराने नियम के अनेक भविष्यद्वक्ताओं ने संसार के आने वाले नवीनीकरण या पुनर्जन्म के विषय में लिखा था, और पतरस तथा अन्य चेले उनकी भविष्यवाणियों से भली-भाँति परिचित थे।

यीशु ने उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें महान उत्तरदायित्व के पद प्राप्त होंगे, उन्होंने जो कुछ उनका अनुसरण करने के लिए छोड़ा है, उससे कहीं अधिक उन्हें वापस मिलेगा, और वे अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे।

इक्कीसवीं शताब्दी के अधिकांश मसीहियों के लिए अनन्त जीवन का अर्थ किसी धुँधले आत्मिक लोक में एक निराकार अस्तित्व है, जहाँ लोग बादलों पर तैरते रहते हैं और वीणा बजाते हैं। परन्तु इन चेलों के लिए इस शब्द का अर्थ ऐसा बिल्कुल नहीं था। भविष्यद्वक्ताओं के लेखों के आधार पर वे अनन्त जीवन का अर्थ इस प्रकार समझते थे:

"तुम्हारा शरीर मृतकों में से फिर जीवित किया जाएगा, ताकि तुम एक बार फिर पृथ्वी पर जीवन व्यतीत कर सको। जो कुछ तुमने खो दिया है, वह सब तुम्हें लौटा दिया जाएगा, और इस बार वह सदा के लिए तुम्हारा होगा। मृत्यु फिर कभी तुमसे कुछ भी छीन नहीं सकेगी।"

आने वाले अध्यायों में मैं इन बातों पर और अधिक विस्तार से चर्चा करूँगी। परन्तु अभी के लिए, आइए पुराने नियम के कुछ ऐसे वचनों पर विचार करें जिन्होंने पतरस और अन्य चेलों के हृदय में यह आशा उत्पन्न की।

"मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और अन्त में वह पृथ्वी पर खड़ा होगा। और जब मेरी यह त्वचा नष्ट हो जाएगी, तब भी मैं अपने इसी शरीर में परमेश्वर को देखूँगा" (अय्यूब अध्याय 19 आयत 25 से 26)।

“परन्तु तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे; उनके शरीर फिर उठ खड़े होंगे। हे धूल में बसनेवालो, जाग उठो और आनन्द से जयजयकार करो। क्योंकि तेरी ओस भोर की ओस के समान है, और पृथ्वी अपने मरे हुओं को फिर जन्म देगी” (यशायाह अध्याय 26 आयत 19)।

“परन्तु नम्र लोग अन्त में पृथ्वी के अधिकारी होंगे” (भजन संहिता अध्याय 37 आयत 11)।

“...धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और वे उसमें सदा निवास करेंगे” (भजन संहिता अध्याय 37 आयत 29)।

रूपान्तरण, विनाश नहीं।

एक दिन दोपहर के समय, यीशु के इस संसार से चले जाने के कुछ ही समय बाद, पतरस और यूहन्ना यरूशलेम के मन्दिर में गए। वहाँ प्रवेश-द्वार पर उनकी भेंट एक लँगड़े व्यक्ति से हुई। उन्होंने यीशु के नाम में परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा उसे चंगा कर दिया। मन्दिर में आने-जाने वाले लोग उस व्यक्ति को भली-भाँति जानते थे, इसलिए उसके अचानक चंगे हो जाने पर एक बड़ी भीड़ यह देखने के लिए इकट्ठी हो गई कि क्या हुआ है। पतरस ने इस अवसर का उपयोग यीशु के हाल ही में हुए क्रूस पर चढ़ाए जाने और उनके पुनरुत्थान का प्रचार करने के लिए किया।

प्रेरित ने एक ऐसी बात कही जो इस पृथ्वी के भविष्य के विषय में उनकी समझ पर गहरा प्रकाश डालती है। पतरस ने भीड़ से कहा कि प्रभु स्वर्ग लौट गए हैं, जहाँ वे उस समय तक रहेंगे, “जब तक कि सब वस्तुओं के पुनर्स्थापन का समय न आ जाए, जिसके विषय में परमेश्वर ने आदि काल से अपने सब पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा है” (प्रेरितों के काम अध्याय 3 आयत 21)।

“पुनर्स्थापन” का अर्थ है “किसी वस्तु को उसकी पहले की अवस्था में फिर से लौटा देना,” अथवा जैसा एक अनुवाद में कहा गया है, “जब सब वस्तुओं का पाप से अन्तिम और पूर्ण उद्धार होगा” (प्रेरितों के काम अध्याय 3 आयत 21)।

पतरस ने अपने श्रोताओं को स्मरण कराया कि परमेश्वर पृथ्वी के आरम्भिक दिनों से ही इस पुनर्स्थापन और पुनःप्राप्ति के समय के विषय में बताते आ रहे हैं। जब आदम और हव्वा ने पाप किया और इस संसार में मृत्यु का शाप ले आए, तब उसी समय से सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आने वाले छुड़ानेवाले की प्रतिज्ञा के द्वारा अपनी उद्धार की योजना को प्रकट करना आरम्भ कर दिया (उत्पत्ति अध्याय 3 आयत 15)।

समय बीतने के साथ-साथ प्रभु ने इस योजना के और भी अनेक पहलुओं को प्रकट किया तथा अपने भविष्यद्वक्ताओं को आज्ञा दी कि वे उनके वचनों को लिखें, जो आगे चलकर पुराने नियम का भाग बने। इन पवित्र लेखकों ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि पाप और उसके परिणामों से छुटकारा केवल मनुष्यजाति के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए भी आने वाला है।

पतरस और अन्य चेले परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के लेखों से यह जानते थे कि प्रभु परमेश्वर उस सबको फिर से प्राप्त करने का कार्य कर रहे हैं जो आदम के पाप करने पर खो गया था—अर्थात् अपना परिवार और वह घर जिसे उन्होंने हमारे लिए बनाया था। पुराने नियम के लेखों के आधार पर, पहली शताब्दी में यीशु के साथ रहने और चलने वाले लोग यह आशा रखते थे कि प्रभु पृथ्वी पर फिर से अदन, अर्थात् परदेश, को बहाल करेंगे। निस्सन्देह, यह समझ उन शिक्षाओं से और भी दृढ़ हुई होगी जो उन्होंने उन तीन वर्षों के दौरान यीशु से सुनी थीं जब वे उनके साथ रहे। भविष्यद्वक्ता आगे यह भी प्रकट करते हैं कि जब परमेश्वर इस संसार को पुनर्स्थापित करने आएँगे, तब उनकी सृष्टि पर उसका क्या प्रभाव होगा—शरीरों का पुनरुत्थान और नवीनीकरण होगा; जंगल और उजाड़ स्थान फिर से हरे-भरे हो जाएँगे; बंजर और सूखी भूमि फलवन्त बन जाएगी; हानिकारक काँटेदार पौधे समाप्त कर दिए जाएँगे; और चारों ओर शान्ति तथा आनन्द भर जाएगा।

“यहोवा निश्चय ही सिय्योन को शान्ति देगा और उसके सब उजड़े हुए स्थानों पर दया करेगा। वह उसके जंगलों को अदन के समान और उसके निर्जन प्रदेशों को यहोवा की वाटिका के समान बना देगा” (यशायाह अध्याय 51 आयत 3)।

“जंगल और सूखी भूमि आनन्दित होंगे; निर्जन प्रदेश मगन होकर फूलों से लद जाएगा। वह कुमुदिनी के समान भरपूर खिलेगा… जंगल में जल फूट निकलेगा और मरुभूमि में नदियाँ बहेंगी। तपती हुई रेत तालाब बन जाएगी, और प्यासी भूमि में जल के सोते फूट पड़ेंगे” (यशायाह अध्याय 35 आयत 1 से 7)।

“तुम आनन्द के साथ निकलोगे और शान्ति के साथ पहुँचाए जाओगे। पर्वत और पहाड़ तुम्हारे सामने जयजयकार करते हुए गाएँगे, और मैदान के सब वृक्ष ताली बजाएँगे। जहाँ पहले काँटे उगते थे, वहाँ सरो के वृक्ष उगेंगे; और जहाँ झाड़ियाँ होती थीं, वहाँ मेंहदी के वृक्ष अंकुरित होंगे” (यशायाह अध्याय 55 आयत 12 से 13)

नई पृथ्वी।

पतरस और यीशु के अन्य प्रारम्भिक अनुयायी यह आशा रखते थे कि सम्पूर्ण भौतिक सृष्टि—आकाश और पृथ्वी दोनों—नई बना दी जाएगी। इस सत्य का प्रकाशन सबसे पहले यीशु के इस संसार में आने से लगभग सात सौ वर्ष पहले भविष्यद्वक्ता यशायाह को दिया गया था। प्रभु परमेश्वर ने कहा,

"क्योंकि देखो, मैं नए आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टि करता हूँ; पहले की बातें स्मरण नहीं रहेंगी और न ही मन में फिर आएँगी" (यशायाह अध्याय 65 आयत 17)।

पतरस ने पृथ्वी के रूपान्तरण के विषय में अपनी बात कहने के तुरन्त बाद इसी भविष्यवाणी का उल्लेख किया (2 पतरस अध्याय 3 आयत 10 से 12)।

"परन्तु हम उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार नए आकाश और नई पृथ्वी की बाट जोह रहे हैं, जिनमें धार्मिकता (अर्थात् सीधाई, पाप से पूर्ण स्वतंत्रता और परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध) निवास करेगी" (2 पतरस अध्याय 3 आयत 13)।

इस वचन में पतरस ने पृथ्वी के भविष्य का वर्णन करते समय "नया" के लिए यूनानी भाषा का एक अत्यन्त विशिष्ट शब्द प्रयोग किया है। इस शब्द का अर्थ है "स्वरूप या गुण में नया," न कि "समय की दृष्टि से नया।" यही शब्द उस व्यक्ति के लिए भी प्रयुक्त हुआ है जो मसीह पर विश्वास करने के द्वारा नया जन्म प्राप्त करता है।

"इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं; देखो, सब कुछ नया हो गया है" (2 कुरिन्थियों अध्याय 5 आयत 17)।

• नया जन्म किसी मनुष्य को ऐसा प्राणी नहीं बना देता जिसका पहले कभी अस्तित्व ही न रहा हो। नया जन्म उस व्यक्ति को, जिसने यीशु पर विश्वास किया है, उसके भीतरी अस्तित्व को अनन्त जीवन से परिपूर्ण करके रूपान्तरित कर देता है।

• जिस प्रकार नई सृष्टि वही व्यक्ति है जो रूपान्तरित हो गया है, उसी प्रकार नए आकाश और नई पृथ्वी भी यही पृथ्वी होगी—इसके चारों ओर और ऊपर का आकाश तथा समस्त विस्तार सहित—जो अनन्त जीवन के द्वारा परिवर्तित होकर गुण, स्वरूप और महिमा में नई तथा पहले से कहीं अधिक उत्कृष्ट बना दी जाएगी।

क्या हमें पृथ्वी की कोई स्मृति नहीं रहेगी?

आगे बढ़ने से पहले मैं एक ऐसी शंका का उत्तर देना चाहती हूँ जो इस स्थान पर उत्पन्न हो सकती है। कभी-कभी यशायाह की इस भविष्यवाणी का उपयोग इस विचार का समर्थन करने

के लिए किया जाता है कि स्वर्ग में हमें पृथ्वी पर बिताए अपने जीवन या अपने किसी परिचित की कोई स्मृति नहीं रहेगी। परन्तु भविष्यद्वक्ता ने ऐसा कुछ भी नहीं कहा। उनके शब्द मूल रूप से वास्तविक लोगों को सम्बोधित थे, जो अत्यन्त कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे थे, और उनका उद्देश्य उन्हें आशा देना था।

यशायाह ने उन स्त्री-पुरुषों के छोटे से समूह के लिए भविष्यवाणी की जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहे, जबकि उनका शेष राष्ट्र जान-बूझकर और लगातार मूर्तिपूजा में लिप्त हो गया था तथा पश्चाताप करने से इनकार कर रहा था। इस कारण इस्राएल राष्ट्र पर कठोर दण्ड आने वाला था। यशायाह के द्वारा प्रभु ने अपने विश्वासयोग्य लोगों को यह आश्वासन दिया कि एक दिन, नई पृथ्वी पर, सब कुछ ठीक कर दिया जाएगा और उनके विद्रोही देशवासियों के कारण जो दुःख और कष्ट उन्होंने सहे थे, वे केवल अतीत की बात बनकर रह जाएँगे।

परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा की, "मैं अपना क्रोध दूर कर दूँगा और बीते दिनों की बुराइयों को स्मरण नहीं करूँगा" (यशायाह अध्याय 65 आयत 16)।

यही वचन उस सन्दर्भ को स्पष्ट करता है जिसमें यशायाह ने कहा कि पहले की बातें स्मरण नहीं रहेंगी। यहाँ न स्मरण करने का कार्य स्वयं प्रभु करेंगे। क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर सर्वज्ञ हैं, इसलिए वे किसी बात को इस अर्थ में नहीं भूलते कि उन्हें उसका ज्ञान ही न रहे। इसके विपरीत, वे उसे स्मरण में न लाने का निर्णय लेते हैं। यशायाह अध्याय 65 आयत 17 में भी यही भाव है। प्रभु अपने लोगों को यह आश्वासन दे रहे थे कि जब संसार नया बना दिया जाएगा, तब उनके इतिहास का यह भयानक समय क्षमा कर दिया जाएगा और फिर कभी स्मरण में नहीं लाया जाएगा।

यशायाह की इस भविष्यवाणी का हमारी पारिवारिक, सामाजिक या व्यक्तिगत सम्बन्धों अथवा पृथ्वी पर बिताए गए जीवन के अनुभवों को भूल जाने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आने वाले जीवन में मानवजाति का इतिहास मिटाया नहीं जाएगा। पृथ्वी का रूपान्तरण तो इस ग्रह के इतिहास के एक नए अध्याय का आरम्भ होगा। वास्तव में, हममें से बहुत-से लोग पृथ्वी के अतीत में पहले से भी अधिक रुचि लेंगे, क्योंकि तब हम उसे पूर्ण हो चुके उद्धार की दृष्टि से देखेंगे। हम समझ पाएँगे कि पतित संसार में परमेश्वर ने मनुष्यों के जीवन की घटनाओं के बीच किस प्रकार कार्य किया और कैसे उन्होंने प्रत्येक बात को अपनी अनन्त योजनाओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाया।

यूहन्ना ने नई पृथ्वी को देखा।

स्वर्ग की अपनी यात्रा के दौरान प्रेरित यूहन्ना ने दर्शन में नए आकाश और नई पृथ्वी को देखा। उन्होंने जो कुछ देखा, उसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिख दिया। उन्होंने ऐसे संसार को देखा जो रूपान्तरित हो चुका था, न कि नष्ट कर दिया गया था। उनकी पहली ही बात इस सत्य को स्पष्ट कर देती है:

"फिर मैंने एक नया आकाश और नई पृथ्वी देखी, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी टल गए थे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 1)।

• "नया" के लिए यूहन्ना ने वही यूनानी शब्द प्रयोग किया जिसका प्रयोग पतरस ने भी किया था। कुछ ही आयतों के बाद, उसी सन्दर्भ में जो कुछ वे देख रहे थे, उन्होंने लिखा कि उन्होंने परमेश्वर को यह कहते हुए सुना, "देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 5)। ध्यान दीजिए, प्रभु ने यह नहीं कहा कि वे नई वस्तुओं की सृष्टि करते हैं। उन्होंने कहा कि वे जो पहले से विद्यमान है, उसी को गुण, स्वरूप और महिमा में नया तथा पहले से कहीं अधिक श्रेष्ठ बना देते हैं।

• यूहन्ना ने हमारे वर्तमान संसार को "पहला आकाश और पहली पृथ्वी" कहा। "पहला" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द का अर्थ है "समय या क्रम में प्रथम।" यही शब्द इस विचार को भी प्रकट करता है कि कोई मूल स्वरूप या आदर्श प्रतिरूप है, जिसके आधार पर आगे की वस्तु तैयार की जाती है। दूसरे शब्दों में, यह वर्तमान संसार आने वाले संसार का प्रतिरूप है।

यूहन्ना ने लिखा कि पहली पृथ्वी टल गई थी। यहाँ भी उन्होंने वही यूनानी शब्द प्रयोग किया जो पतरस ने तब प्रयोग किया था जब उन्होंने लिखा, "आकाश टल जाएँगे" (2 पतरस अध्याय 3 आयत 10)। स्मरण रखिए, इस शब्द का अर्थ अस्तित्व समाप्त हो जाना नहीं है, बल्कि एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करना है।

प्रेरित पौलुस ने भी इसी शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति का वर्णन करते समय किया है जो परमेश्वर से नया जन्म प्राप्त करता है। उन्होंने लिखा, "पुरानी (पहले की नैतिक और आत्मिक अवस्था) बीत गई; देखो, सब कुछ नया हो गया" (2 कुरिन्थियों अध्याय 5 आयत 17)।

जो व्यक्ति यीशु पर विश्वास करता है, उसका अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। इसके विपरीत, वह अनन्त जीवन के द्वारा अपने भीतरी अस्तित्व में रूपान्तरित कर दिया जाता है।

यीशु के प्रथम अनुयायी अपने भविष्य को उतनी स्पष्टता से समझते थे, जितनी आज हममें से बहुत-से लोग नहीं समझते। वे परमेश्वर के उस वचन से, जो उनके भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिया गया था, यह जानते थे कि इस संसार का विनाश नहीं होगा। इसका नवीनीकरण किया जाएगा। वे यह भी जानते थे कि वर्तमान पृथ्वी और नई पृथ्वी के बीच निरन्तरता बनी रहेगी। आज की यह पृथ्वी, अपने पतित स्वरूप में भी, आने वाले वैभव की केवल एक क्षणिक झलक प्रस्तुत करती है।

मनुष्य के पाप के कारण यह पृथ्वी भ्रष्ट हो गई है, परन्तु इसे फिर से प्राप्त किया जाएगा, इसका उद्धार किया जाएगा और इसे पुनर्स्थापित किया जाएगा, ताकि यह वही बन सके जिसकी सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आरम्भ से ही इच्छा की थी—अपने और अपने परिवार के लिए एक सिद्ध और पूर्ण निवास-स्थान।

यह पृथ्वी ही होगी—वही पृथ्वी जिसे हम जानते हैं और जिससे हम प्रेम करते हैं—पाप के हर प्रभाव से शुद्ध की हुई, फिर भी पहचानी जा सकने वाली; नई बनाई हुई, फिर भी हमारे लिए परिचित।



पृथ्वी पर स्वर्ग की राजधानी।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना ने लिखा है कि उन्होंने उद्धार की योजना की परिपूर्णता को देखा—सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने परिवार के साथ उस घर में रहने के लिए आते हुए, जिसे उन्होंने हमारे लिए बनाया था।

यूहन्ना ने स्वर्ग की राजधानी, अर्थात् पवित्र नगर, को अदृश्य लोक से उतरकर नई पृथ्वी पर आते हुए देखा। फिर उन्होंने एक ऊँचे स्वर को यह घोषणा करते हुए सुना कि अब परमेश्वर का निवास मनुष्यों के बीच है।

"फिर मैंने एक नया आकाश और नई पृथ्वी देखी... और मैंने पवित्र नगर, नए यरूशलेम को परमेश्वर के पास से स्वर्ग में से उतरते देखा। वह अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के समान तैयार था। तब मैंने सिंहासन की ओर से एक ऊँचा शब्द सुना, जो कह रहा था, 'देखो, अब परमेश्वर का निवास मनुष्यों के साथ है। वह उनके साथ निवास करेगा, और वे उसके लोग होंगे। परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा। वह उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ डालेगा। फिर न मृत्यु रहेगी, न शोक, न रोना, न पीड़ा, क्योंकि पहले की बातें जाती रही हैं'" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 1 से 4)।

हमारे लिए तैयार किए गए आने वाले जीवन के विषय में जो अनेक गलत धारणाएँ प्रचलित हैं, उनका कारण यूहन्ना द्वारा उस नगर के विषय में आगे किए गए वर्णन की गलत व्याख्या है। उनके वर्णन के आधार पर कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाल लिया है कि पृथ्वी के स्थान पर एक घनाकार, अनेक स्तरों वाला, पारदर्शी नगर आ जाएगा, जिसमें हम बिना सूर्य, चन्द्रमा और समुद्र के सदा निवास करेंगे। यह कल्पना उन लोगों के लिए विशेष आकर्षक नहीं लगती, जो किसी पारदर्शी नगर के विशाल भवन में रहने की अपेक्षा चाँदनी रात में अलाव के साथ एक लकड़ी के घर में या समुद्र तट पर धूप से भरे एक सुन्दर घर में रहना अधिक पसन्द करेंगे।

कुछ क्षणों के लिए आइए, यूहन्ना के इस वर्णन के विषय में बनी हुई अपनी पूर्वधारणाओं को एक ओर रख दें और इस बात पर विचार करें कि पहली शताब्दी के उन लोगों के लिए, जिनके लिए यूहन्ना ने यह पुस्तक लिखी थी, इन शब्दों का क्या अर्थ रहा होगा। ऐसा करने से हमें अपने भविष्य के घर के विषय में बनी हुई गलत मान्यताओं को त्यागने में सहायता मिलेगी।

यूहन्ना ने जिस नगर को देखा।

यूहन्ना का दर्शन एक ऐसे दृश्य से आरम्भ हुआ जिसकी शोभा का पूर्ण वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता—एक ऐसा नगर जो परमेश्वर की महिमा से प्रकाशित और उसी की ज्योति से आलोकित था, जो पृथ्वी पर उतर आया था।

"पवित्र नगर, यरूशलेम... परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण था और बहुमूल्य रत्न के समान चमक रहा था, जैसे स्फटिक के समान स्वच्छ यशब। उसकी शहरपनाह बड़ी ऊँची और विशाल थी, जिसमें बारह फाटक थे... प्रत्येक दिशा में तीन-तीन फाटक थे—पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 10 से 13)।

"उस शहरपनाह का निर्माण यशब से किया गया था, और नगर शुद्ध सोने का था, जो काँच के समान निर्मल था। नगर की शहरपनाह की नींवें बारह प्रकार के बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित थीं—यशब, नीलम, सुलैमानी, पन्ना, गोमेद, लालड़ी, पीतमणि, वैदूर्य, पुखराज, हरितमणि, जम्बुमणि और बैंगनी मणि। बारहों फाटक बारह मोतियों के बने थे; प्रत्येक फाटक एक ही मोती से बना था। और नगर की मुख्य सड़क शुद्ध सोने की थी, जो स्वच्छ काँच के समान चमक रही थी" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 18 से 21)।

परमेश्वर का निवास-स्थान।

यूहन्ना के मूल पाठकों ने यह समझ लिया था कि वह नगर तेजोमय, बहुमूल्य रत्नों से अलंकृत और स्वर्णमय इसलिए है क्योंकि वह कोई विचित्र या इस संसार से परे की वस्तु नहीं है, बल्कि इसलिए कि वह स्वयं परमेश्वर का निवास-स्थान है। वे भविष्यद्वक्ताओं के उन लेखों से भली-भाँति परिचित थे, जिनमें कई ऐसे अवसरों का वर्णन है जब स्वर्ग कुछ समय के लिए पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के लिए खुल गया था। हर अवसर पर लोगों ने तेजस्वी प्रकाश और बहुमूल्य रत्नों का वैभव देखा, क्योंकि प्रभु अपनी सम्पूर्ण महिमा में उनके सामने प्रकट हुए थे। इसके दो उदाहरण देखिए:

“तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएल के सत्तर पुरनिए पर्वत पर चढ़ गए। वहाँ उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया। उनके चरणों के नीचे नीलम के समान एक फर्श दिखाई देता था, जो आकाश के समान निर्मल था” (निर्गमन अध्याय 24 आयत 9 से 10)।

“मैं, यहेजकेल, ने ऐसा देखा मानो नीलम का बना हुआ एक सिंहासन हो, और उस सिंहासन के ऊपर मनुष्य के समान एक स्वरूप दिखाई दिया। उसकी कमर के ऊपर का भाग दहकते हुए धातु के समान चमक रहा था और अग्नि के समान दमक रहा था। उसकी कमर के नीचे का भाग भी अग्नि के समान दिखाई देता था और उसके चारों ओर अद्‌भुत तेज फैला हुआ था। उसके चारों ओर का प्रकाश वर्षा के बाद बादलों में दिखाई देने वाले इन्द्रधनुष के समान था। यही यहोवा की महिमा के दर्शन का स्वरूप था” (यहेजकेल अध्याय 1 आयत 26 से 28)।

यूहन्ना के श्रोताओं को स्वर्णमय नगर का वर्णन सुनकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वे सुलैमान के मन्दिर से परिचित थे। उस मन्दिर की रचना इस उद्‌देश्य से की गई थी कि वह ऐसा उपयुक्त स्थान हो जहाँ प्रभु अपने लोगों से मिलें। इसी कारण उसके निर्माण में हर ओर प्रचुर मात्रा में सोने का उपयोग किया गया था (निर्गमन अध्याय 25 आयत 10 से 40; 1 राजा अध्याय 6 आयत 14 से 37)। इसलिए यूहन्ना के पाठकों ने सहज ही समझ लिया कि जो नगर उन्होंने स्वर्ग से उतरते देखा, वह सोने से परिपूर्ण इसलिए है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का निवास-स्थान है।

यूहन्ना ने जो कुछ देखा उसका वर्णन करते हुए लिखा कि परमेश्वर की राजधानी शुद्‌ध सोने की थी, जो काँच के समान निर्मल थी और स्फटिक के समान स्वच्छ यशब की तरह चमक रही थी। कुछ लोगों ने गलती से यह निष्कर्ष निकाल लिया कि यूहन्ना का आशय यह था कि वह नगर पारदर्शी है। परन्तु इस पर विचार कीजिए। जब हम किसी वस्तु के बारे में कहते हैं कि वह काँच के समान निर्मल है, तो हमारा आशय यह होता है कि उसमें कोई दोष, मलिनता या अशुद्‌धता नहीं है। नए यरूशलेम का सोना दोषरहित है, पारदर्शी नहीं।

इसी प्रकार जब हम कहते हैं कि आज का दिन बिल्कुल निर्मल है, तो हमारा अर्थ यह नहीं होता कि आकाश आर-पार दिखाई दे रहा है। हमारा आशय यह होता है कि उसमें कोई बादल नहीं हैं जो उसके गहरे नीले रंग को ढक दें।

यशब नामक रत्न की ठीक-ठीक पहचान को लेकर कुछ मतभेद हैं, परन्तु सामान्यतः इसे ऐसा रत्न माना जाता है जो विभिन्न रंगों की आभा बिखेरता है, विशेषकर अग्नि के समान तेजस्वी प्रकाश से दमकता है। यह रत्न वास्तव में जो भी रहा हो, इस विस्मयकारी नगर में परमेश्वर की महिमा उसी के माध्यम से प्रकाशमान होती दिखाई देती है, क्योंकि वहाँ के सोने और बहुमूल्य रत्नों में कोई भी दोष या अपूर्णता नहीं है जो उनकी महिमा के तेज को मन्द कर सके।

नगर का माप।

जब दर्शन आगे बढ़ा, तब यूहन्ना ने एक स्वर्गदूत को उस महान नगर का माप लेते हुए देखा। उसके माप से पता चला कि वह नगर एक घन के आकार का था, जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई प्रत्येक लगभग चौदह सौ मील थी (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 15 से 17)। जिन लोगों ने सबसे पहले यूहन्ना का यह वर्णन सुना, उन्हें यह बात विचित्र नहीं लगी। वे जानते थे कि उनके समय में यरूशलेम के मन्दिर का सबसे भीतरी कक्ष, जहाँ परमेश्वर की महिमा प्रकट होती थी, घनाकार था (1 राजा अध्याय 6 आयत 20)। नया यरूशलेम भी घन के आकार का है क्योंकि वह स्वयं प्रभु का निवास-स्थान है।

कुछ आधुनिक विद्वानों का मानना है कि स्वर्गदूत द्वारा लिया गया यह माप केवल प्रतीकात्मक अर्थ रखता है। परन्तु यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से लिखा कि "स्वर्गदूत ने मनुष्यों में प्रचलित माप के अनुसार ही माप लिया" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 17)। यद्यपि यह माप बताता है कि नगर की ऊँचाई वर्तमान पृथ्वी के वायुमण्डल से भी अधिक है, फिर भी यह सम्भव है कि नई पृथ्वी वर्तमान पृथ्वी से कहीं अधिक विशाल हो। और यदि परमेश्वर चाहें, तो वे उसके अनुरूप वायुमण्डल का विस्तार भी कर सकते हैं। क्या उस नगर में विभिन्न स्तर होंगे? उसकी इमारतें कितनी ऊँची होंगी? बाइबल इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देती। जब हम उस स्वर्गीय राजधानी को अपनी आँखों से देखेंगे, तब इन सब बातों को जान लेंगे।

पुराने नियम से परिचित स्त्री-पुरुषों के लिए यह तथ्य कि एक स्वर्गदूत नगर का माप ले रहा था, अत्यन्त महत्वपूर्ण था। वे जानते थे कि भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने भी अपने एक दर्शन में एक स्वर्गदूत को पृथ्वी पर स्थित यरूशलेम नगर का माप लेते हुए देखा था। जकर्याह के समय में कभी सामर्थी रहा इस्राएल राष्ट्र विदेशी शासन के अधीन एक छोटे से अवशेष के रूप में रह गया था। शत्रुओं के आक्रमण के कारण यरूशलेम उजाड़ पड़ा था। फिर भी परमेश्वर के इस जन ने भविष्यवाणी की कि एक दिन प्रभु इस नगर को फिर से पुनर्स्थापित करेंगे। यह दर्शन केवल उनकी पीढ़ी के लिए ही नहीं, बल्कि उनके बाद आने वाली प्रत्येक पीढ़ी के लिए, यहाँ तक कि यूहन्ना के समय तक, बड़ी सांत्वना और आशा का स्रोत बना रहा।

भविष्यद्वक्ता ने लिखा,

"उसने [स्वर्गदूत ने] उत्तर दिया, 'मैं यरूशलेम का माप लेने जा रहा हूँ, ताकि देखूँ कि उसकी चौड़ाई और उसकी लम्बाई कितनी है।'... तब दूसरे स्वर्गदूत ने कहा, 'दौड़कर उस युवक से कह, "एक दिन यरूशलेम इतना लोगों से भर जाएगा कि उसकी शहरपनाह के भीतर सबके लिए स्थान नहीं रहेगा। बहुत-से लोग अपने पशुओं सहित नगर की शहरपनाह के बाहर रहेंगे, फिर भी वे सुरक्षित रहेंगे। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है—मैं स्वयं उसके चारों ओर अग्नि

की शहरपनाह बनूँगा, और मैं ही उस नगर के भीतर उसकी महिमा बनकर निवास करूँगा"""" (जकर्याह अध्याय 2 आयत 2 से 5)।

उस समय के इतिहास में किसी भी नगर की सुरक्षा के लिए उसकी शहरपनाह अत्यन्त आवश्यक होती थी। संकट के समय और रात के समय नगर के फाटक बन्द कर दिए जाते थे ताकि लोग सुरक्षित रह सकें। जकर्याह ने ऐसे समय की भविष्यवाणी की थी जब नगर के फाटक कभी बन्द नहीं किए जाएँगे, क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर स्वयं अपने लोगों के साथ निवास करेंगे। यही बात यूहन्ना ने अपने दर्शन में वर्णित की—एक स्वर्गीय नगर जो परमेश्वर की महिमा से आलोकित है और जिसके फाटक कभी बन्द नहीं होते, क्योंकि प्रभु और उनके लोगों के सभी शत्रु सदा के लिए पराजित हो चुके होंगे (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 25)।

जिन लोगों को सबसे पहले यूहन्ना का यह सन्देश मिला, उन्होंने इसे किसी अलौकिक या अप्रिय कल्पना के रूप में नहीं समझा। उन्होंने इसमें यह सन्देश सुना—"परमेश्वर अपनी सम्पूर्ण महिमा के साथ हमारे बीच रहने के लिए आ रहे हैं, और उनके महान नगर का आगमन पृथ्वी पर शान्ति, समृद्धि और सुरक्षा लेकर आएगा।" तब सब कुछ पूर्ण रूप से ठीक कर दिया जाएगा। फिर न कोई खतरा रहेगा, न कोई हानि, और न ही मृत्यु।

एक महान नदी।

प्रेरित यूहन्ना ने लिखा कि उन्होंने नए यरूशलेम के मध्य में परमेश्वर के सिंहासन से निकलती हुई एक महान नदी को बहते देखा।

"फिर स्वर्गदूत ने मुझे जीवन के जल की एक निर्मल नदी दिखाई, जो स्फटिक के समान स्वच्छ थी और परमेश्वर तथा मेम्ने के सिंहासन से निकलकर नगर की मुख्य सड़क के बीचों-बीच बह रही थी। नदी के दोनों किनारों पर जीवन का वृक्ष था, जो बारह प्रकार के फल उत्पन्न करता था और प्रत्येक महीने नया फल देता था" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 आयत 1 से 2)।

यूहन्ना के पाठक भविष्यद्वक्ताओं के लेखों से यह भली-भाँति जानते थे कि जब प्रभु अपने लोगों के साथ रहने आएँगे, तब वे सूखी और बंजर भूमि में भी जीवनदायी जल प्रवाहित करेंगे।

• यशायाह ने भविष्यवाणी की, "मरुभूमि लबानोन के पर्वतों के समान हरी-भरी हो जाएगी" (यशायाह अध्याय 35 आयत 2)।

• जकर्याह ने पृथ्वी पर आने वाले उद्धारकर्ता के सन्दर्भ में लिखा, "उस दिन जीवनदायी जल यरूशलेम से निकलेगा; उसका आधा भाग मृत सागर की ओर और आधा भाग भूमध्य सागर की ओर बहेगा, और वह गर्मी तथा जाड़े दोनों ऋतुओं में निरन्तर बहता रहेगा" (जकर्याह अध्याय 14 आयत 8)।

• यहेजकेल ने भी लगभग वही दृश्य देखा जो यूहन्ना ने देखा था—भविष्य का वह समय जब प्रभु परमेश्वर अपने लोगों के साथ पृथ्वी पर निवास करेंगे। "नदी के दोनों किनारों पर हर प्रकार के फलदार वृक्ष उगेंगे। उनके पत्ते कभी नहीं मुरझाएँगे और न ही झड़ेंगे, और उनकी डालियों पर सदा फल लगे रहेंगे। वे प्रत्येक महीने नया फल उत्पन्न करेंगे, क्योंकि उन्हें उस नदी का जल मिलता है जो मन्दिर से निकलती है" (यहेजकेल अध्याय 47 आयत 12)।

प्राचीन समय के वे लोग, जो ऐसे शुष्क प्रदेशों में रहते थे जहाँ शुद्ध और ताज़ा जल निरन्तर उपलब्ध नहीं होता था, परमेश्वर के मन्दिर से निकलने वाली इस निर्मल और जीवनदायी नदी की कल्पना से विस्मित हो उठते। उनके लिए यह वर्णन किसी भी प्रकार से अजीब या असामान्य नहीं था। इसके विपरीत, यह अत्यन्त अद्भुत, मनोहर और आशा से भर देने वाला था।

स्वर्ग से आया हुआ एक वास्तविक नगर।

मैं समझता हूँ कि जब हम यूहन्ना द्वारा लिखी गई बातों को पढ़ते हैं, तब पहले से बनी हुई धारणाओं को एक ओर रख देना सरल नहीं होता। परिणामस्वरूप, उनका वर्णन हमें किसी अलौकिक और इस संसार से परे की वस्तु जैसा प्रतीत होता है। परन्तु प्रेरित यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा कि उन्होंने स्वर्ग से एक नगर को उतरते हुए देखा। स्मरण रखिए कि यूहन्ना और पौलुस—जो दोनों स्वर्ग के प्रत्यक्षदर्शी थे—ने यह बताया कि पृथ्वी की रचना स्वर्गीय वास्तविकताओं के प्रतिरूप के अनुसार की गई है, और पृथ्वी पर विद्यमान वस्तुएँ हमें इस बात की झलक देती हैं कि परमेश्वर का निवास-स्थान कैसा है। इसलिए यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि जो नगर स्वर्ग से उतरा, वह किसी न किसी रूप में पृथ्वी के नगरों से मिलता-जुलता होगा।

यूहन्ना के वर्णन को ऐसे सुनिए मानो वे पृथ्वी पर स्थित किसी अत्यन्त भव्य और अद्भुत महानगर का वर्णन कर रहे हों। तब आपके मन में कैसी तस्वीर उभरेगी? सम्भवतः आप लोगों से भरे हुए एक जीवंत नगर की कल्पना करेंगे—जहाँ घर होंगे, व्यापार होंगे, सांस्कृतिक गतिविधियाँ होंगी, शिक्षा के केन्द्र होंगे, कला और मनोरंजन के साधन होंगे, खेल-कूद के आयोजन होंगे, उद्यान, संग्रहालय, भोजनालय, पुस्तकालय और संगीत सभाएँ होंगी।

यूहन्ना ने उस तेजोमय महानगर के बीच से बहने वाली एक सुन्दर नदी का भी उल्लेख किया। नगर के विशाल आकार को देखते हुए, सम्भव है कि उस नदी की अनेक सहायक नदियाँ भी हों। सम्भवतः वहाँ झरने, तालाब और झीलें भी होंगी। कल्पना कीजिए कि लोग इन मनोहर जलधाराओं के किनारे बैठ रहे हैं, टहल रहे हैं और आनन्द मना रहे हैं। ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है कि ये सब बातें उस सबसे महान नगर—महान राजा के नगर—में उपस्थित न हों।

क्या पूरी नई पृथ्वी केवल एक ही विशाल नगर होगी?

कुछ लोगों ने भूलवश यूहन्ना के नए यरूशलेम के वर्णन का यह अर्थ निकाल लिया है कि नई पृथ्वी पर केवल यही एक विशाल नगर होगा और उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं होगा। परन्तु यूहन्ना अपने वर्णन में पूरी पृथ्वी का चित्र नहीं प्रस्तुत कर रहे थे। वे केवल एक स्थान का वर्णन कर रहे थे। स्वर्ग की राजधानी संसार का स्थान नहीं लेती; वह केवल पृथ्वी पर आकर स्थापित होती है। प्रकाशितवाक्य के अन्तिम दो अध्यायों को ध्यानपूर्वक पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि नई पृथ्वी केवल एक नगर तक सीमित नहीं होगी।

• यूहन्ना ने लिखा कि जब उन्होंने नए यरूशलेम को स्वर्ग से उतरते देखा, तब वे एक पर्वत पर खड़े थे। "फिर वह [एक स्वर्गदूत] मुझे आत्मा में एक बड़े और ऊँचे पर्वत पर ले गया और उसने मुझे पवित्र नगर, यरूशलेम, को परमेश्वर के पास से स्वर्ग में से उतरते हुए दिखाया" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 10)। ध्यान दीजिए कि यूहन्ना ने एक पर्वत कहा है, उस पर्वत नहीं। इससे संकेत मिलता है कि वहाँ इस पर्वत के अतिरिक्त और भी पर्वत होंगे।

• अपने दर्शन में यूहन्ना ने संसार की विभिन्न जातियों और उनके शासकों को उस राजधानी में आते हुए देखा। इससे भी स्पष्ट होता है कि नई पृथ्वी पर उस नगर के अतिरिक्त और भी स्थान होंगे। "जातियाँ उसकी ज्योति में चलेंगी, और पृथ्वी के राजा तथा शासक अपनी महिमा उसमें लाएँगे... वे जातियों की महिमा, वैभव और सम्मान उस नगर में लाएँगे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 24 से 26)।

एकमात्र विशाल, घनाकार और पारदर्शी नगर को ही हमारा अनन्तकाल का घर मानने का विचार उन स्त्री-पुरुषों के मन में कभी नहीं आया होता जो पुराने नियम में आने वाले जीवन के विषय में प्रकट की गई बातों से परिचित थे। भविष्यद्वक्ताओं के वचनों के कारण यूहन्ना के समकालीन लोग ऐसे भविष्य की प्रतीक्षा कर रहे थे जहाँ सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, वृक्ष, हरी-भरी वनस्पति और पुष्प होंगे। परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा यह प्रतिज्ञा की थी कि वे पृथ्वी का नवीनीकरण करेंगे, न कि उसके स्थान पर कोई दूसरी पृथ्वी बनाएँगे।

• पहली शताब्दी के लोग इस आशा में थे कि प्रभु अदन की वाटिका जैसी परिस्थितियों को फिर से स्थापित करेंगे। उत्पत्ति की पुस्तक उस वाटिका का ऐसा वर्णन करती है जो हमें इस बात की एक झलक देता है कि जब हमारा घर पाप के सभी प्रभावों से मुक्त होकर नया बना दिया जाएगा, तब वह कैसा होगा। वहाँ केवल घनी हरियाली ही नहीं थी, बल्कि सोना, सुगन्धित राल और गोमेद जैसे बहुमूल्य पत्थर भी थे। इससे विभिन्न प्रकार की भूमि, प्राकृतिक संरचनाओं और उन अद्भुत प्राकृतिक दृश्यों का संकेत मिलता है जिन्हें आज हम प्राकृतिक आश्चर्य कहते हैं (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 10 से 14)।

• यूहन्ना ने वर्तमान संसार को आने वाली नई सृष्टि का प्रथम रूप या प्रारम्भिक प्रतिरूप कहा है (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 1)। इसलिए हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि नई पृथ्वी इस वर्तमान पृथ्वी के समान ही होगी, जिसमें आज भी, पाप से प्रभावित होने के बावजूद, जितना वैभव और सौन्दर्य दिखाई देता है, वह सब उससे कहीं अधिक पूर्ण महिमा में विद्यमान होगा।

क्या वहाँ समुद्र, सूर्य और चन्द्रमा नहीं होंगे?

प्रेरित यूहन्ना ने दो ऐसे कथन लिखे हैं जिनकी अक्सर गलत व्याख्या की जाती है। कुछ लोग उनका अर्थ यह निकालते हैं कि हमारे अनन्तकाल के घर में न सूर्य होगा, न चन्द्रमा और न ही समुद्र।

"फिर मैंने एक नया आकाश और नई पृथ्वी देखी, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 1)।

"उस नगर को प्रकाश देने के लिए न सूर्य की आवश्यकता थी और न चन्द्रमा की, क्योंकि परमेश्वर की महिमा ही उसे प्रकाशित करती थी, और मेम्ना उसका दीपक है" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 23)।

एक बार फिर, हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि इन शब्दों का अर्थ उन मूल पाठकों के लिए क्या था, जिन्होंने सबसे पहले इन्हें पढ़ा था। वे समझते थे कि यूहन्ना किसी ऐसे स्थान का वर्णन नहीं कर रहे थे जहाँ न सूर्य हो और न समुद्र। वे जानते थे कि वे उसी पृथ्वी के विषय में लिख रहे थे जिसे वे जानते थे और जिससे वे प्रेम करते थे—एक ऐसी पृथ्वी जो भ्रष्टता से मुक्त होकर अदन की वाटिका जैसी स्थिति में पुनर्स्थापित कर दी जाएगी।

क्या अब समुद्र नहीं रहेगा?

जब हम "समुद्र भी न रहा" यह वाक्य सुनते हैं, तो सबसे पहले हमारे मन में यह विचार आ सकता है कि अब न समुद्र तट की छुट्टियाँ होंगी और न ही समुद्री यात्राएँ। परन्तु यूहन्ना के समय के लोगों की प्रतिक्रिया बिल्कुल अलग होती। उनके लिए समुद्र एक भयानक बाधा था, ऐसा शत्रु जो भारी विनाश ला सकता था।

उस समय नाविक लकड़ी के जहाज़ों में समुद्र की यात्रा करते थे। उनके पास न रडार था और न ही कोई आधुनिक दिशा-निर्देशन प्रणाली, जो उन्हें तूफ़ानों या जल के भीतर छिपी हुई चट्टानों और अन्य खतरों से बचा सके। समुद्र तट से दूर निकल जाना अपने प्राणों को जोखिम में डालने के समान था। आज यद्यपि नूह के जलप्रलय का शेष जल पृथ्वी के लगभग दो-तिहाई भाग को ढके हुए है, फिर भी आप और मैं कुछ ही घंटों में एक बड़े विमान द्वारा सुरक्षित रूप से महासागरों को पार कर सकते हैं। यूहन्ना के समय में ऐसी बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

जब यूहन्ना ने लिखा, "समुद्र भी न रहा," तो उनका आशय यह नहीं था कि कोई समुद्र बिल्कुल नहीं होगा, बल्कि यह था कि समुद्र वैसा नहीं रहेगा जैसा हम आज जानते हैं। सृष्टि के अन्य सभी भागों की तरह समुद्र भी पाप के कारण प्रभावित और विकृत हो गया है। परन्तु जब यीशु लौटेंगे, तब उसका भी उद्धार होगा और वह अपनी मूल सिद्ध अवस्था में पुनर्स्थापित कर दिया जाएगा।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि नई पृथ्वी पर विशाल जलराशियाँ विद्यमान होंगी। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दीजिए—

• परमेश्वर ने स्वयं समुद्रों की रचना की थी। उनका अस्तित्व पाप के संसार में आने से पहले ही था, और वे उस घर का एक भाग हैं जिसे परमेश्वर ने अपने परिवार के लिए बनाया। "फिर परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए, ताकि सूखी भूमि दिखाई दे।' और ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने सूखी भूमि का नाम 'पृथ्वी' रखा और इकट्ठे हुए जल का नाम 'समुद्र' रखा। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 9 से 10)।

• पवित्रशास्त्र बताता है कि अदन की वाटिका से एक महान नदी निकलती थी, जो आगे चलकर चार बड़ी नदियों में विभाजित हो जाती थी (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 10)। नदियाँ किसी न किसी बड़े जलाशय में जाकर मिलती हैं। इससे संकेत मिलता है कि मनुष्य के पाप करने से पहले भी पृथ्वी पर विशाल जलराशियाँ विद्यमान थीं।

• भविष्यद्वक्ता यशायाह ने नई पृथ्वी का वर्णन करते हुए समुद्रों, जहाज़ों और द्वीपों का भी उल्लेख किया है। "समुद्रों की सम्पत्ति तेरे पास लाई जाएगी" (यशायाह अध्याय 60 आयत 5)।

और, "निश्चय ही द्वीप मेरी बाट जोहेंगे; सबसे आगे तर्शीश के जहाज़ होंगे" (यशायाह अध्याय 60 आयत 9)।

• नए यरूशलेम में यूहन्ना ने जिस नदी को देखा, वह भी कहीं न कहीं जाकर मिलती होगी। यह भी इस बात का संकेत है कि नई पृथ्वी पर कोई विशाल जलराशि अवश्य होगी (प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 आयत 1)।

• वर्तमान पृथ्वी, जो आने वाली नई पृथ्वी का प्रारम्भिक प्रतिरूप है, विशाल झीलों से भी परिपूर्ण है, जो वास्तव में मीठे जल के महासागरों के समान हैं। इसलिए यह मानना कठिन है कि जब पृथ्वी भ्रष्टता और मृत्यु से मुक्त होकर पुनर्स्थापित की जाएगी, तब ये सब नष्ट हो जाएँगे।

क्या वहाँ सूर्य और चन्द्रमा नहीं होंगे?

यूहन्ना ने कभी यह नहीं कहा कि नई पृथ्वी पर सूर्य और चन्द्रमा नहीं होंगे। उन्होंने केवल इतना कहा कि उस राजधानी को प्रकाश देने के लिए सूर्य या चन्द्रमा के प्रकाश की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि वहाँ परमेश्वर की महिमा का तेज प्रत्यक्ष रूप से प्रकाशित रहेगा। जिन लोगों ने परमेश्वर की महिमा का दर्शन किया है, उन्होंने उसका वर्णन सूर्य के प्रकाश से भी अधिक तेजस्वी बताया है (प्रेरितों के काम अध्याय 26 आयत 13)।

प्राचीन समय के लोगों के लिए यह विचार कि अन्धकार का अन्त हो जाएगा, अत्यन्त आनन्ददायक और आशा से भर देने वाला समाचार था। हमारे लिए रात भयावह नहीं लगती, क्योंकि हम बिजली के युग में रहते हैं। अँधेरा होने पर भी वास्तव में पूर्ण अन्धकार नहीं होता। आज हमारे लिए यह समझना कठिन है कि बिजली के आविष्कार से पहले रात का उतरना क्या अर्थ रखता था। सूर्यास्त के बाद अपने घर से बाहर या नगर के फाटकों के बाहर होना बड़े खतरे की बात थी। परन्तु जब संसार नया बना दिया जाएगा, तब ऐसी कोई भी वस्तु नहीं रहेगी जो किसी प्रकार की हानि पहुँचाए या भय उत्पन्न करे, यहाँ तक कि घना और निरन्तर बना रहने वाला अन्धकार भी नहीं।

इसलिए यह तथ्य कि "[नगर के] फाटक दिन के अन्त में कभी बन्द नहीं किए जाएँगे, क्योंकि वहाँ रात नहीं होगी," यूहन्ना के पाठकों के लिए एक महान प्रतिज्ञा थी, जिसने उनके हृदयों में गहरी आशा उत्पन्न की (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 25)।

यद्यपि उस राजधानी में रात नहीं होगी, फिर भी नई पृथ्वी के अन्य भागों में रात होगी। यदि ऐसा न हो, तो हम चन्द्रमा, तारों, ग्रहों और आकाशगंगाओं को देख ही नहीं पाएँगे। प्रभु

ने इन सबकी रचना इसलिए की है कि हम उन्हें देखें, उनकी शोभा का आनन्द लें और उनकी महिमा के द्वारा अपने सृष्टिकर्ता की महानता को पहचानें।

यूहन्ना के पाठकों ने उनके शब्दों को परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा के सन्दर्भ में समझा, जिसमें उन्होंने सृष्टि को पाप, भ्रष्टता और मृत्यु की दासता से छुड़ाकर पृथ्वी को अपने और अपने परिवार के लिए एक उपयुक्त और अनन्तकालीन निवास-स्थान के रूप में पुनर्स्थापित करने का वचन दिया था। इसलिए उन्होंने प्रेरित के इस दर्शन को इस स्मरण के रूप में ग्रहण किया कि प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के प्रति सदैव विश्वासयोग्य हैं, और एक दिन उनकी उद्धार की योजना पूर्ण रूप से पूरी होगी। वे जानते थे कि जो जीवन उनके सामने है, वह किसी हानि का नहीं, बल्कि अनन्त लाभ का जीवन है।

यूहन्ना का यह वर्णन ही हमारे और इस पृथ्वी के भविष्य के विषय में पवित्रशास्त्र का एकमात्र प्रकाशन नहीं है। बाइबल हमारे आने वाले घर के विषय में इससे भी कहीं अधिक बातें प्रकट करती है। आइए, अब हम उन सच्चाइयों का और गहराई से अध्ययन करें।

10

भविष्यद्वक्ता नई पृथ्वी के बारे में क्या कहते हैं।

यूहन्ना का नई पृथ्वी का दर्शन मुख्य रूप से केवल एक नगर—नए यरूशलेम—पर केन्द्रित है। उन्हें सम्पूर्ण पृथ्वी के विषय में अधिक विवरण नहीं दिया गया। इसलिए हमारे भविष्य के घर के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के लेखों की ओर देखना होगा। वे स्पष्ट करते हैं कि पृथ्वी हमारे लिए कोई अपरिचित स्थान नहीं होगी। भविष्यद्वक्ता ऐसी दुनिया का चित्र प्रस्तुत करते हैं जो नई तो होगी, परन्तु परिचित भी होगी; परिवर्तित तो होगी, परन्तु फिर भी पहचानी जा सकेगी। परमेश्वर के इन सेवकों ने प्रकट किया कि नई पृथ्वी पर उसके स्वरूप में भी निरन्तरता होगी और वहाँ होने वाली गतिविधियों में भी।

नई, फिर भी परिचित।

पिछले अध्याय में मैंने बताया था कि नए यरूशलेम, अर्थात् राजधानी के विषय में यूहन्ना के वर्णन की गलत व्याख्या के कारण कुछ लोग नई पृथ्वी की कल्पना एक विचित्र, घनाकार, पारदर्शी संसार के रूप में करते हैं, जो केवल सोने और स्फटिक से बना है तथा जहाँ न सूर्य होगा और न चन्द्रमा। परन्तु पुराने नियम के लेखक बताते हैं कि परमेश्वर की स्वर्ग और पृथ्वी के लिए जो मूल योजना थी, वही बनी रहेगी।

• भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जकर्याह के समय में प्रचलित एक भजन में यह घोषित किया गया है कि सूर्य, चन्द्रमा और तारे सदा बने रहेंगे।

"हे सूर्य और चन्द्रमा, उसकी स्तुति करो! हे सब चमकने वाले तारों, उसकी स्तुति करो! हे सर्वोच्च आकाशों, उसकी स्तुति करो! हे आकाश के ऊपर के जलों, उसकी स्तुति करो!... क्योंकि उसने आज्ञा दी और वे अस्तित्व में आ गए। उसने उन्हें सदा-सर्वदा के लिए स्थिर

कर दिया है; उसकी व्यवस्था कभी टाली नहीं जाएगी" (भजन संहिता अध्याय 148 आयत 3 से 6)।

• इस्राएल के राजा दाऊद ने अपने पुत्र और उत्तराधिकारी सुलैमान के लिए जो प्रार्थना की, उसे भी लिपिबद्ध किया। उस प्रार्थना के बीच में दाऊद भविष्यवाणी करने लगे कि एक दिन यीशु पृथ्वी पर राजा के रूप में राज्य करेंगे। इस भविष्यवाणी में जिस संसार का चित्र प्रस्तुत किया गया है, वह हमारे लिए परिचित है—जहाँ आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नदियाँ, समुद्र, समुद्रतट और द्वीप होंगे।

"हे प्रभु, जब तक सूर्य चमकता रहेगा और जब तक चन्द्रमा आकाश में बना रहेगा, लोग तेरा भय मानते रहेंगे—हाँ, सदा-सर्वदा!... वह [यीशु] समुद्र से समुद्र तक और फरात नदी से लेकर पृथ्वी की छोर तक राज्य करेगा" (भजन संहिता अध्याय 72 आयत 5 से 8)।

"भूमध्यसागर के तट के राजा—तर्शीश और द्वीपों के राजा—और शेबा तथा सबा [अरब] के राजा उसके लिए भेंट लाएँगे। हाँ, सब राजा उसके सामने दण्डवत् करेंगे और सब जातियाँ उसकी सेवा करेंगी" (भजन संहिता अध्याय 72 आयत 10)।

पुराने नियम के अन्य भविष्यद्वक्ता भी यह प्रकट करते हैं कि पृथ्वी तब भी पृथ्वी जैसी ही दिखाई देगी, और परमेश्वर का परिवार परिचित गतिविधियों में संलग्न रहेगा। उन्होंने ऐसे स्त्री-पुरुषों का वर्णन किया है जो घर बनाएँगे, दाख की बारियाँ लगाएँगे, फसल काटेंगे और अपने मित्रों तथा प्रियजनों के साथ भोजन, पेय, हँसी और बातचीत से भरे उत्सवों में सहभागिता करेंगे (टिप्पणी 6 देखें)।

"देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न कर रहा हूँ... मेरी सृष्टि के कारण सदा आनन्दित और मगन रहो... उन दिनों लोग अपने बनाए हुए घरों में निवास करेंगे और अपनी लगाई हुई दाख की बारियों का फल खाएँगे" (यशायाह अध्याय 65 आयत 17 से 21)

"हर व्यक्ति अपनी दाखलता और अपने अंजीर के वृक्ष के नीचे निडर होकर निवास करेगा, क्योंकि डरने का कोई कारण नहीं रहेगा" (मीका अध्याय 4 आयत 4)।

"उस दिन तुममें से प्रत्येक अपने पड़ोसी को अपनी दाखलता और अपने अंजीर के वृक्ष के नीचे आने का निमंत्रण देगा, ताकि वह तुम्हारी शान्ति और समृद्धि में सहभागी हो सके" (जकर्याह अध्याय 3 आयत 10)।

"यहोवा की यह वाणी है, 'वे दिन आने वाले हैं जब अन्न और अंगूर इतनी प्रचुरता से उत्पन्न होंगे कि उनकी कटाई पूरी होने से पहले ही अगली फसल तैयार होने लगेगी... मेरे

लोग दाख की बारियाँ और बाग लगाएँगे; वे अपनी उपज खाएँगे और अपनी दाखमधु पिएँगे'" (आमोस अध्याय 9 आयत 13 से 14)।

"इस पर्वत पर सेनाओं का यहोवा सब जातियों के लिए उत्तम भोजन का एक महान भोज तैयार करेगा, और पुराने उत्तम दाखमधु का भी भोज देगा... इसी पर्वत पर वह उस आवरण को नष्ट कर देगा जो सब जातियों पर पड़ा हुआ है। वह मृत्यु का सर्वदा के लिए अन्त कर देगा। प्रभु यहोवा सब लोगों की आँखों से आँसू पोंछ डालेगा" (यशायाह अध्याय 25 आयत 6 से 8)।

सृष्टि का पुनर्स्थापन।

संभव है कि आप सोच रहे हों, "यह कैसे सम्भव हो सकता है? यह तो बहुत सामान्य और कम आध्यात्मिक जीवन जैसा लगता है। क्या सचमुच हमारा अनन्तकाल का जीवन ऐसा होगा?"

परन्तु वास्तव में हम इन्हीं बातों के लिए रचे गए थे। उद्धार में परमेश्वर का उद्देश्य किसी बिल्कुल नई योजना की शुरुआत करना नहीं है, बल्कि उस मूल उद्देश्य को पुनः स्थापित करना है जिसे उन्होंने आरम्भ से ही ठहराया था—उस समय, जब पाप ने न तो उनके परिवार को बिगाड़ा था और न ही हमारे घर को।

इसी कारण, यदि हम यह जानना चाहते हैं कि नई और पुनर्स्थापित पृथ्वी कैसी होगी और वहाँ हम क्या करेंगे, तो हमें उस संसार की ओर देखना चाहिए जो पाप के आने से पहले था।

भविष्यद्वक्ता मूसा ने उत्पत्ति की पुस्तक के आरम्भिक अध्यायों में पाप से पहले की सृष्टि के विषय में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी दी है। उन्होंने लिखा कि प्रभु परमेश्वर ने एक ऐसी पृथ्वी की रचना की जिसमें समुद्र, आकाश और भूमि थी, और भूमि हरी-भरी घास, विविध प्रकार की वनस्पतियों तथा फल देने वाले वृक्षों से भरपूर थी।

परमेश्वर ने मनुष्य के इस निवास-स्थान को हर प्रकार के पक्षियों, पशुओं और समुद्री जीवों से भर दिया, और पृथ्वी के चारों ओर सूर्य, चन्द्रमा तथा तारों की व्यवस्था की। इनमें से किसी भी वस्तु का अन्त नहीं होगा। इसके विपरीत, इन सबका नवीनीकरण किया जाएगा, और वे उसी सृष्टि का पुनर्जीवित तथा महिमामय रूप बन जाएँगी जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आदि में रचा था।

भूमि की देखभाल और उसकी खेती।

प्रभु ने मनुष्य को इस प्रकार बनाया कि वह अर्थपूर्ण और सन्तोष देने वाले कार्य में लगा रहे। जब हम अदन की वाटिका में आदम के विषय में मूसा का वर्णन पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भूमि की देखभाल और उसकी खेती करना पाप के संसार में आने से पहले ही मनुष्य के लिए परमेश्वर की मूल योजना का एक भाग था।

"यहोवा परमेश्वर ने पूर्व दिशा में अदन में एक वाटिका लगाई, और वहाँ उस मनुष्य को रखा जिसे उन्होंने बनाया था। यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब प्रकार के ऐसे वृक्ष उगाए जो देखने में मनोहर और भोजन के लिए उत्तम थे... फिर यहोवा परमेश्वर ने उस मनुष्य को लेकर अदन की वाटिका में रखा, ताकि वह उसकी खेती करे और उसकी देखभाल करे" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 8 से 15)।

परमेश्वर ने वनस्पति-जगत की रचना पूर्ण विकसित अवस्था में की थी, ताकि जब मनुष्य पृथ्वी पर आए, तब उसके लिए फसल पहले से उपलब्ध हो। क्योंकि वाटिका स्वाभाविक रूप से अत्यन्त उर्वर थी और उसमें सब कुछ प्रचुर मात्रा में बढ़ता था, इसलिए आदम का कार्य उसकी देखभाल करना था ताकि अत्यधिक बढ़ने वाली वनस्पति को व्यवस्थित रखा जा सके।

परन्तु केवल यही कारण नहीं था कि परमेश्वर ने आदम को उस वाटिका की देखभाल करने का दायित्व दिया। प्रभु परमेश्वर ने अपने परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था इस प्रकार की थी कि सीमित संसार में भी असीमित आपूर्ति बनी रहे। उन्होंने कहा, "देखो, मैंने सारी पृथ्वी पर हर प्रकार के बीज उत्पन्न करने वाले पौधे और सब प्रकार के फलदार वृक्ष तुम्हें भोजन के लिए दिए हैं" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 29)।

बीज उत्पन्न करने वाले पौधों में यह सामर्थ्य है कि यदि अन्तिम बाल से प्राप्त बीज को फिर से बो दिया जाए, तो वे सदा फल, सब्जियाँ और अन्न उत्पन्न करते रह सकते हैं। दूसरे शब्दों में, सीमित व्यवस्था में भी यदि आपूर्ति का स्रोत निरन्तर बना रहे, तो किसी न किसी को—जैसे आदम को—बीज बोना और फसल काटना आवश्यक होगा।

बीज बोने और फसल काटने के साथ अनेक अन्य आवश्यक कार्य भी जुड़े होते हैं, जैसे खेती के लिए आवश्यक औज़ार बनाना, उपयुक्त वस्त्र तैयार करना, घर और भण्डार-गृह बनाना तथा भूमि की उपज को एकत्र करने, सुरक्षित रखने और उपयोग में लाने की व्यवस्थाएँ विकसित करना। जैसे-जैसे आदम और हव्वा के बच्चे हुए और पृथ्वी की जनसंख्या बढ़ती गई, ये सभी कार्य भी विकसित होते गए। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि भविष्यद्वक्ताओं ने उस समय की भविष्यवाणी की जब पृथ्वी नई बना दी जाएगी और अदन जैसी परिस्थितियाँ पुनः स्थापित होंगी—जहाँ खेती होगी, घर होंगे, परिवार होंगे और आनन्द के भोज होंगे। यही तो आरम्भ से ही प्रभु की योजना थी।

नई पृथ्वी पर समय और ऋतुएँ।

यह तथ्य कि मनुष्य नई पृथ्वी पर भी खेती करेंगे, इस बात का संकेत है कि हमारे अनन्तकाल के घर में समय का भी महत्व बना रहेगा। सीमित संसार में असीमित आपूर्ति की व्यवस्था के अन्तर्गत बोने और काटने का एक निरन्तर चक्र चलता है, और उसके लिए समय का ज्ञान आवश्यक होता है।

सूर्य और चन्द्रमा का बने रहना भी इस बात का प्रमाण है कि समय सदैव हमारे जीवन का एक भाग रहेगा। सृष्टि के आरम्भ से ही परमेश्वर ने इन आकाशीय ज्योतियों को इसी उद्देश्य के लिए नियुक्त किया है।

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के विस्तार में ज्योतियाँ हों, जो दिन और रात को अलग करें। वे चिन्हों के लिए, ऋतुओं, दिनों और वर्षों को ठहराने के लिए हों'" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 14)।

परन्तु बात केवल इतनी ही नहीं है। मूसा ने पाप से पहले की पृथ्वी का वर्णन करते हुए लिखा कि आकाश की इन ज्योतियों को केवल दिन, वर्ष और समय की गणना के लिए ही नहीं, बल्कि ऋतुओं को निर्धारित करने के लिए भी बनाया गया था। उन्होंने आगे यह भी लिखा कि जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक ऋतुओं का क्रम भी बना रहेगा।

"जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने का समय, ठण्ड और गर्मी, ग्रीष्म और शीत ऋतु, दिन और रात कभी बन्द न होंगे" (उत्पत्ति अध्याय 8 आयत 22)।

कुछ लोगों ने इस विचार का विरोध किया है कि नई पृथ्वी पर भी ऋतुएँ होंगी। उनके अधिकांश तर्क सृष्टिवादियों द्वारा लिखी गई पुस्तकों और लेखों पर आधारित होते हैं। ये वे स्त्री-पुरुष हैं जो वैज्ञानिक समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं और बाइबल में वर्णित सृष्टि के वृत्तान्त पर विश्वास करते हैं। उनमें से बहुत-से लोगों ने आदम के पाप और जलप्रलय से पहले की पृथ्वी की भूवैज्ञानिक तथा जलवायुविज्ञान सम्बन्धी स्थिति पर विस्तार से लिखा है। मुझे उनके ये अध्ययन अत्यन्त रोचक लगते हैं और मैं स्वयं भी उन्हें पढ़ना पसन्द करता हूँ।

अनेक सृष्टिविज्ञानियों का विश्वास है कि प्रारम्भिक समय में सम्पूर्ण पृथ्वी के चारों ओर जलवाष्प की एक विशाल परत फैली हुई थी। उनका मानना है कि इस परत के कारण अत्यन्त प्रभावशाली हरितगृह प्रभाव उत्पन्न होता था, जिससे पूरी पृथ्वी पर एक समान, सुखद और गर्म जलवायु बनी रहती थी। वे यह भी मानते हैं कि जब संसार का नवीनीकरण होगा,

तब ऐसी ही परिस्थितियाँ फिर से स्थापित होंगी और वर्तमान पृथ्वी पर दिखाई देने वाले ऋतुओं के परिवर्तन समाप्त हो जाएँगे।

यद्यपि मैं उनके दृष्टिकोण का सम्मान करता हूँ, फिर भी पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक ऋतुएँ भी बनी रहेंगी। हाल के वर्षों में कुछ सृष्टिविज्ञानियों ने भी इस विषय पर अपने विचारों में संशोधन किया है (टिप्पणी 7 देखें)।

एक बार फिर हमें सम्पूर्ण चित्र को ध्यान में रखना चाहिए। परमेश्वर उसी घर को पुनर्स्थापित कर रहे हैं जिसे उन्होंने अपने परिवार के लिए बनाया था, और ऋतुएँ भी आरम्भ से ही उनके पुत्रों और पुत्रियों के लिए की गई उनकी उत्तम व्यवस्था का एक भाग थीं। आदम के पाप के कारण आज ऋतुओं के कुछ पहलू मनुष्य के लिए कठिनाई का कारण बन गए हैं। पृथ्वी पर आए भ्रष्टता के श्राप के कारण वायु की विभिन्न धाराएँ आपस में टकराती हैं, जिससे विनाशकारी आँधियाँ और तूफ़ान उत्पन्न होते हैं। इसी कारण कहीं भीषण गर्मी पड़ती है जो सूखे से फसलों को नष्ट कर देती है, तो कहीं कड़ाके की ठण्ड और बर्फ़ सड़कों को ढक देती है और जीवन को संकट में डाल देती है।

परन्तु जब पृथ्वी का नवीनीकरण होगा, तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर ऐसी ऋतु-व्यवस्था को पुनः स्थापित करने में पूर्णतः समर्थ हैं जिसमें इस प्रकार की विनाशकारी और कभी-कभी प्राणघातक मौसम सम्बन्धी विकृतियाँ न हों। जब भ्रष्टता पूरी तरह हटा दी जाएगी, तब जलवायु के परिवर्तन किसी प्रकार की विपत्ति का कारण नहीं बनेंगे। तब ऋतुएँ, पाप के प्रवेश से पहले की भाँति, केवल आनन्द और प्रसन्नता का स्रोत होंगी।

यद्यपि मैं नई पृथ्वी पर जीवन के प्रत्येक पक्ष को पूरी तरह समझा नहीं सकता, फिर भी जिन बातों को हम नहीं जानते, उन्हें उन बातों पर हावी नहीं होने देना चाहिए जिन्हें हम स्पष्ट रूप से जानते हैं। परमेश्वर का वचन अन्तिम और निश्चित है। हमारे सामने जो भविष्य है, वह हानि का नहीं, बल्कि लाभ का है; वह पहले से कहीं अधिक उत्तम है, कमतर नहीं।

हर ऋतु का अपना अलग सौन्दर्य होता है। ऐसा कौन है जिसे शरद ऋतु की ताज़गी भरी सुबह और रंग-बिरंगे होते पत्तों का मनोहर दृश्य आनन्दित न करता हो? या फिर कौन ऐसा है जिसने रातभर गिरी हुई कोमल बर्फ़ से सजे शीतकालीन दृश्य को देखकर प्रसन्नता का अनुभव न किया हो? यदि हमारे भविष्य के घर में इस प्रकार के अद्भुत सौन्दर्य ही न रहें, तो क्या नई पृथ्वी वास्तव में वर्तमान पृथ्वी से अधिक उत्तम कहलाएगी?

वर्षा का आशीष।

यद्यपि पवित्रशास्त्र आदम के पाप करने से पहले की पृथ्वी की जलवायु के विषय में बहुत अधिक विस्तृत जानकारी नहीं देता, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु ने फसल उगाने की प्रक्रिया में वर्षा को भी अपनी योजना का एक भाग बनाया था। उत्पत्ति की पुस्तक का एक अंश इस बात की ओर संकेत करता है। ध्यान दीजिए कि वहाँ फसल, वर्षा और मनुष्य के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध बताया गया है।

"यह आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त है, जब यहोवा परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। उस समय तक मैदान का कोई भी झाड़ पृथ्वी पर नहीं उगा था और न ही खेत की कोई वनस्पति अंकुरित हुई थी, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने अभी तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजी थी, और भूमि की खेती करने के लिए कोई मनुष्य भी नहीं था" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 4 से 5)।

यह स्पष्ट है कि वर्षा उत्पन्न करने वाला प्राकृतिक चक्र भी आदम के पाप के परिणामों से प्रभावित हुआ है। इसी कारण कभी मूसलाधार वर्षा होती है और विनाशकारी बाढ़ आ जाती है। यद्यपि वर्षा कभी-कभी विनाश का कारण बनती है, फिर भी बाइबल के अनेक स्थानों पर वर्षा को परमेश्वर के आशीष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब पृथ्वी भ्रष्टता और मृत्यु की दासता से पूरी तरह मुक्त कर दी जाएगी, तब वर्षा फिर से उसी उद्देश्य को पूरा करेगी जिसके लिए उसकी रचना की गई थी, और वह एक बार फिर सम्पूर्ण मानवजाति के लिए आशीष का कारण बनेगी।

"तौभी [परमेश्वर] ने अपने आपको बिना गवाही के नहीं छोड़ा, क्योंकि वह भलाई करता रहा, और स्वर्ग से वर्षा तथा फलवन्त ऋतुएँ देता रहा, और हमारे हृदयों को भोजन और आनन्द से भरता रहा" (प्रेरितों के काम अध्याय 14 आयत 17)।

"वह आकाश को बादलों से ढाँक देता है, पृथ्वी के लिए वर्षा की व्यवस्था करता है और पर्वतों पर हरी-हरी घास उगाता है" (भजन संहिता अध्याय 147 आयत 8)।

यद्यपि पुराने नियम के ये भविष्यद्वक्ता सदियों पहले जीवित थे, फिर भी उनके शब्द आज भी हमसे बातें करते हैं। उनके वचन हमें मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में अत्यन्त मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं। हमारा अनन्तकाल का घर कोई अपरिचित या इस संसार

से बिल्कुल भिन्न स्थान नहीं होगा। वह यही पृथ्वी होगी, जिसे हम जानते हैं और जिससे हम प्रेम करते हैं—एक ऐसी पृथ्वी जो भ्रष्टता और मृत्यु के श्राप से पूरी तरह मुक्त कर दी जाएगी और पुनः वैसी बना दी जाएगी जैसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आरम्भ से उसके लिए योजना बनाई थी।

प्रभु के भविष्यद्वक्ताओं के अनुसार, इस वर्तमान जीवन और आने वाले जीवन के बीच स्पष्ट निरन्तरता बनी रहेगी। केवल पृथ्वी के प्राकृतिक दृश्य और उसका वातावरण ही हमें अपने घर जैसा अनुभव नहीं कराएँगे, बल्कि हम वहाँ भी अनेक परिचित और आनन्ददायक कार्यों में लगे रहेंगे।

आने वाले कुछ अध्यायों में हम और अधिक विस्तार से देखेंगे कि नई पृथ्वी पर स्त्री और पुरुष किस प्रकार का जीवन बिताएँगे और वे कौन-कौन से कार्य करेंगे।



नई पृथ्वी पर राष्ट्र, संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ।

अदन की वाटिका के पृथ्वी पर फिर से स्थापित होने की बात सुनकर कुछ लोगों को ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हम फिर से अंजीर के पत्ते पहनेंगे, वृक्षों से फल तोड़कर खाएँगे और भूमि पर पड़ी चीड़ की सूइयों पर सोएँगे। परन्तु हमारे भविष्य के बारे में ऐसी कल्पनाएँ परमेश्वर के वचन की शिक्षा के विपरीत हैं। जीवन नया तो होगा, परन्तु परिचित भी होगा; परिवर्तित तो होगा, परन्तु फिर भी पहचाना जा सकेगा। इसका कारण यह है कि नई पृथ्वी पर भी राष्ट्र, संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ बनी रहेंगी।

राष्ट्र और जातीय पहचान।

जातीय पहचान परमेश्वर द्वारा दी गई हमारी विशिष्टता का एक भाग है। जब परमेश्वर ने आदम की सृष्टि की, तब पृथ्वी के सभी लोग और सभी जातियाँ उसी में समाहित थीं। जैसा लिखा है,

"उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ उत्पन्न कीं, ताकि वे सारी पृथ्वी पर निवास करें" (प्रेरितों के काम अध्याय 17 आयत 26)।

यहाँ जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "जातियाँ" या "राष्ट्र" किया गया है, उसका अर्थ है—"लोगों का समूह, जाति, एक साथ रहने वाले लोग।" यह भिन्न-भिन्न जातीय पहचान मृत्यु के बाद भी बनी रहती है।

• प्रेरित यूहन्ना ने जब स्वर्ग का दर्शन किया, तब उन्होंने विभिन्न जातियों और राष्ट्रों के लोगों को वहाँ देखा।

"इसके बाद मैंने देखा, और देखो, एक ऐसी बड़ी भीड़ थी जिसे कोई गिन नहीं सकता था। वे हर राष्ट्र, हर गोत्र, हर जाति और हर भाषा के लोग थे, और वे सिंहासन के सामने खड़े थे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 आयत 9)।

• यूहन्ना ने नई पृथ्वी पर भी विभिन्न लोगों के समूहों को देखा। उन्होंने उन्हें "जातियाँ" कहा और लिखा कि उनके शासक पृथ्वी की राजधानी, नए यरूशलेम, में आते हैं।

"जातियाँ उसकी ज्योति में चलेंगी, और पृथ्वी के राजा अपनी महिमा उसमें लाएँगे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 24)।

राज्यों का एक महान राज्य।

यीशु मसीह अपने प्रत्यक्ष राज्य की स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर फिर से आएँगे। उनका राज्य ऐसा महान राज्य होगा जिसके अधीन अनेक राज्य होंगे और जो सब उनके अधिकार के अधीन होंगे। पवित्रशास्त्र प्रकट करता है कि यीशु उन लोगों पर राज्य करेंगे जो स्वयं भी राज्य करेंगे।

• पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने इसकी भविष्यवाणी की थी।

"वह [प्रभु] समुद्र से समुद्र तक और फरात नदी से लेकर पृथ्वी की छोर तक राज्य करेगा... तर्शीश और दूर-दूर के तटों के राजा उसके लिए भेंट लाएँगे... सब राजा उसके सामने दण्डवत् करेंगे और सब जातियाँ उसकी सेवा करेंगी" (भजन संहिता अध्याय 72 आयत 8 से 11)।

• यूहन्ना ने भी अपने दर्शन में यही देखा।

"संसार के राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह के राज्य बन गए हैं, और वह युगानुयुग राज्य करेगा" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 आयत 15)।

• यूहन्ना ने यह भी लिखा कि स्वर्ग में जिन अनेक जातियों और लोगों को उन्होंने देखा, वे पृथ्वी पर लौटकर राज्य करने की आशा रखते हैं। उन्होंने उन्हें यह गीत गाते हुए सुना—

"हे यीशु, तूने अपने लहू के द्वारा हमें हर गोत्र, हर भाषा, हर जाति और हर राष्ट्र में से परमेश्वर के लिए मोल लिया है... और हम पृथ्वी पर राज्य करेंगे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 9 से 10)।

पृथ्वी पर राज्य करना।

जब प्रभु अपने राज्य की स्थापना करेंगे, तब वे अपने प्रति विश्वासयोग्य सेवा करने वाले उद्धार पाए हुए कुछ लोगों को उनके प्रतिफल के रूप में शासन करने के पद सौंपेंगे। परन्तु पृथ्वी पर राज्य करने का अर्थ केवल इतना ही नहीं है। पुराने नियम के महान भविष्यद्वक्ता

दानिय्येल को परमेश्वर के प्रत्यक्ष राज्य की स्थापना के विषय में बहुत-सी बातें दिखाई गई थीं। उन्होंने पहले से देखा कि जब यीशु इस संसार पर अपना अधिकार स्थापित करेंगे, तब उनके उद्धार पाए हुए लोगों को पृथ्वी के राज्यों का प्रभुत्व और वैभव प्रदान किया जाएगा।

"परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को प्राप्त करेंगे, और वे उस राज्य के अधिकारी होकर सदा-सर्वदा उसके स्वामी बने रहेंगे" (दानिय्येल अध्याय 7 आयत 18)।

"और समस्त आकाश के नीचे के राज्य, उनका प्रभुत्व और उनका वैभव परमप्रधान के पवित्र लोगों को दिया जाएगा। उसका राज्य अनन्तकाल का राज्य होगा, और सब राज्य उसकी सेवा करेंगे तथा उसकी आज्ञा का पालन करेंगे" (दानिय्येल अध्याय 7 आयत 27)।

प्रभुत्व के लिए रचे गए।

नई पृथ्वी पर जीवन के सन्दर्भ में "प्रभुत्व" का वास्तविक अर्थ समझने के लिए हमें एक बार फिर आरम्भ की ओर लौटना होगा। बाइबल की शुरुआत इस घोषणा से होती है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया।

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'आओ, हम मनुष्य को अपने स्वरूप और अपनी समानता के अनुसार बनाएँ; और वे प्रभुत्व करें...'" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 26)।

"प्रभुत्व" शब्द का अर्थ है—शासन करना या अधिकार रखना। सामान्यतः हम इस शासन को केवल शैतान या अन्य मनुष्यों पर अधिकार रखने के अर्थ में समझते हैं।

• परन्तु शैतान पर शासन करना मनुष्य की मूल सृष्टिगत बुलाहट का भाग नहीं है। यह केवल वर्तमान जीवन में उत्पन्न हुई एक अस्थायी आवश्यकता है, जो शैतान के विद्रोह और आदम के पतन के कारण सामने आई। हमारे भविष्य के घर में शैतान पर राज्य करने का कोई प्रश्न ही नहीं होगा, क्योंकि वह सदा के लिए मनुष्यों के सम्पर्क से दूर कर दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 आयत 10)।

• इसी प्रकार "प्रभुत्व" का अर्थ मनुष्यों पर शासन करना भी नहीं है। जब आदम और हव्वा को यह अधिकार दिया गया था, तब पृथ्वी पर कोई अन्य मनुष्य था ही नहीं। वास्तव में, उस समय सम्पूर्ण मानवजाति आदम में ही समाहित थी। इसलिए जब परमेश्वर ने प्रभुत्व की आज्ञा दी, तब यह अधिकार एक साथ सम्पूर्ण मानवजाति को प्रदान किया गया।

वास्तव में, "प्रभुत्व" का सम्बन्ध मनुष्य और शेष सृष्टि के बीच के सम्बन्ध से है। जब हम इस पूरे पद को पढ़ते हैं, तब यह बात स्पष्ट हो जाती है।

• जब प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को प्रभुत्व प्रदान किया, तब उन्होंने यह भी कहा, "वे समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, घरेलू पशुओं, सारी पृथ्वी और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जीव-जन्तुओं पर प्रभुत्व करें" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 26)।

• भजनकार दाऊद ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से प्रभु की इसी आज्ञा को इन शब्दों में व्यक्त किया, "तूने अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं पर हमें अधिकार दिया है। तूने सब कुछ हमारे अधीन कर दिया है—भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, सब जंगली पशु, आकाश के पक्षी, समुद्र की मछलियाँ और वे सब जीव जो समुद्र की धाराओं में चलते-फिरते हैं" (भजन संहिता अध्याय 8 आयत 6 से 8)।

उत्पत्ति की पुस्तक आगे बताती है कि जब परमेश्वर ने मनुष्य को प्रभुत्व प्रदान किया, तब आदम और हव्वा को दी गई उनकी पहली आज्ञाएँ इसी संसार के साथ उनके सम्बन्ध और उत्तरदायित्व से जुड़ी हुई थीं। प्रभु ने उन्हें पृथ्वी को जनों से भरने और उसे अपने अधीन करने का कार्य आरम्भ करने की आज्ञा दी।

"फलो-फूलो, बढ़ो, पृथ्वी को भर दो और उसे अपने वश में करो [उसके सब विशाल संसाधनों सहित]" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 28)।

"फलो-फूलो और बढ़ो" का अर्थ है सन्तान उत्पन्न करना। और "पृथ्वी को अपने वश में करो" का अर्थ है उसकी सम्पदा और संसाधनों का उचित उपयोग करके तथा उनका आनन्द लेते हुए सृष्टि को व्यवस्थित रूप से अपने अधीन लाना। प्रभु ने तुरन्त ही आदम और हव्वा को यही कार्य सौंपा। उन्होंने उन्हें पृथ्वी की प्राकृतिक उपज को भोजन के रूप में उपयोग करने का अधिकार दिया।

"मैंने सारी पृथ्वी पर हर प्रकार के बीज उत्पन्न करने वाले पौधे और सब प्रकार के फलदार वृक्ष तुम्हें भोजन के लिए दिए हैं" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 29)।

पृथ्वी को अपने अधीन करना।

आदम और हव्वा ने प्रभु की आज्ञा का पालन किया और सन्तान उत्पन्न की (उत्पत्ति अध्याय 4 आयत 1)। जैसे-जैसे उनका परिवार बढ़ता गया, वैसे-वैसे वे और उनकी सन्तानें प्रभुत्व का प्रयोग करते हुए पृथ्वी को अपने अधीन करने लगीं। उन्होंने पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग किया और विभिन्न संस्कृतियों तथा सभ्यताओं का विकास किया।

• प्रारम्भिक मनुष्यों ने खेती की, पशुपालन किया, तम्बू बनाए और संगीत के वाद्ययन्त्र तैयार किए। उन्होंने धातुओं को गलाने और उनसे वस्तुएँ बनाने की कला विकसित की, समुद्री

यात्राएँ कीं और नए प्रदेशों की खोज की। मनुष्यों ने शासन-व्यवस्थाएँ स्थापित कीं, नगर बसाए और बड़े-बड़े साम्राज्य खड़े किए। आदम के अनेक पुत्रों और पुत्रियों ने विशाल भवनों के निर्माण के लिए भट्ठों में पकाई हुई ईंटें बनानी सीखीं और डामर का उपयोग करना भी सीखा (उत्पत्ति अध्याय 4 आयत 20 से 22; उत्पत्ति अध्याय 11 आयत 2 से 4)।

• उन प्रारम्भिक दिनों से लेकर आज तक मानवजाति की प्रत्येक पीढ़ी ने किसी न किसी प्रकार पृथ्वी पर प्रभुत्व किया है और उसके संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवन, अपनी संस्कृति और अपनी सभ्यता का विकास किया है।

मनुष्य के आरम्भ से लेकर आज तक पृथ्वी पर स्थापित हुई प्रत्येक संस्कृति और सभ्यता में कुछ मूलभूत समानताएँ रही हैं। सभी लोग अपने रहने के लिए घर बनाते हैं, भोजन एकत्र करते हैं, खेती करते हैं, फसल काटते हैं और विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाते हैं। प्रत्येक समाज भोजन को सुरक्षित रखने और उसे तैयार करने की अपनी-अपनी व्यवस्था विकसित करता है। सभी प्रकार के लोग वस्त्र, आभूषण, संगीत और कला का सृजन करते हैं। वे कहानियाँ रचते और सुनाते हैं, अपनी स्मृतियों को सुरक्षित रखते हैं, अपने घरों को सजाते हैं और उत्सव मनाते हैं। ये सभी कार्य इस बात की अभिव्यक्ति हैं कि मनुष्य अपने सृष्टिगत उद्देश्य के एक भाग को पूरा कर रहा है—अर्थात् पृथ्वी पर प्रभुत्व करना और उसके संसाधनों का उपयोग करके उसे अपने अधीन लाना।

सदियों के दौरान मानव की सृजनात्मक क्षमता ने अनेक अद्भुत उपलब्धियाँ उत्पन्न की हैं—सुन्दर चित्रकलाओं और मनोहर संगीत रचनाओं से लेकर औद्योगिक और तकनीकी आविष्कारों तक। दुर्भाग्यवश, इस पापग्रस्त संसार में इन उपलब्धियों का बड़ा भाग बुराई के कार्यों के लिए भी उपयोग किया गया है। समग्र रूप से देखा जाए तो पतित मानवजाति ऐसी सभ्यताओं का निर्माण करने में असफल रही है जो परमेश्वर की महिमा प्रकट करें। परन्तु नई पृथ्वी पर यह स्थिति पूरी तरह बदल जाएगी। जब प्रभु पृथ्वी पर अपने अनन्त राज्य की स्थापना करेंगे, तब वे मानव संस्कृति को शुद्ध और पवित्र करेंगे, ताकि वह वही कार्य करे जिसके लिए उसका आरम्भ से उद्देश्य था—परमेश्वर की महिमा करना और उनके परिवार के लिए आशीष का कारण बनना।

नई पृथ्वी पर संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ।

आपको स्मरण होगा कि प्रेरित पतरस ने आने वाले समय में संसार के रूपान्तरण की तुलना नूह के जलप्रलय से की थी (2 पतरस अध्याय 3 आयत 6)। उस जलप्रलय ने पृथ्वी का विनाश नहीं किया था; उसने उसे शुद्ध किया और उसका रूप बदल दिया था। उसी प्रकार जलप्रलय ने मानवजाति के लिए परमेश्वर की मूल योजना को भी समाप्त नहीं किया। नूह और उनका

परिवार जहाज़ में सुरक्षित रखे गए ताकि वे फिर से पृथ्वी पर लौटकर जीवन आरम्भ कर सकें।

जलप्रलय के समाप्त होने के बाद प्रभु ने उन्हें जो पहली आज्ञा दी, वही आज्ञा थी जो उन्होंने आदम और हव्वा को दी थी—"फलो-फूलो, पृथ्वी को भर दो और उस पर प्रभुत्व करो" (उत्पत्ति अध्याय 9 आयत 1)। नूह ने इस आज्ञा का पालन किया, "और नूह ने खेती करना आरम्भ किया तथा एक दाख की बारी लगाई" (उत्पत्ति अध्याय 9 आयत 20)। इस प्रकार जलप्रलय से पहले की दुनिया और उसके बाद की दुनिया के बीच निरन्तरता बनी रही। मानव संस्कृति और ज्ञान समाप्त नहीं हुए, बल्कि आगे भी चलते रहे।

ठीक इसी प्रकार, जब यीशु वापस आएँगे, तब भी मानवजाति को नई पृथ्वी पर सब कुछ शून्य से आरम्भ नहीं करना पड़ेगा। मानव संस्कृति के वे सभी पक्ष जो पापपूर्ण थे, पूरी तरह समाप्त कर दिए जाएँगे। जो बातें स्वयं में पापपूर्ण नहीं थीं, परन्तु उनका उपयोग बुरे उद्देश्यों के लिए किया गया था या जिन्हें दुष्ट मनोभाव से प्रयोग किया गया था, वे भी शुद्ध कर दी जाएँगी। परन्तु मानव संस्कृति की कोई भी ऐसी बात जो परमेश्वर का आदर करती थी या उनकी महिमा प्रकट करती थी, कभी नष्ट नहीं होगी।

इस पतित संसार में मानव सभ्यता की जो सर्वोत्तम उपलब्धियाँ हम आज देखते हैं, वे केवल उस महान महिमा की एक छोटी-सी झलक हैं जो तब प्रकट होगी जब सम्पूर्ण संसार का नवीनीकरण कर दिया जाएगा।

नई पृथ्वी शुद्ध की हुई, परमेश्वर की महिमा प्रकट करने वाली समस्त मानवीय संस्कृतियों की सर्वोत्तम उपलब्धियों से परिपूर्ण होगी। परन्तु यह तो केवल आरम्भ होगा। इस अध्याय में पहले मैंने दानिय्येल की उस भविष्यवाणी का उल्लेख किया था जिसमें लिखा है कि परमेश्वर के पृथ्वी पर स्थापित होने वाले राज्य में "समस्त आकाश के नीचे के राज्य, उनका प्रभुत्व और उनका वैभव परमप्रधान के पवित्र लोगों को दिया जाएगा" (दानिय्येल अध्याय 7 आयत 27)। यहाँ "वैभव" जिस मूल शब्द से आया है, उसका अर्थ है "लगातार बढ़ना" या "वृद्धि होना"। कल्पना कीजिए कि जब हम पूर्णतः सिद्ध बना दिए जाएँगे और हमारे हर कार्य का एकमात्र उद्देश्य परमेश्वर की महिमा और उनका आदर करना होगा, तब स्त्री और पुरुष किस प्रकार की अद्भुत उपलब्धियों का सृजन करेंगे!

क्या यह सच होने के लिए बहुत अच्छा नहीं लगता?

एक बार फिर, आने वाले जीवन का यह चित्रण कुछ लोगों को इतना सामान्य लग सकता है कि उन्हें यह पर्याप्त आध्यात्मिक प्रतीत न हो। परन्तु मुझे इस विषय में तीन महत्वपूर्ण बातें कहने दीजिए।

पहला: यह हमारे सृष्टिगत उद्देश्य का एक भाग है।

परमेश्वर ने मनुष्य की रचना इस उद्देश्य से की कि वह इसी पृथ्वी पर जीवन बिताए और उस पर प्रभुत्व करे। बाइबल की शुरुआत इस बात से होती है कि परमेश्वर मनुष्य को पृथ्वी पर शासन करने का अधिकार देते हैं, और उसका अन्त भी इसी घोषणा के साथ होता है कि मनुष्य पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

"और वे [परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ] युगानुयुग राज्य करेंगे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 आयत 5)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मनुष्य को केवल पृथ्वी का रखवाला बनने के लिए नहीं बनाया था। यदि केवल उसकी देखभाल ही उद्देश्य होता, तो स्वर्गदूत भी यह कार्य कर सकते थे। परन्तु परमेश्वर की योजना इससे कहीं अधिक महान थी। उनका उद्देश्य यह था कि मनुष्य पृथ्वी की संस्कृति, सभ्यता और जीवन-व्यवस्था का सृजन करे, उसे विकसित करे और उसे इस प्रकार आकार दे कि उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रकट हो।

मैंने पहले उल्लेख किया था कि यूहन्ना ने अदृश्य लोक में ऐसे लोगों को देखा जो पृथ्वी पर लौटकर राज्य करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यहाँ "राज्य करना" केवल शासन करने का ही अर्थ नहीं रखता, बल्कि इसका अभिप्राय है—मसीह के साथ राज्य करना तथा उनके राज्य के विशेषाधिकारों, सम्मान, आशीषों और आनन्द में सहभागी होना।

परमेश्वर के द्वारा उद्धार पाए हुए स्त्री और पुरुष, जो इस समय स्वर्ग में हैं, उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब वे पृथ्वी पर लौटकर अपने सृष्टिगत उद्देश्य को पूरा करेंगे। वे एक भौतिक संसार में वास्तविक शारीरिक जीवन जीने की आशा रखते हैं—ऐसा जीवन जो परमेश्वर की पूर्ण महिमा करे, जबकि वे उस घर की सुन्दरता, आशीषों, लाभों और प्रबन्ध का उपयोग करें और उनका आनन्द लें, जिसे प्रभु ने अपने परिवार के लिए बनाया है।

हम जानते हैं कि इस जीवन से विदा होने के बाद भी मनुष्य अपनी स्मृतियों और अपने ज्ञान को बनाए रखता है। इसलिए जब स्वर्ग में रहने वाले लोग पृथ्वी पर लौटेंगे, तब उन्हें स्मरण रहेगा कि उन्होंने पृथ्वी पर कैसे जीवन बिताया था और अपने जीवनकाल में क्या-क्या सीखा और खोजा था। और यदि मान भी लिया जाए कि नई पृथ्वी पर परमेश्वर के

उद्धार पाए हुए परिवार को सब कुछ फिर से आरम्भ करना पड़े, तब भी बहुत ही थोड़े समय में सभ्यता फिर से विकसित होकर सुचारु रूप से चलने लगेगी।

दूसरा: परमेश्वर ने हमें इसके योग्य बनाया है।

संस्कृति का निर्माण करने वाली सृजनात्मकता और आविष्कार करने की क्षमता अपने आप में बुरी नहीं है। वे उस परमेश्वर के स्वरूप का भाग हैं जिसे स्त्री और पुरुष, अपने पतित होने की अवस्था में भी, धारण किए हुए हैं। जब प्रभु परमेश्वर ने मूसा और इस्राएलियों को पहला पवित्र निवासस्थान (मण्डप) बनाने की आज्ञा दी, तब उन्होंने कुछ व्यक्तियों को विशेष सामर्थ्य प्रदान की कि वे उसे अपनी कलात्मक कुशलता, विविध आकृतियों, रंगों और बनावटों से एक उत्कृष्ट कला-कृति बना सकें। इतना ही नहीं, उन्होंने उन्हें यह सामर्थ्य भी दी कि वे दूसरों को भी वही कला सिखाएँ जो उन्हें स्वयं मिली थी। यही कारीगर और कलाकार पवित्रशास्त्र में वे पहले व्यक्ति हैं जिनके विषय में लिखा गया है कि वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण किए गए।

"देख, मैंने बसलेल को चुना है... और उसे परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण किया है, ताकि वह हर प्रकार के काम में बुद्धि, समझ, ज्ञान और सब प्रकार की कारीगरी में निपुण हो। वह सोने, चाँदी और काँसे की सुन्दर वस्तुएँ बनाने, बहुमूल्य पत्थरों को काटकर जड़ने, लकड़ी पर नक्काशी करने तथा हर प्रकार की कारीगरी में निपुण है" (निर्गमन अध्याय 31 आयत 1 से 5)।

"और यहोवा ने [बसलेल] तथा ओहोलीआब को यह सामर्थ्य भी दी है कि वे अपनी कला दूसरों को सिखाएँ। यहोवा ने उन्हें जौहरी, डिज़ाइन बनाने वाले, बुनकर और महीन मलमल पर नीले, बैंगनी और लाल रंग के धागों से कढ़ाई करने वाले कारीगरों की विशेष कुशलता प्रदान की है। वे इस कार्य के लिए आवश्यक हर प्रकार की कारीगरी में निपुण हैं" (निर्गमन अध्याय 35 आयत 34 से 35)।

इस्राएल के महान राजा सुलैमान को स्मरण कीजिए। परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि ने उनमें अद्भुत जिज्ञासा और सृजनात्मकता उत्पन्न की, और उन्होंने इन दोनों का उपयोग प्रभु की महिमा करने के लिए किया।

"परमेश्वर ने सुलैमान को अत्यन्त बुद्धि, समझ और ऐसा विशाल ज्ञान दिया जिसकी कोई सीमा नहीं थी... उसने लगभग तीन हज़ार नीतिवचन कहे और एक हज़ार पाँच गीतों की रचना की। वह लबानोन के बड़े-बड़े देवदार वृक्षों से लेकर दीवारों की दरारों में उगने वाले छोटे-से जूफ़ा तक, हर प्रकार के पौधों के विषय में अधिकारपूर्वक बोल सकता था। वह पशुओं, पक्षियों, रेंगने वाले जीवों और मछलियों के विषय में भी ज्ञान रखता था। पृथ्वी के सब राष्ट्रों

के राजा अपने दूतों को सुलैमान की बुद्धि सुनने के लिए भेजते थे" (1 राजा अध्याय 4 आयत 29 से 34)।

"जब शेबा की रानी ने सुलैमान की उस प्रसिद्धि के विषय में सुना, जो यहोवा के नाम का सम्मान बढ़ाती थी, तब वह कठिन प्रश्नों के द्वारा उसकी परीक्षा लेने आई" (1 राजा अध्याय 10 आयत 1)

तीसरा: यह परमेश्वर की महिमा करता है।

अक्सर लोग यह सोचते हैं कि केवल कलीसिया से सम्बन्धित कार्य ही परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि जब हम परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने वरदानों का उपयोग करके कोई भी धर्मी और उचित कार्य करते हैं, तो वह भी उनकी महिमा प्रकट करता है। जब आप एक केक बनाते हैं, फसल उगाते हैं, कोई पुस्तक लिखते हैं या एक मेज़ तैयार करते हैं, तब आप परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी सृजनात्मक क्षमता का उपयोग कर रहे होते हैं और पृथ्वी को उसके संसाधनों सहित अपने अधीन करने की उनकी पहली आज्ञा को पूरा कर रहे होते हैं। यदि आपके कार्य का उद्देश्य प्रभु का आदर करना और दूसरों के लिए आशीष बनना है, तो आपका वह परिश्रम परमेश्वर की महिमा करने वाली एक अभिव्यक्ति बन जाता है।

"इसी प्रकार तुम्हारा प्रकाश लोगों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें" (मत्ती अध्याय 5 आयत 16)।

"इसलिए चाहे तुम खाओ, चाहे पियो, या जो कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो" (1 कुरिन्थियों अध्याय 10 आयत 31)।

राज्यों का वैभव।

नई पृथ्वी के अपने दर्शन में यूहन्ना ने राजाओं को राजधानी नगर में आते हुए देखा। ये शासक अपने-अपने राष्ट्रों और लोगों की सांस्कृतिक उपलब्धियों को साथ लेकर आ रहे थे।

"और पृथ्वी के राजा अपनी महिमा और सम्मान उसमें लाएँगे... और वे जातियों की महिमा, वैभव और सम्मान उसमें लाएँगे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 24 से 26)।

किसी महान सभ्यता का वैभव और गौरव केवल उसकी शक्ति और शासन-सामर्थ्य तक ही सीमित नहीं होता। उसकी विशिष्ट पहचान उसकी संस्कृति, उसकी कला, उसकी सृजनात्मकता और उसकी उत्कृष्ट उपलब्धियों में भी दिखाई देती है।

यूहन्ना द्वारा इन उपहार लेकर आने वाले राजाओं का जो वर्णन किया गया है, वह वास्तव में उस दृश्य की पूर्ति है जिसका वर्णन सबसे पहले यशायाह ने किया था, जब उन्होंने नई पृथ्वी के जीवन के विषय में विस्तार से भविष्यवाणी की थी। यशायाह की भविष्यवाणी प्रकट करती है कि ये राजा अपने-अपने राष्ट्रों की उपज और वैभव को नए यरूशलेम में लेकर आएँगे।

"जातियाँ तेरे प्रकाश की ओर आएँगी, और राजा तेरे उदय के तेज की ओर... समुद्र की सम्पत्ति तेरे पास लाई जाएगी... राष्ट्रों का धन तेरे पास आएगा। ऊँटों के झुण्ड तेरे देश को भर देंगे; मिद्यान और एपा के जवान ऊँट आएँगे। सब शेबा से आएँगे, सोना और लोबान लाएँगे... केदार की सब भेड़-बकरियाँ तेरे पास इकट्ठी की जाएँगी, और नबायोत के मेढ़े तेरी सेवा में उपस्थित होंगे" (यशायाह अध्याय 60 आयत 3 से 7)।

ध्यान दीजिए कि महान राजा के नगर में जो वस्तुएँ लाई जा रही हैं, वे सभी परिचित सांस्कृतिक उपज और मानवीय परिश्रम की फलस्वरूप उपलब्धियाँ हैं। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि नई पृथ्वी पर हमारा जीवन ऐसा ही होगा जैसा हम जानते हैं—परन्तु पाप से शुद्ध किया हुआ; नया तो होगा, किन्तु फिर भी परिचित और पहचानने योग्य होगा।

आदि में परमेश्वर ने स्त्री और पुरुष दोनों को प्रभुत्व प्रदान किया और उन्हें यह उत्तरदायित्व सौंपा कि वे परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी सृजनात्मक क्षमता, वरदानों और प्रतिभाओं का उपयोग करके ऐसी संस्कृतियों और सभ्यताओं का निर्माण करें जो परमेश्वर की महिमा करें। पाप ने कुछ समय के लिए इस योजना में बाधा अवश्य उत्पन्न कर दी, परन्तु नई पृथ्वी पर परमेश्वर का यह उद्देश्य पूरी तरह पूरा होगा।

यीशु ने हमारा उद्धार इसलिए किया कि हमें हमारे सृष्टिगत उद्देश्य में पुनः स्थापित करें—परमेश्वर की सन्तान होना और प्रभुत्व करना। हम सदा के लिए पृथ्वी पर राज्य करेंगे। हम उसके विशाल संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग करते हुए उसे अपने अधीन करेंगे और ऐसे जीवन, ऐसी संस्कृतियाँ तथा ऐसी सभ्यताएँ विकसित करेंगे जो प्रभु की महिमा करें और समस्त मानवजाति के लिए आशीष का कारण बनें।

12

नई पृथ्वी पर जीवन।

परमेश्वर का उद्धार का उद्देश्य यह नहीं है कि जो कुछ उन्होंने सृष्टि में बनाया था उसे हटाकर उसके स्थान पर कुछ बिल्कुल नया बना दें। उनकी योजना यह है कि वे अपने परिवार और उस घर—अर्थात् पृथ्वी—दोनों को उसी स्थिति में पुनः स्थापित करें जिसकी उन्होंने आदि से ही योजना बनाई थी। इसमें पहले से विद्यमान संस्कृतियों और सभ्यताओं का शुद्धीकरण भी सम्मिलित है। इसलिए नई पृथ्वी पर जीवन का बहुत-सा भाग हमें परिचित लगेगा, क्योंकि आज के जीवन के अनेक पहलू वहाँ भी बने रहेंगे—परन्तु पाप से पूर्णतः शुद्ध और सिद्ध अवस्था में।

नई पृथ्वी पर भोजन और वस्त्र।

वर्तमान अदृश्य स्वर्ग में रहने वाले स्त्री और पुरुष भोजन करते हैं, पीते हैं और वस्त्र भी पहनते हैं। इसलिए यह मानने का कोई कारण नहीं है कि जब हम अपने पुनर्जीवित शरीरों के साथ फिर से एक हो जाएँगे, तब हम इन बातों को छोड़ देंगे। विशेषकर इसलिए क्योंकि भोजन और वस्त्र—दोनों ही—पृथ्वी को अपने अधीन करने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए मूल आदेश को पूरा करने का एक भाग हैं।

मनुष्य को प्रभुत्व देने के बाद प्रभु ने आदम और हव्वा को जो पहली आज्ञा दी, वह यह थी कि वे पृथ्वी की उपज को भोजन के रूप में उपयोग करें (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 29)।

और जहाँ तक वस्त्रों का प्रश्न है, हमारे प्रथम माता-पिता अदन की वाटिका में नग्न थे। इसका कारण यह नहीं था कि प्रभु वस्त्र पहनने के विरोधी थे, बल्कि इसलिए कि वे चाहते थे कि मनुष्य अपनी परमेश्वर-प्रदत्त सृजनात्मक क्षमता का उपयोग करे और पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों से अपने लिए उपयुक्त वस्त्र तैयार करे।

हम क्या खाएँगे?

यह मानना उचित है कि नई पृथ्वी पर भी हम उन अनेक प्रकार के भोजन का आनन्द लेंगे जिन्हें हम आज खाते हैं, क्योंकि हमें यह स्मरण रहेगा कि अपने प्रिय व्यंजन और पेय पदार्थ कैसे बनाए और तैयार किए जाते हैं। सम्भव है कि आपके किसी पूर्वज द्वारा अपने समय का कोई प्रसिद्ध व्यंजन आपके लिए फिर से बनाया जाए। शायद किसी दूसरे देश से आया आपका नया मित्र अपने जन्मस्थान का कोई पारम्परिक भोजन आपके लिए तैयार करे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्त्री और पुरुष पृथ्वी के प्रचुर संसाधनों का उपयोग करके नए-नए स्वादिष्ट भोजन और पेय पदार्थ भी विकसित करेंगे।

क्या हम मांस खाएँगे? जैसा हम आज जानते हैं, वैसा नहीं। मांस प्राप्त करने के लिए किसी पशु की मृत्यु आवश्यक होती है, और आने वाले जीवन में मृत्यु का कोई स्थान नहीं होगा।

"सब से अन्तिम शत्रु जो नष्ट किया जाएगा, वह मृत्यु है" (1 कुरिन्थियों अध्याय 15 आयत 26)।

फिर भी यह सत्य है कि मांस खाना और उसका आनन्द लेना अनेक संस्कृतियों का एक महत्त्वपूर्ण भाग रहा है और आज भी है। यदि यह सोचा जाए कि आगे के जीवन में कभी भी स्टेक, मछली का टुकड़ा या मेम्ने का मांस नहीं मिलेगा, तो भविष्य का जीवन लाभ के स्थान पर हानि जैसा प्रतीत हो सकता है। परन्तु निश्चय ही प्रभु ऐसी व्यवस्था कर सकते हैं—या फिर परमेश्वर द्वारा दी गई मानव की सृजनात्मक क्षमता ऐसा अत्यन्त स्वादिष्ट मांस का विकल्प विकसित कर सकती है—जिसके लिए किसी जीव की हत्या न करनी पड़े। नई पृथ्वी पर संसाधन कम नहीं, बल्कि आज से कहीं अधिक होंगे।

हम क्या पहनेंगे?

वस्त्र किसी व्यक्ति की राष्ट्रीय पहचान और उसकी व्यक्तिगत विशिष्टता को प्रकट करते हैं। क्योंकि ये दोनों बातें आने वाले जीवन में भी बनी रहेंगी, इसलिए यह सम्भावना है कि नई पृथ्वी पर भी लोग ऐसे वस्त्र पहनेंगे जो उनकी संस्कृति और उनकी व्यक्तिगत पहचान को व्यक्त करेंगे। जो किसी एक समाज में सामान्य होगा, वह दूसरे समाज में भिन्न हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे आज है।

बाइबल के समय में चोगे या लंबे वस्त्र पहनना सामान्य बात थी। सम्भव है कि उस युग के लोग नई पृथ्वी पर भी वही पहनना पसन्द करें। शायद हममें से कुछ लोग भी उन्हें पहनना पसन्द करने लगें। और यह भी सम्भव है कि पहली शताब्दी के कुछ लोग दैनिक जीवन में

नीली जीन्स पहनना चुनें। जैसा कि मैंने अध्याय 4 में समझाया है, यह मानना भी उचित है कि जैसे आज हमारे पास अलग-अलग अवसरों के लिए अलग-अलग प्रकार के वस्त्र होते हैं, वैसे ही नई पृथ्वी पर भी होगा।

निश्चय ही ऐसे वस्त्र, जो अशोभनीय हों या केवल घमण्ड और दिखावे के लिए पहने जाएँ, हमारे भावी घर में उनका कोई स्थान नहीं होगा। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर रंग-बिरंगे या विशिष्ट वस्त्रों के विरोधी हैं। भविष्यद्वक्ता यहेजकेल को उस समय इस्राएल के पास भेजा गया था जब उन्होंने यहोवा को छोड़कर मूर्तियों की उपासना आरम्भ कर दी थी। परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा अपने लोगों को स्मरण दिलाया कि उन्होंने अतीत में उनके लिए क्या-क्या किया था, ताकि वे फिर से उनकी ओर लौट आएँ।

प्रभु ने कहा, "मैंने तुझ से वाचा बाँधी... और तू मेरी हो गई" (यहेजकेल अध्याय 16 आयत 8)।

इसके बाद उन्होंने बताया कि इस वाचा के द्वारा अपने साथ जोड़ लेने के पश्चात् उन्होंने इस्राएल को किस प्रकार सुशोभित किया।

"मैंने तुझे महीन मलमल और रेशम के बहुमूल्य, सुन्दर कढ़ाईदार वस्त्र पहनाए, उत्तम चमड़े की जूतियाँ दीं। मैंने तुझे सुन्दर आभूषण, कंगन और मनोहर हार पहनाए। तेरी नाक के लिए नथ, तेरे कानों के लिए बालियाँ और तेरे सिर के लिए एक सुन्दर मुकुट दिया। इस प्रकार तू सोने और चाँदी से अलंकृत होकर अत्यन्त सुन्दर बन गई। तेरे वस्त्र महीन मलमल और रेशम के थे, जो सुन्दर कढ़ाई से सुसज्जित थे" (यहेजकेल अध्याय 16 आयत 10 से 13)।

इस कथन में बहुत-सा प्रतीकात्मक अर्थ निहित है, परन्तु एक बात पर विशेष ध्यान दीजिए—यह स्वयं प्रभु द्वारा अपने कार्यों का वर्णन है। सुन्दर, रंग-बिरंगे वस्त्र, आभूषण और जूतियाँ न तो बुरी हो सकती हैं और न ही अनुचित, क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर स्वयं इन्हें इस उदाहरण के रूप में प्रयोग करते हैं कि वे अपने लोगों को किस प्रकार सुशोभित करते हैं। इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि जब प्रभु परमेश्वर ने मूसा को बताया कि वे उन्हें मिस्र की दासता से इस्राएल को निकालने के लिए उपयोग करेंगे, तब उन्होंने क्या कहा।

"मैं ऐसा करूँगा कि मिस्रवासी तुम पर अनुग्रह करें। जब तुम वहाँ से निकलोगे, तब खाली हाथ नहीं जाओगे। प्रत्येक इस्राएली स्त्री अपनी मिस्री पड़ोसिन और अपने घर में रहने वाली स्त्री से चाँदी और सोने के आभूषण तथा उत्तम वस्त्र माँगेगी। तुम उन वस्त्रों से अपने पुत्रों और पुत्रियों को पहनाओगे। इस प्रकार तुम मिस्रवासियों की सम्पत्ति अपने साथ ले जाओगे" (निर्गमन अध्याय 3 आयत 21 से 22)।

मिस्र की दासता से इस्राएल की मुक्ति को "छुटकारा" या "उद्धार" कहा गया है (निर्गमन अध्याय 6 आयत 6)। यद्यपि यह एक वास्तविक ऐतिहासिक घटना थी, फिर भी यह उस महान उद्धार का चित्र भी प्रस्तुत करती है जो यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए उपलब्ध कराया। ध्यान दीजिए कि केवल लोग ही मिस्र से बाहर नहीं निकले, बल्कि उनके साथ वस्त्र भी बाहर लाए गए। यदि वस्त्र परमेश्वर के परिवार की भविष्य की योजना का भाग न होते, तो बाइबल इस विवरण का उल्लेख क्यों करती? इसका अर्थ है कि मानव संस्कृति की अन्य उपलब्धियों की तरह वस्त्र भी उद्धार की योजना का एक भाग हैं और उनका भी उद्धार होगा।

नई पृथ्वी पर कार्य।

प्रभु ने मनुष्य की रचना इस प्रकार की है कि उसके भीतर अर्थपूर्ण और सन्तोषदायक कार्य करने की इच्छा और क्षमता हो। आज के जीवन को देखते हुए यह बात समझना कठिन लग सकता है, क्योंकि बहुत-से लोगों के लिए काम थकाने वाला और असन्तोषजनक अनुभव है। परन्तु कार्य मूल रूप से ऐसा होने के लिए नहीं बनाया गया था। यह केवल आदम की अवज्ञा के बाद ऐसा बना (उत्पत्ति अध्याय 3 आयत 17 से 19)।

किन्तु आने वाले जीवन में कठिन, थका देने वाला और निष्फल परिश्रम पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। नई पृथ्वी पर स्त्री और पुरुष परमेश्वर की अद्भुत सृष्टि की सुन्दरता के बीच, उनके साथ पूर्ण संगति में रहते हुए ऐसे कार्य करेंगे जो अर्थपूर्ण होंगे, थकाने वाले नहीं। हम जो कुछ भी करेंगे, वह प्रभु को प्रसन्न करने वाला होगा और हमारे लिए गहरे सन्तोष और आनन्द का कारण बनेगा।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, परमेश्वर ने मनुष्य को उत्साह, सृजनात्मकता और नवीन आविष्कार करने की क्षमता प्रदान की, और फिर उसे यह उत्तरदायित्व दिया कि वह इन योग्यताओं का उपयोग करके पृथ्वी को अपने अधीन करे। पृथ्वी को अपने अधीन करने का अर्थ है उसके संसाधनों और उसकी प्राकृतिक प्रक्रियाओं का बुद्धिमानी से प्रबन्ध करना। इसमें यह जानना भी सम्मिलित है कि विभिन्न प्रकार के कच्चे संसाधन कहाँ पाए जाते हैं और यह सीखना कि उन्हें उपयोगी और उत्कृष्ट तैयार वस्तुओं में कैसे परिवर्तित किया जाए।

पृथ्वी को अपने अधीन करने के लिए बुवाई और कटाई के चक्रों का निरीक्षण और उन्हें समझना आवश्यक है। इसी प्रकार बिजली जैसी प्राकृतिक शक्तियों तथा गुरुत्वाकर्षण जैसे प्राकृतिक नियमों की खोज और समझ भी आवश्यक है। सदियों से इन प्रयासों के परिणामस्वरूप अनेक उद्योगों और तकनीकों का विकास हुआ है।

• पृथ्वी का अध्ययन और अनुसन्धान करना ताकि उसकी कार्यप्रणालियों और प्रक्रियाओं को खोजा और समझा जा सके (विज्ञान)।

• पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए आवश्यक उत्पादन के साधनों का विकास करना (उद्योग, अभियांत्रिकी, कृषि, पशुपालन, धातुकर्म आदि)।

• इनसे सम्बन्धित गतिविधियों तथा ऐसी व्यवस्थाओं का विकास करना जिनके द्वारा वस्तुओं और जानकारी को लोगों तक पहुँचाया जा सके (परिवहन, जहाज़रानी, व्यापार, वाणिज्य, लेखन, कागज़ और पुस्तकों का निर्माण आदि)।

मानवजाति आरम्भ से ही किसी-न-किसी स्तर पर इन सभी कार्यों में लगी रही है। निरन्तरता के सिद्धान्त के अनुसार यह अपेक्षा करना उचित है कि नई पृथ्वी पर भी ये सभी गतिविधियाँ बनी रहेंगी, परन्तु उस भ्रष्टता से पूरी तरह शुद्ध होकर जो आज इन्हें कठिन और श्रमसाध्य बना देती है।

मैं समझता हूँ कि इन कार्यों को आनन्द और सन्तोष का स्रोत मानना कठिन है, क्योंकि हमने केवल पाप से प्रभावित संसार का संघर्षपूर्ण जीवन ही देखा है। परन्तु नई पृथ्वी पर स्त्री और पुरुष इन कार्यों को आवश्यकता के कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने वरदानों और प्रतिभाओं के अनुसार स्वेच्छा और आनन्द से करेंगे।

हो सकता है कि इस जीवन में आपकी रुचि समुद्री जीव-विज्ञान में रही हो, परन्तु आर्थिक कारणों से आप उच्च शिक्षा प्राप्त न कर सके हों और अन्ततः आपको ऐसा काम करना पड़ा हो जिसे आप वास्तव में पसन्द नहीं करते। जब संसार नया बना दिया जाएगा, तब आपके पास अपने सपनों को पूरा करने और अपने परमेश्वर-प्रदत्त उत्साह तथा प्रतिभा के अनुसार उस कार्य में लगने के लिए भरपूर समय और संसाधन होंगे—और वह सब कुछ पूरी तरह प्रभु की महिमा के लिए होगा। कल्पना कीजिए कि आपको उन कार्यों में स्वतंत्रता और सामर्थ्य के साथ भाग लेने का अवसर मिलेगा जो इस जीवन में आपके लिए सम्भव ही नहीं थे।

हम किस प्रकार के कार्य करेंगे?

बाइबल वास्तव में नई पृथ्वी पर किए जाने वाले अनेक विशिष्ट कार्यों का उल्लेख करती है। परमेश्वर का वचन बताता है कि स्त्री और पुरुष घर बनाएँगे और भूमि की खेती करेंगे (यशायाह अध्याय 65 आयत 21)। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि केवल निर्माण और खेती ही नहीं होगी, बल्कि उनसे सम्बन्धित सामग्री के उत्पादन और उन्हें तैयार करने का कार्य भी किया जाएगा।

• घर बनाने के लिए लकड़ी, ईंटें, गारा, कीलें, पाइप, तार, छत की सामग्री, काँच तथा अनेक अन्य वस्तुओं की आवश्यकता होती है। साथ ही, घर को आरामदायक और सुन्दर बनाने के लिए सजावटी वस्तुओं और घरेलू साज-सज्जा की भी आवश्यकता होगी।

• खेती के लिए बीज, ट्रैक्टर, थ्रेशर तथा अन्य कृषि उपकरणों का निर्माण और उपलब्धता आवश्यक होगी। इसके अतिरिक्त, उत्पन्न की गई फसल को सुरक्षित रखने, उसका वितरण करने, उसे तैयार करने और उसका उपयोग करने के लिए भी अनेक प्रकार की वस्तुओं और व्यवस्थाओं की आवश्यकता होगी।

हम बाइबल से यह भी जानते हैं कि नई पृथ्वी पर विभिन्न राष्ट्र होंगे और उनके शासक भी होंगे। इसका अर्थ है कि वहाँ शासन-व्यवस्थाएँ होंगी और उनमें प्रशासनिक उत्तरदायित्व निभाने वाले लोग भी होंगे। परमेश्वर के राज्य के पृथ्वी पर आने के सन्दर्भ में यीशु ने कहा कि उनके कुछ विश्वासयोग्य अनुयायियों को उनके प्रतिफल के रूप में प्रशासनिक पद दिए जाएँगे।

"तू अच्छा सेवक है। तू थोड़ी-सी बात में विश्वासयोग्य रहा, इसलिए अपने प्रतिफल के रूप में दस नगरों का अधिकारी बन... और दूसरे से कहा, 'तू पाँच नगरों पर अधिकार रख'" (लूका अध्याय 19 आयत 17 से 18)।

नई पृथ्वी पर लोग यात्रा भी करेंगे। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लिखा है कि जहाज़ों में आने वाले व्यापारी और ऊँटों के कारवाँ महान राजा के नगर में अपार धन-संपत्ति लेकर आएँगे। इसी प्रकार प्रेरित यूहन्ना ने भी अपने दर्शन में विभिन्न राष्ट्रों के राजाओं को नए यरूशलेम की यात्रा करते हुए देखा (यशायाह अध्याय 60 आयत 5 से 9; प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 24)। और तब स्त्री तथा पुरुषों के पास अन्ततः इतना समय और पर्याप्त साधन होंगे कि वे इस अद्भुत पृथ्वी की सुन्दरता का आनन्द लेने के लिए स्वतंत्रतापूर्वक यात्रा कर सकें।

• कुछ लोग उन कार्यों और उद्योगों में सेवा करना चुन सकते हैं जो लोगों की यात्राओं से जुड़े होंगे। कुछ यात्री-सेवा के लिए सराय, होटल, विश्राम-स्थल और भोजनालय चलाना पसन्द कर सकते हैं, जबकि अन्य लोग उन उद्योगों में कार्य कर सकते हैं जो लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने के लिए विभिन्न प्रकार के परिवहन साधनों का निर्माण करेंगे।

• पवित्रशास्त्र बताता है कि नई पृथ्वी पर जहाज़ होंगे। यदि ऐसा है, तो फिर वहाँ मोटर-गाड़ियाँ और हवाई जहाज़ भी क्यों न हों? संस्कृति की निरन्तरता के सिद्धान्त के अनुसार यह अपेक्षा करना उचित है कि वे भी होंगे। यूहन्ना ने राजधानी नगर की सड़कों का भी उल्लेख किया है, जो यह संकेत देती हैं कि वहाँ आवागमन के साधनों के लिए भी स्थान होगा (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 21; प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 आयत 2)।

व्यापार और उद्योग।

आपमें से कुछ लोग यह सोच रहे होंगे, "जब पृथ्वी नई बना दी जाएगी, तब वस्तुओं और सेवाओं के लिए व्यापार और उद्योगों की आवश्यकता ही क्यों होगी?" तकनीकी दृष्टि से देखें तो हमें वहाँ घर, भोजन या पेय की आवश्यकता भी नहीं होगी, फिर भी हम इन सबका आनन्द लेंगे। व्यापार अपने आप में कोई पापपूर्ण बात नहीं है। यह तो मनुष्यों के बीच होने वाले सामान्य व्यवहार और सहयोग का स्वाभाविक परिणाम है।

मान लीजिए कि मेरे पास ऐसी वस्तु है जिसकी आपको आवश्यकता है, परन्तु आप उसे स्वयं तैयार नहीं कर सकते; तब मैं उसे बनाता हूँ। या मेरे मन में कोई उपयोगी विचार आता है और मैं ऐसी वस्तु तैयार करता हूँ जिसकी आपको आवश्यकता है या जिसे आप चाहते हैं। इसी प्रकार यदि किसी कार्य में आपकी कुशलता मुझसे अधिक है, तो स्वाभाविक रूप से आप वह कार्य करेंगे।

याद रखिए, आने वाले जीवन में भी हम सब एक जैसे नहीं होंगे। हमारी व्यक्तिगत पहचान, हमारी रुचियाँ और हमारी परमेश्वर-प्रदत्त योग्यताएँ बनी रहेंगी। इस पापग्रस्त संसार में भी बहुत-से लोग केवल जीविका कमाने के लिए व्यवसाय नहीं करते। उनके लिए उनका कार्य ही उनका जुनून होता है। वे दूसरों की सहायता करना, उन्हें आशीष देना या समाज को और बेहतर बनाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, बहुत-से लोग इसलिए भोजनालय (रेस्तराँ) खोलते हैं क्योंकि उन्हें स्वादिष्ट भोजन तैयार करना और लोगों की सेवा करना अत्यन्त प्रिय होता है।

प्रौद्योगिकी अपने आप में बुरी नहीं है। किसी भी संस्कृति में किसी-न-किसी प्रकार के औज़ारों और मशीनों का निर्माण तथा विकास होता ही है। यह भी उन तरीकों में से एक है जिनके द्वारा हम पृथ्वी के संसाधनों पर प्रभुत्व करते हैं। परमेश्वर का वचन अनेक प्रकार की मशीनों और उत्पादन प्रणालियों का उल्लेख करता है, जैसे—खलिहान, चक्की के पाट, कुम्हार का चाक, दाखरस निकालने के कुण्ड, जुए, हल और अन्य कृषि उपकरण। ये सभी उस समय की उपयुक्त तकनीकी उपलब्धियाँ थीं जब पवित्रशास्त्र के वे भाग लिखे गए थे। यदि यशायाह या यूहन्ना आज के समय में पवित्रशास्त्र लिख रहे होते, तो सम्भवतः वे स्वचालित उत्पादन पंक्तियों, कम्प्यूटर तकनीक और माल पहुँचाने वाले वाहनों का भी उल्लेख करते।

मुख्य बात यह है कि हमारे अनन्त घर का जीवन हमारे लिए कोई अपरिचित या अज्ञात अनुभव नहीं होगा। वहाँ भी हम ऐसे कार्यों और व्यवसायों में लगे होंगे जो हमारे लिए परिचित होंगे। उद्धार में प्रभु का उद्देश्य मानवजाति और उसके द्वारा विकसित की गई संस्कृतियों को समाप्त करना नहीं है, बल्कि हमें और हमारी संस्कृतियों—दोनों को उद्धार

देकर शुद्ध करना है, ताकि हम उनके द्वारा परमेश्वर की महिमा करें और एक-दूसरे के लिए आशीष का कारण बनें।

अपनी पतित अवस्था में भी मनुष्य ने अपने प्रभुत्व का विस्तार आकाश, समुद्र और बाह्य अंतरिक्ष तक कर लिया है। हम आकाश में उड़ सकते हैं, समुद्र के ऊपर और नीचे यात्रा कर सकते हैं तथा चन्द्रमा तक पहुँच चुके हैं। स्वचालन (ऑटोमेशन) के माध्यम से हमने अनेक कार्यों में लगने वाले श्रम और समय को बहुत कम कर दिया है। कम्प्यूटरों के आविष्कार ने जानकारी उत्पन्न करने, उसे सुरक्षित रखने और संसारभर में पहुँचाने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है तथा विश्व को ऐसे ढंग से जोड़ दिया है जिसकी पहले कभी कल्पना भी नहीं की गई थी। यदि हम इस पाप से प्रभावित संसार में रहते हुए इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त कर सके हैं, तो कल्पना कीजिए कि जब हम पूर्णतः सिद्ध बना दिए जाएँगे, तब हम कैसी अद्भुत वस्तुएँ और तकनीकें विकसित करेंगे। जब हम परमेश्वर की सृष्टि का अन्वेषण करेंगे, उसके संसाधनों का उपयोग करेंगे और उसका आनन्द लेंगे, तब हम पुरानी पृथ्वी की शुद्ध की हुई तकनीकों का उपयोग भी करेंगे और ऐसी नई तकनीकों का भी आविष्कार करेंगे जो आज हमारी कल्पना से भी परे हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने इस संसार की रचना इस प्रकार की है कि इसमें असंख्य ऐसे आश्चर्य हैं जिन्हें खोजा जाना है और ऐसी अनेक प्रक्रियाएँ हैं जिन्हें समझा जाना है। तारों को ही देखिए। जब प्रभु ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की, तब उन्होंने तारों को उनके स्थान पर स्थापित किया। प्राचीन समय से ही मनुष्य इन आकाशीय ज्योतियों का उपयोग समय का निर्धारण करने और दिशाओं को पहचानकर यात्रा करने के लिए करता आया है। इसके अतिरिक्त, तारों से भरा यह विशाल आकाश अनगिनत पीढ़ियों को परमेश्वर की महिमा पर मनन करने के लिए प्रेरित करता रहा है।

“आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है, और आकाशमण्डल उसके हाथों के कार्य को प्रकट करता है” (भजन संहिता अध्याय 19 आयत 1)।

“जब मैं तेरे आकाश को, जो तेरी उँगलियों का कार्य है, और चन्द्रमा तथा तारों को, जिन्हें तूने स्थापित किया है, देखता हूँ, तब सोचता हूँ कि मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखता है, और मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है?” (भजन संहिता अध्याय 8 आयत 3 से **4**)।

प्राचीन लोगों ने तारों का केवल एक छोटा-सा भाग ही देखा था, परन्तु वे सब उसी समय से वहाँ विद्यमान थे और आने वाली पीढ़ियों की प्रतीक्षा कर रहे थे कि जैसे-जैसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी आगे बढ़े, मनुष्य उन्हें खोजता जाए। इन्हीं प्रगतियों ने बीसवीं शताब्दी में मानवजाति को बाह्य अंतरिक्ष तक पहुँचाया। परन्तु यह तो केवल आरम्भ है, क्योंकि परमेश्वर ने अरबों आकाशगंगाओं की सृष्टि की है।

आने वाले जीवन में हम परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी सृजनात्मकता और आविष्कार करने की क्षमता का उपयोग करके उनकी सृष्टि के आश्चर्यों की खोज के लिए नए-नए मार्ग खोजेंगे। हमारे सामने अनन्तकाल होगा, जिसमें हम आकाश और पृथ्वी के निरन्तर बढ़ते हुए रहस्यों को जानेंगे। और जैसे-जैसे उनकी सृष्टि के नए-नए अद्भुत पहलू हमारे सामने प्रकट होते जाएँगे, वैसे-वैसे हम उस महान सृष्टिकर्ता की महिमा, वैभव और अनुपम सुन्दरता को और अधिक गहराई से जानेंगे, जिसने यह सब कुछ रचा है।

क्या वहाँ जीवन में कोई चुनौती नहीं होगी?

एक से अधिक लोगों ने मुझसे कहा है कि उन्हें यह चिन्ता है कि आने वाला जीवन कहीं नीरस न हो जाए, क्योंकि वहाँ करने के लिए कुछ भी नहीं होगा। आशा है कि अब तक आप यह समझने लगे होंगे कि ऐसा बिल्कुल नहीं होगा, क्योंकि उद्धार में परमेश्वर का उद्देश्य वही सब कुछ पुनः स्थापित करना है जिसकी उन्होंने आदि से योजना बनाई थी।

पाप के संसार में प्रवेश करने से पहले परमेश्वर ने मानवजाति को जो पहला आदेश दिया था, वह यह था—

"पृथ्वी को भर दो... और उसे अपने वश में करो" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 28)।

इस उत्तरदायित्व का अर्थ था कि मनुष्य पृथ्वी के संसाधनों की खोज करे, उसकी कार्यप्रणालियों और सिद्धान्तों को समझे तथा इस प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों का सामना करे। प्रभु पहले से जानते थे कि अनेक समस्याओं का समाधान करना होगा और अनेक बाधाओं पर विजय प्राप्त करनी होगी। इसलिए उन्होंने मनुष्य को बुद्धि और जिज्ञासा प्रदान की तथा उसे इस प्रकार बनाया कि वह खोज करे, अनुसन्धान करे, नई बातें सीखे और अपने उद्देश्यों को पूरा करे। हम इस प्रकार रचे गए हैं कि चुनौतियों का सामना करें, उन पर विजय प्राप्त करें और उसी में आनन्द अनुभव करें। लक्ष्य निर्धारित करना और उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करना हमारे स्वभाव का ही एक भाग है।

परमेश्वर द्वारा दी गई ये विशेषताएँ आने वाले जीवन में समाप्त नहीं होंगी। इसके विपरीत, उनका पूर्ण रूप से उपयोग होगा। जब पृथ्वी नई बना दी जाएगी, तब भी हम अपने प्रभुत्व के

उत्तरदायित्व को निभाते रहेंगे। अन्तर केवल इतना होगा कि हमारा परिश्रम अब कठिन और थकाने वाला नहीं रहेगा। वह फलदायी, आनन्ददायक और पूर्ण सन्तोष देने वाला होगा, क्योंकि उस पर पाप से प्रभावित संसार की निराशा, संघर्ष और व्यर्थता का कोई प्रभाव नहीं रहेगा।

जब एक चुनौती पूरी हो जाएगी, तब हम उत्साह के साथ अगली चुनौती की प्रतीक्षा करेंगे। जब एक रोमांचक अनुभव समाप्त होगा, तब हम अगले अनुभव की ओर आनन्दपूर्वक देखेंगे। वास्तव में, जीवन के आनन्द का एक बड़ा भाग आने वाले अवसरों और नई सम्भावनाओं की प्रतीक्षा में ही निहित है। परमेश्वर ने हमें इसी प्रकार बनाया है।

शायद आपके मन में यह प्रश्न उठे, "क्या कभी ऐसा समय आएगा जब करने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा?"

नहीं, क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य अनन्तकाल तक बना रहेगा और निरन्तर बढ़ता जाएगा। आने वाले उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, के विषय में दी गई सबसे महान भविष्यवाणियों में से एक में भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लिखा—

"क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कन्धों पर होगी। उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार कहलाएगा। उसकी प्रभुता और शान्ति की वृद्धि का कभी अन्त न होगा" (यशायाह अध्याय 9 आयत 6 से 7)

मूल इब्रानी भाषा में जिस शब्द का अनुवाद "वृद्धि" किया गया है, उसका अर्थ है—"निरन्तर विस्तार"। इसलिए यशायाह अध्याय 9 आयत 7 का भाव यह है कि, "उसके राज्य की प्रभुता और उसकी शान्ति निरन्तर बढ़ती रहेगी और उसका कभी अन्त नहीं होगा।" नए आकाश और नई पृथ्वी पर प्रभु का शासन लगातार फैलता और विस्तृत होता जाएगा।

"उसका प्रभुत्व निरन्तर फैलता जाएगा, और उसकी शान्ति का कभी अन्त न होगा" (यशायाह अध्याय 9 आयत 7)।

यह कितना अद्भुत और विचारोत्तेजक कथन है! क्या प्रभु भविष्य में नए-नए संसारों की भी रचना करेंगे? क्या यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड—जिसमें असंख्य आकाशगंगाएँ, करोड़ों-अरबों तारे और न जाने कितने ग्रह हैं—इतना विशाल सिद्ध होगा कि उसका अन्वेषण करने और उसे अपने अधीन करने में युगों-युग लग जाएँगे? क्या यह सृष्टि अनन्तकाल तक फैलती और विस्तृत होती रहेगी?

इन प्रश्नों का वास्तविक अर्थ क्या है, यह जानने के लिए हमें प्रतीक्षा करनी होगी कि यशायाह की इस भविष्यवाणी की पूर्णता किस प्रकार प्रकट होती है। परन्तु एक बात निश्चित

है—आने वाले जीवन में हमारे पास कभी भी करने के लिए कार्यों की कमी नहीं होगी और न ही जाने के लिए स्थानों की। वहाँ चुनौतियाँ और अवसर कभी समाप्त नहीं होंगे। और जब हम पृथ्वी को अपने अधीन करने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए उत्तरदायित्व को पूरा करेंगे, तब हम उसकी कार्यप्रणालियों तथा परमेश्वर की अद्भुत सृष्टि के आश्चर्यों को और भी अधिक गहराई से समझते और जानने लगेंगे।



नई पृथ्वी पर जीवन हमारे लिए अपरिचित नहीं होगा, बल्कि परिचित होगा। जैसे हमारे चारों ओर का प्राकृतिक दृश्य बदल जाएगा, परन्तु फिर भी पहचानने योग्य रहेगा, उसी प्रकार हमारा जीवन भी परिवर्तित तो होगा, किन्तु परिचित बना रहेगा। हम घर बनाएँगे, भोजन तैयार करेंगे, वस्त्र बनाएँगे और ऐसे अर्थपूर्ण तथा सन्तोषदायक कार्यों में लगे रहेंगे जिनके द्वारा हम पृथ्वी को अपने अधीन करने की परमेश्वर की आज्ञा को पूरा करेंगे।

परन्तु हम केवल यही सब नहीं करेंगे। मानव संस्कृति में सामान्य रूप से पाए जाने वाले अनेक अन्य कार्य और गतिविधियाँ भी नई पृथ्वी पर विद्यमान होंगी। अगले अध्याय में हम उनमें से कुछ पर विस्तार से विचार करेंगे।

13



नई पृथ्वी पर जीवन के बारे में और अधिक।

बहुत-से लोग जब स्वर्ग के विषय में अपनी झिझक या चिन्ताओं को व्यक्त करते हैं, तो उनकी सबसे सामान्य चिन्ताओं में से एक यह होती है कि कहीं वहाँ जीवन आनन्दहीन तो नहीं होगा। हम सबकी अपनी-अपनी रुचियाँ होती हैं और हम ऐसी अनेक गतिविधियों का आनन्द लेते हैं जो पापपूर्ण तो नहीं हैं, परन्तु हमें ऐसा लगता है कि वे स्वर्ग के लिए पर्याप्त आध्यात्मिक नहीं होंगी—जैसे किसी रोचक पुस्तक को पढ़ना, किसी रोमांचक चलचित्र को देखना, किसी संगीत समारोह में सम्मिलित होना, प्रकृति में घूमने जाना, कोई खेल खेलना, अपनी प्रिय खेल टीम का उत्साह बढ़ाना या अपने किसी शौक को पूरा करना। क्या आने वाले जीवन में भी इस प्रकार के आनन्द और मनोरंजन के अवसर होंगे? बाइबल के अनुसार, इसका उत्तर है—**हाँ!**

विश्राम और मनोरंजन का आनन्द।

पवित्रशास्त्र बताता है कि जब परमेश्वर ने सृष्टि का अपना कार्य पूरा कर लिया, तब उन्होंने विश्राम किया।

"सातवें दिन तक परमेश्वर अपना समस्त कार्य पूरा कर चुके थे; इसलिए सातवें दिन उन्होंने अपने सारे कार्यों से विश्राम किया" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 2)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर को इसलिए विश्राम करने की आवश्यकता नहीं थी कि वे थक गए थे। इसके विपरीत, उन्होंने अपने द्वारा पूर्ण किए गए कार्य में सन्तोष और आनन्द लेने के लिए समय अलग रखा। उन्होंने केवल अपनी सृष्टि को देखकर यह नहीं कहा कि वह अत्यन्त उत्तम है, बल्कि उन्होंने अपने बनाए हुए कार्यों में आनन्द भी मनाया (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 31; भजन संहिता अध्याय 104 आयत 31)

जब आदम और हव्वा अदन की वाटिका में रहते थे, तब वे परमेश्वर के उस विश्राम में सहभागी थे। वे प्रभु परमेश्वर के साथ मिलकर उस घर की सुन्दरता और भरपूरी में आनन्दित होते थे जिसे उन्होंने उनके लिए बनाया था। दुर्भाग्यवश, जब हमारे प्रथम माता-पिता ने पाप किया, तब मानवजाति परमेश्वर के उस विश्राम में सहभागी होने के इस आशीष से वंचित हो गई। फिर भी, विश्राम के लिए समय अलग रखने की यह धारणा मनुष्य के अन्तःकरण में बनी रही।

• पृथ्वी पर मानव इतिहास के प्रारम्भिक युगों से ही प्रत्येक ज्ञात संस्कृति ने अपने कार्यों से अलग विश्राम और अवकाश के लिए समय निकाला है। और उन अवसरों पर लोगों ने विभिन्न प्रकार की मनोरंजन और आनन्ददायक गतिविधियों में भाग लिया है।

• नई पृथ्वी पर भी यह नहीं बदलेगा। हाँ, हम कार्य करेंगे, परन्तु हम आनन्दपूर्वक मनोरंजन और विश्राम भी करेंगे। यदि यह विचार आपको आश्चर्यचकित करता है, तो स्मरण रखिए कि आने वाला जीवन नया तो होगा, परन्तु पहचानने योग्य भी होगा; परिवर्तित तो होगा, परन्तु परिचित भी रहेगा। याद रखिए, उद्धार में परमेश्वर का उद्देश्य उसी बात को पुनः स्थापित करना है जो पाप के कारण खो गई थी।

जब प्रभु ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अपनी उद्धार की योजना को प्रकट करना आरम्भ किया, तब उन्होंने अपने लोगों को विश्राम के एक दिन का पालन करने की आज्ञा दी, जिसे सब्त कहा गया। यह दिन उस विश्राम का प्रतीक था जो उद्धारकर्ता नई पृथ्वी पर प्रदान करेंगे—ऐसा विश्राम जिसमें हम परमेश्वर के साथ अविच्छिन्न संगति का आनन्द लेते हुए अपने अद्भुत अनन्त घर की आशीषों का अनुभव करेंगे। यहाँ परमेश्वर और उनके लोगों के "विश्राम" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द में "ताज़गी, नई शक्ति और आत्मिक तृप्ति" का भाव निहित है।

शायद आपके मन में यह प्रश्न उठे, "यदि अन्ततः कार्य आनन्ददायक होने वाला है, तो फिर हमें अवकाश और मनोरंजन की आवश्यकता क्यों होगी? और यदि हमारे पास अमर, अविनाशी और पुनर्जीवित शरीर होंगे, तो हमें विश्राम और ताज़गी की आवश्यकता क्यों पड़ेगी?"

जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा, सिद्ध संसार का जीवन चुनौतियों से रहित नहीं होगा, और हम तब भी सीमित मनुष्य ही रहेंगे। इसलिए सम्भव है कि किसी चुनौतीपूर्ण कार्य में अपनी शक्ति लगाने के बाद हम विश्राम का स्वागत करें। विश्राम कोई पाप नहीं है। जैसे हमारे प्रथम माता-पिता ने पाप करने से पहले अनुभव किया था, वैसे ही हम भी परिश्रम करने के बाद उस संसार में विश्राम और शान्ति का आनन्द लेंगे जहाँ न भ्रष्टता होगी और न मृत्यु।

और विश्राम तथा मनोरंजन के उन अवसरों पर हमारे पास आनन्द लेने के लिए बहुत कुछ होगा, जिसकी शुरुआत स्वयं परमेश्वर की अद्‌भुत सृष्टि से होगी। पृथ्वी के आश्चर्य केवल उपयोगी ही नहीं हैं, वे आनन्द का स्रोत भी हैं। वृक्ष केवल लकड़ी ही नहीं देते, बल्कि अपनी सुन्दरता, अपने वैभव, अपनी शीतल छाया और अपने फलों के द्‌वारा भी हमें आनन्द प्रदान करते हैं। स्वयं प्रभु अपनी सृष्टि में आनन्दित होते हैं, और क्योंकि हम उनके स्वरूप में बनाए गए हैं, इसलिए हम भी उसी प्रकार उनकी सृष्टि में आनन्द पाते हैं।

"यहोवा की महिमा सदा बनी रहे; यहोवा अपने कार्यों में आनन्दित हों" (भजन संहिता अध्याय 104 आयत 31)।

"परमप्रधान आकाश तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दे दी है" (भजन संहिता अध्याय 115 आयत 16)

वर्तमान समय में इस संसार की अधिकांश सुन्दरता को केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही पूरी तरह देखते हैं। वे एकान्त पर्वतीय घाटियों में खिले हुए फूलों को देखते हैं, दूरस्थ घने जंगलों में रहने वाले छोटे-छोटे वृक्ष-मेंढकों को देखते हैं, समुद्र की गहराइयों में पाई जाने वाली अद्‌भुत वनस्पतियों और रंग-बिरंगे जीवों को देखते हैं, तथा निर्जन घाटियों में स्थित आश्चर्यजनक चट्‌टानी संरचनाओं को भी देखते हैं। परन्तु आने वाले जीवन में यह स्थिति बदल जाएगी, क्योंकि तब हमारे पास इतना समय और पर्याप्त साधन होंगे कि हम इस पृथ्वी के प्राकृतिक आश्चर्यों की यात्रा करें और उनकी अद्‌भुत सुन्दरता का भरपूर आनन्द लें।

और अपने अवकाश के समय में हम और क्या करेंगे?

मानवजाति की प्रारम्भिक पीढ़ियों से लेकर आज तक पृथ्वी की प्रत्येक संस्कृति ने मनोरंजन के अनेक प्रकार विकसित किए हैं। इनमें अत्यन्त सरल से लेकर अत्यधिक विकसित कला, संगीत, नृत्य, कहानी-कहना और विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएँ सम्मिलित हैं। निरन्तरता के सिद्‌धान्त के आधार पर यह अपेक्षा करना उचित है कि इस प्रकार के मनोरंजन भी नई पृथ्वी पर विद्‌यमान होंगे, परन्तु वे पाप के सभी प्रभावों से पूरी तरह मुक्त होंगे। वे पूर्णतः प्रभु की महिमा करने वाले होंगे और उनके परिवार के लिए सम्पूर्ण सन्तोष और आनन्द का स्रोत बनेंगे।

कला।

परमेश्वर महानतम कलाकार हैं। उनकी सृष्टि रंगों, बनावटों, आकारों और अद्‌भुत रचनात्मक डिज़ाइनों से परिपूर्ण है। चट्‌टानों पर उगने वाली छोटी-सी काई से लेकर विशाल मैदानों, समुद्रों और पर्वतों तक, हर स्थान उनकी कलात्मकता को प्रकट करता है। उन्होंने अपने संसार

को रंग-बिरंगे पक्षियों और मनोहर पुष्पों से सजा दिया है। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि उनके स्वरूप में बनाए गए मनुष्य भी ऐसा ही करते हैं।

मानव इतिहास के आरम्भ से ही स्त्री और पुरुष कला की रचनाएँ करते आए हैं—चाहे वह किसी वृक्ष के तने पर उकेरी गई आकृति हो या किसी चट्टान पर बनाया गया चिन्ह। जैसे-जैसे तकनीक विकसित होती गई, वैसे-वैसे कला को अभिव्यक्त करने के साधन और विधियाँ भी विकसित होती गईं।

दुर्भाग्यवश, सदियों के दौरान मानवजाति की बहुत-सी कलात्मक रचनाएँ परमेश्वर की महिमा करने में असफल रही हैं। परन्तु नई पृथ्वी पर ऐसा नहीं होगा। जब स्त्री और पुरुष पृथ्वी को अपने अधीन करने की परमेश्वर की आज्ञा को पूरा करेंगे, तब उनकी सृजनात्मकता और कलात्मक अभिव्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँच जाएगी। कलाकार पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके चित्र बनाएँगे, नक्काशी करेंगे और मूर्तियाँ गढ़ेंगे, और उनकी प्रत्येक रचना उस परमेश्वर का आदर और महिमा करेगी जिसने उन्हें प्रेरणा और प्रतिभा प्रदान की है।

हो सकता है कि आपके भीतर चित्रकला की स्वाभाविक प्रतिभा रही हो और आप कला विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करना चाहते रहे हों, परन्तु जीवन आपको किसी दूसरी दिशा में ले गया। शायद आप सदैव चित्र बनाना या मूर्तिकला सीखना चाहते थे, परन्तु आपके पास कभी पर्याप्त समय या साधन नहीं थे। आने वाले जीवन में आप इन अब तक अप्रयुक्त वरदानों और प्रतिभाओं का पूरा उपयोग करेंगे और अपने उस स्वप्न को साकार करेंगे, जब आपकी सृजनात्मक क्षमता अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ प्रकट होगी।

संगीत और नृत्य।

यद्यपि इस पतित संसार में गायन, नृत्य और संगीत वाद्यों का उपयोग अनेक बार बुरे उद्देश्यों के लिए किया गया है, फिर भी आने वाले जीवन में ये सब पूर्णतः शुद्ध कर दिए जाएँगे। यदि आप ऐसी मसीही परम्परा से आते हैं जो संगीत और नृत्य को पाप मानती है, तो यह बात आपको आश्चर्यचकित कर सकती है। परन्तु उचक्के पुत्र (उड़ाऊ पुत्र) के दृष्टान्त में स्वयं यीशु ने संकेत दिया कि ऐसी गतिविधियाँ स्वर्ग में भी होती हैं (लूका अध्याय 15 आयत 11)।

यीशु ने यह दृष्टान्त इस बात को समझाने के लिए सुनाया कि जब खोए हुए पापी परमेश्वर के पास लौटते हैं, तब स्वर्ग में कैसी प्रतिक्रिया होती है। उन्होंने एक ऐसे आनन्दमय उत्सव का चित्र प्रस्तुत किया जिसमें भोज, संगीत और नृत्य था (लूका अध्याय 15 आयत 22 से 25)।

यदि इन मनोरंजनों में से कोई भी अपने आप में बुरा होता या यदि उनका आने वाले जीवन में कोई स्थान न होता, तो हमारा उद्धारकर्ता अपने दृष्टान्त में इनका उल्लेख कभी न करते।

स्वर्ग में संगीत।

बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि वर्तमान स्वर्ग में भी संगीत है। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है कि उन्होंने अदृश्य लोक में गायन सुना और संगीत के वाद्ययन्त्र भी देखे।

• "जब उसने [यीशु ने] वह पुस्तक ली... तब सिंहासन के चारों ओर के सब प्राणी और लोग प्रत्येक अपने हाथ में एक वीणा लिए हुए थे... और वे यह नया गीत गा रहे थे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 8 से 9)।

• "फिर मैंने उन सात स्वर्गदूतों को देखा जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं, और उन्हें सात तुरहियाँ दी गईं... तब वे सातों स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ थीं, उन्हें फूँकने के लिए तैयार हुए" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 8 आयत 2 से 6)।

यद्यपि इन विशेष तुरहियों को मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि पृथ्वी पर घटित होने वाली घटनाओं की घोषणा करने के लिए फूँका जाना था, फिर भी स्वर्ग में उनका उपस्थित होना यह प्रकट करता है कि ऐसे वाद्ययन्त्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की महिमा करने वाले हो सकते हैं।

संगीत की उत्पत्ति परमेश्वर से हुई है। वही हैं जिन्होंने स्त्री और पुरुष को इस योग्य बनाया कि वे संगीत वाद्ययन्त्रों का निर्माण करें और उन्हें बजाएँ, गीतों की रचना करें, उन्हें गाएँ और उनके सामने उल्लासपूर्वक नृत्य करें। पवित्रशास्त्र ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है जहाँ लोग गीत, नृत्य और कुशलतापूर्वक बजाए गए वाद्ययन्त्रों के द्वारा आनन्द के साथ प्रभु की स्तुति करते हैं।

• भजन संहिता में परमेश्वर की प्रजा को आज्ञा दी गई है कि वे गीतों और वाद्ययन्त्रों के द्वारा उनकी स्तुति करें। "यहोवा की स्तुति करो... नरसिंगे के शब्द से उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा के साथ उसकी स्तुति करो। डफ और नृत्य के साथ उसकी स्तुति करो; तार वाले वाद्यों और बाँसुरी के साथ उसकी स्तुति करो। झाँझ बजाकर उसकी स्तुति करो; ऊँचे स्वर वाली झाँझों के साथ उसकी स्तुति करो। जितने प्राणी श्वास लेते हैं, वे सब यहोवा की स्तुति करें" (भजन संहिता अध्याय 150 आयत 1 से 6)।

• जब इस्राएली मिस्र की दासता से छुटकारा पाकर लाल समुद्र को पार कर सुरक्षित निकल आए, तब उन्होंने बड़े आनन्द के साथ उत्सव मनाया। "तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा

के लिए यह गीत गाया... फिर हारून की बहन भविष्यद्वक्त्री मरियम ने अपने हाथ में डफ लिया, और सब स्त्रियाँ डफ बजाती और नृत्य करती हुई उसके पीछे-पीछे चलीं" (निर्गमन अध्याय 15 आयत 1; अध्याय 15 आयत 20)।

संगीत का भी उद्धार होगा। परमेश्वर ने अपनी प्रजा से जो प्रतिज्ञाएँ की हैं, उनमें आनन्दमय गायन और नृत्य की पुनर्स्थापना भी सम्मिलित है। "मैं तुझे फिर बसाऊँगा, हे मेरी प्रजा, और तू फिर बसाई जाएगी। तू फिर अपने डफ लेकर आनन्द मनाएगी और नाचते-गाते लोगों के साथ निकल पड़ेगी" (यिर्मयाह अध्याय 31 आयत 4)।

• नई पृथ्वी का उल्लेख करते हुए भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लिखा, "यहोवा फिर सिय्योन को शान्ति देगा और उसके सब उजड़े हुए स्थानों को समृद्ध करेगा। वह उसके जंगल को अदन के समान और उसके निर्जन प्रदेश को यहोवा की वाटिका के समान बना देगा। वहाँ हर्ष और आनन्द पाए जाएँगे, धन्यवाद और मधुर गीतों का स्वर सुनाई देगा" (यशायाह अध्याय 51 आयत 3)।

• स्वयं प्रभु भी गीत गाएँगे। "क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है। वह उद्धार करने में पराक्रमी है। वह तुझ से बड़े आनन्द के साथ मग्न होगा। वह अपने प्रेम में तुझे शान्ति देगा। वह तेरे कारण जयजयकार करते हुए आनन्द का गीत गाएगा" (सपन्याह अध्याय 3 आयत 17)।

अब तक हमने जिन मुख्य विषयों पर विशेष बल दिया है, उनमें से एक है संस्कृति की निरन्तरता। जब प्रेरित यूहन्ना ने स्वर्ग में अपने अनुभव का वर्णन किया, तब उन्होंने इस जीवन से आने वाले जीवन तक गतिविधियों की निरन्तरता से सम्बन्धित एक अत्यन्त रोचक बात का उल्लेख किया। उन्होंने लिखा कि उन्होंने स्त्री और पुरुषों को देखा, "वे सब परमेश्वर द्वारा दी गई वीणाएँ अपने हाथों में लिए हुए थे। और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गा रहे थे" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 15 आयत 2 से 3)।

• मूसा ने अपने जीवनकाल में कई गीतों की रचना की थी, जो बाइबल में लिखे हुए हैं (निर्गमन अध्याय 15 आयत 1 से 18; व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 आयत 1 से 43)। यह स्पष्ट नहीं है कि जिन लोगों को यूहन्ना ने देखा, वे मूसा द्वारा पृथ्वी पर रचे गए उन्हीं गीतों में से कोई गीत गा रहे थे, या फिर वह कोई नया गीत था जिसे मूसा ने स्वर्ग में आने के बाद रचा था।

• चाहे इनमें से जो भी सत्य हो, यह विवरण इस बात की ओर संकेत करता है कि इस जीवन में जो बातें परमेश्वर की महिमा करती थीं—जैसे मूसा के गीत—वे नष्ट नहीं होंगी। आने वाला जीवन मानव की सृजनात्मकता और संगीतात्मक अभिव्यक्ति का अन्त नहीं होगा।

इलेक्ट्रिक गिटार का क्या?

शायद आप सोच रहे हों कि जिन वाद्ययन्त्रों का उल्लेख उन पदों में नहीं है जिन्हें हमने उद्धृत किया है, और जो बाइबल के समय के बाद आविष्कृत हुए—जैसे ट्यूबा, वायलिन, पियानो और इलेक्ट्रिक गिटार—क्या उनका भी नई पृथ्वी पर उपयोग होगा?

संभवतः हाँ।

संगीत वाद्ययन्त्रों का विकास और निर्माण इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि मनुष्य परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी सृजनात्मक क्षमता का उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों को ऐसी वस्तुओं में परिवर्तित करता है जो परमेश्वर की महिमा करती हैं और लोगों के लिए आशीष का कारण बनती हैं। यही उद्देश्य हम अनन्तकाल तक पूरा करते रहेंगे।

अनेक लोगों ने मुझसे पूछा है कि स्वर्ग में किस प्रकार का संगीत बजाया जाएगा। बाइबल इस विषय पर स्पष्ट उत्तर नहीं देती, परन्तु इन बातों पर ध्यान दीजिए।

• क्योंकि सांस्कृतिक पहचान बनी रहती है, इसलिए यह मानना उचित है कि हम वही संगीत बजाएँगे और सुनेंगे जिसका आनन्द हम पृथ्वी पर लेते थे। इतिहास के दौरान अनेक गीतों और संगीत रचनाओं की रचना परमेश्वर की महिमा के लिए की गई है। निश्चय ही, जो कुछ भी पापपूर्ण है, वह वहाँ नहीं रहेगा।

• क्योंकि हमारी व्यक्तिगत पहचान भी इस जीवन के बाद बनी रहती है, इसलिए संगीत के विषय में हमारी रुचियाँ भी भिन्न-भिन्न होंगी, जैसे आज हैं। उदाहरण के लिए, मध्यकालीन पश्चिमी यूरोप में रहने वाले लोग सम्भव है कि ग्रेगोरियन भजनों को उन आधुनिक संगीत शैलियों की अपेक्षा अधिक पसन्द करें जिनसे हम परिचित हैं। सम्भवतः हमारी संगीत सम्बन्धी रुचियाँ और भी व्यापक हो जाएँगी, क्योंकि हमें विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न युगों के संगीत को सुनने और समझने का अवसर मिलेगा। और चाहे कोई विशेष संगीत शैली हमारी सबसे प्रिय न भी बने, फिर भी हम इस बात की सराहना करेंगे कि वह किस प्रकार प्रभु की स्तुति और महिमा करती है।

हम अभी आने वाले जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते। परन्तु हम इतना अवश्य जानते हैं कि वहाँ हमें हानि नहीं, बल्कि लाभ ही लाभ मिलेगा।

हो सकता है कि आपने कभी पियानो या गिटार बजाना सीखने की इच्छा की हो, परन्तु जीवन की परिस्थितियों के कारण आपको यह अवसर कभी न मिला हो। नई पृथ्वी पर आपका यह स्वप्न अवश्य पूरा होगा।

जहाँ तक मेरा अपना प्रश्न है, बचपन से ही मुझे बैले नृत्य बहुत प्रिय रहा है। वह सौन्दर्य, गरिमा और आनन्द को व्यक्त करने का कितना मनोहर माध्यम है! परन्तु मेरा जीवन उस दिशा में नहीं गया, और अब मेरी आयु भी इतनी हो चुकी है कि मैं बैले सीखना आरम्भ नहीं कर सकती। फिर भी मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रही हूँ जब अपने अनन्त घर में इस अभिलाषा को पूरा कर सकूँगी।

कहानियाँ।

रोचक, रोमांचक और मनोरंजक कहानियाँ सुनाने की परम्परा मानवजाति के पृथ्वी पर आरम्भिक दिनों से ही चली आ रही है। हर व्यक्ति एक अच्छी कहानी का आनन्द लेता है—चाहे वह भलाई की बुराई पर विजय की प्रेरणादायक कथा हो, कोई हास्यपूर्ण कहानी जो हमें हँसा दे, या फिर ऐसा रहस्यपूर्ण वृत्तान्त जो अन्त तक हमारी उत्सुकता बनाए रखे। मनोरंजन के इस सार्वभौमिक और प्रिय माध्यम के प्रति मानवजाति का प्रेम आने वाले जीवन में समाप्त नहीं होगा।

• प्रभु यीशु ने कई बार स्वर्ग में लोगों के एक साथ बैठकर भोजन करने और सहभागिता करने का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, "मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत-से लोग पूर्व और पश्चिम से आकर स्वर्ग के राज्य में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ भोज में बैठेंगे" (मत्ती अध्याय 8 आयत 11)। ऐसे अवसरों पर लोग एक-दूसरे के साथ हँसते हैं, बातें करते हैं और कहानियाँ सुनाते हैं।

• प्रभु यीशु एक अद्‌वितीय कथावाचक थे। वे नियमित रूप से दृष्टान्तों अर्थात् छोटी-छोटी कहानियों के द्‌वारा बुद्‌धि और आत्मिक सत्य सिखाते थे। यदि हमारे उद्‌धारकर्ता के लिए कहानियाँ सुनाना उचित था, तो निश्चय ही स्वर्ग और नई पृथ्वी पर परमेश्वर के परिवार के अन्य लोगों के लिए भी यह उचित होगा।

प्रेरणादायक और मनोरंजक कहानियों के प्रति हमारा प्रेम कोई गलत बात नहीं है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने हमें इसी प्रकार बनाया है। यह उनके स्वरूप का एक भाग है जो हममें प्रतिबिम्बित होता है। अब तक सुनाई गई सबसे महान कहानी हमारे सृष्टिकर्ता ने स्वयं लिखी और उसका संचालन किया—वह है उनकी उद्‌धार की महान गाथा। जब प्रभु ने अपनी सृष्टि को पाप, भ्रष्टता और मृत्यु की दासता से छुड़ाने की अपनी योजना को पूरा किया, तब उन्होंने मनुष्यों को प्रेरित किया कि वे इस अद्‌भुत घटनाक्रम का लेखा-जोखा लिखें—जिसे हम बाइबल के रूप में जानते हैं। परमेश्वर की यह पुस्तक उनके उस हृदय की कहानी सुनाती है जिसमें वे अपने लिए एक परिवार चाहते थे, और उस उद्‌देश्य को पूरा करने

के लिए उन्होंने कितनी महान कीमत चुकाई। सदियों से उन्होंने अपनी प्रजा को यही आज्ञा दी है कि वे उनके महान कार्यों की कथा सुनाएँ।

• "हे मेरी प्रजा, मेरी शिक्षा पर ध्यान दो; मेरी बातों को सुनो। मैं दृष्टान्त के द्वारा अपना मुँह खोलूँगा; मैं प्राचीन काल की गूढ़ बातें प्रकट करूँगा—वे बातें जिन्हें हमने सुना और जाना है, और जिन्हें हमारे पूर्वजों ने हमें बताया है" (भजन संहिता अध्याय 78 आयत 1 से 3)।

• "हम इन बातों को अपनी सन्तान से नहीं छिपाएँगे, परन्तु आने वाली पीढ़ी को यहोवा के प्रशंसनीय कार्यों, उसके सामर्थ्य और उन अद्भुत कामों का वर्णन करेंगे जो उसने किए हैं" (भजन संहिता अध्याय 78 आयत 4)

स्वर्ग और नई पृथ्वी पर पुस्तकें।

पृथ्वी पर जिस-जिस संस्कृति ने लेखन-कला का विकास किया, उसने अपनी कहानियों और इतिहास को लिखित रूप में भी सुरक्षित रखा। इसलिए, संस्कृति की निरन्तरता के सिद्धान्त के आधार पर हम यह मान सकते हैं कि नई पृथ्वी पर भी पुस्तकें होंगी। इतना तो हम निश्चित रूप से जानते हैं कि अदृश्य स्वर्ग में पुस्तकें विद्यमान हैं।

• भजनकार दाऊद ने लिखा, "जब मैं अभी जन्मा भी न था, तब भी तूने मुझे देखा। मेरे जीवन का प्रत्येक दिन तेरी पुस्तक में लिखा हुआ था... तू मेरे सभी दुःखों का लेखा रखता है। तूने मेरे सब आँसुओं को अपनी कुप्पी में एकत्र किया है। क्या वे सब तेरी पुस्तक में लिखे नहीं गए हैं?" (भजन संहिता अध्याय 139 आयत 16; अध्याय 56 आयत 8)।

• प्रेरित यूहन्ना ने बताया कि उसने स्वर्ग में पुस्तकें देखीं। "फिर मैंने उस सिंहासन पर विराजमान के दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी... फिर मैंने एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा... उसके हाथ में एक छोटी खुली हुई पुस्तक थी... और पुस्तकें खोली गईं; फिर एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक है। और मरे हुए लोगों का न्याय उन बातों के अनुसार किया गया जो उन पुस्तकों में लिखी हुई थीं" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 1; अध्याय 10 आयत 1 से 2; अध्याय 20 आयत 12)।

क्या अदृश्य संसार में परमेश्वर की पुस्तकों के अतिरिक्त और भी पुस्तकें हैं?

निःसन्देह हैं। यह स्मरण रखिए कि जो कुछ भी परमेश्वर की महिमा करता है, वह नष्ट नहीं होगा। सदियों के दौरान अनेक महान साहित्यिक रचनाएँ—जैसे गद्य, कविता और नाटक—परमेश्वर की महिमा के लिए लिखी गई हैं। यह भी याद रखिए कि ऐसी रचनाएँ लिखने की

सृजनात्मक क्षमता भी उसी ने मनुष्य को दी है। ऐसी पुस्तकों का भी उद्धार होगा, और वे स्वर्ग तथा नई पृथ्वी तक बनी रहेंगी।

इतना ही नहीं, नई पुस्तकें भी लिखी जाएँगी। तब ज्ञान और जानकारी कहीं अधिक उपलब्ध होगी, और लोगों में सीखने की लालसा, जिज्ञासा और सृजनात्मकता भी भरपूर होगी। वे उन सभी बाधाओं और समय की सीमाओं से मुक्त होकर लिख सकेंगे, जो इस पतित संसार में आज हमें रोकती हैं।

कुछ लोग पूछ सकते हैं, "क्या नई पृथ्वी पर बनी रहने वाली कहानियों को पूरी तरह निष्कलंक बना दिया जाएगा (अर्थात् ऐसा कि वे नीरस हो जाएँ)?" निश्चय ही, जो कुछ भी अशुद्ध है, वह आने वाले जीवन में प्रवेश नहीं करेगा। परन्तु स्वयं परमेश्वर की पुस्तक, बाइबल, हत्या, षड्यन्त्र, विश्वासघात और व्यभिचार जैसी घटनाओं का भी वर्णन करती है। इनका उद्देश्य बुराई का महिमामण्डन करना नहीं, बल्कि प्रभु की महिमा प्रकट करना है, यह दिखाते हुए कि उनका प्रेम और अनुग्रह मनुष्य के सबसे अन्धकारमय व्यवहारों और परिस्थितियों के बीच तथा उन पर भी विजय प्राप्त करता है।

चलचित्रों और टेलीविज़न का क्या?

जैसे-जैसे मानव की तकनीकी प्रगति बढ़ती गई, वैसे-वैसे कहानियाँ सुनाने के साधन भी विकसित होते गए। प्रारम्भ में लोग कहानियों को स्मरण रखते थे और अलाव के चारों ओर बैठकर उन्हें मौखिक रूप से एक-दूसरे को सुनाते थे। इसके बाद हस्तलिखित ग्रन्थ आए और फिर मुद्रित पुस्तकें। पिछले लगभग एक सौ वर्षों में मानव की सृजनात्मकता ने चलचित्रों, रेडियो और टेलीविज़न के माध्यम से कहानी-कहने की कला को और भी आगे बढ़ाया। आज हमारे पास डीवीडी, एमपी3 प्लेयर, स्मार्टफ़ोन, ई-पुस्तकें और यूट्यूब™ जैसे अनेक माध्यम हैं।

हाँ, इन साधनों का उपयोग पापी लोगों ने दुष्टता फैलाने के लिए भी किया है। परन्तु संस्कृति की अन्य अभिव्यक्तियों की तरह ये भी शुद्ध किए जाएँगे। और हम यह भी आशा कर सकते हैं कि भविष्य में नई-नई तकनीकों का विकास होगा।

खेल।

हमें यह भी अपेक्षा रखनी चाहिए कि हमारे भावी अनन्त घर में खेल-कूद और शारीरिक प्रतियोगिताएँ भी होंगी। यदि नई पृथ्वी पर लोगों का गोल्फ खेलना या किसी फुटबॉल टीम का उत्साह बढ़ाना आपको असंगत प्रतीत होता है, तो इन बातों पर विचार कीजिए।

• परमेश्वर ने हमें इस प्रकार बनाया है कि हमें उत्साह और रोमांच से भरे अनुभवों में आनन्द मिलता है। हमारे शरीर दौड़ने, कूदने और वस्तुओं को फेंकने के लिए बनाए गए हैं। हम खेल-कूद के लिए उपयुक्त बनाए गए हैं।

• पृथ्वी की प्रत्येक संस्कृति किसी-न-किसी प्रकार की कुशल शारीरिक प्रतियोगिता में भाग लेती है—चाहे वह जंगल की पगडण्डी पर दौड़ हो या किसी विशाल स्टेडियम में आयोजित भव्य खेल प्रतियोगिता। जब संसार नया बनाया जाएगा, तब भी यह नहीं बदलेगा। यह संस्कृति की निरन्तरता का एक स्वाभाविक भाग है।

• खेल-कूद केवल मनोरंजन ही प्रदान नहीं करते, बल्कि वे परमेश्वर की उस आज्ञा को पूरा करने के अवसर भी देते हैं जिसमें उन्होंने मनुष्य को पृथ्वी को अपने अधीन करने के लिए कहा है। जब हम किसी ऊँची चट्टान पर चढ़ते हैं, बर्फ से ढकी ढलान पर स्की करते हैं, या किसी झील को तैरकर पार करते हैं, तब हम पृथ्वी से प्राप्त संसाधनों से बने उपकरणों का उपयोग करते हैं और प्रकृति के कुछ नियमों पर अपने अधिकार और प्रभुत्व को प्रदर्शित करते हैं। उसी प्रकार साइकिल चलाने के लिए केवल पृथ्वी के संसाधनों से साइकिल बनाना ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि दो पहियों पर सन्तुलन बनाए रखते हुए गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव पर नियन्त्रण रखना भी आवश्यक होता है।

आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या नई पृथ्वी पर खेल प्रतियोगिताएँ वास्तव में सम्भव होंगी? क्या एक सिद्ध संसार में कोई व्यक्ति खेल हार सकता है या दूसरे स्थान पर आ सकता है?

निश्चय ही ऐसा सम्भव होगा।

यह न भूलिए कि इस पुस्तक में पहले बताया जा चुका है कि आने वाले जीवन में हम सब एक जैसे नहीं होंगे। हमारी व्यक्तिगत पहचान और हमारी विशिष्टता बनी रहेगी। जैसे इस जीवन में कुछ लोगों में अधिक खेल-कूद की क्षमता होती है और कुछ में कम, वैसे ही नई पृथ्वी पर भी होगा। यदि आपने अपने पूरे जीवन में कभी फुटबॉल को पैर से नहीं मारा, तो आप अचानक एक उत्कृष्ट खिलाड़ी नहीं बन जाएँगे। यदि आपने कभी दौड़ के मैदान का एक चक्कर भी नहीं लगाया, तो आप एकाएक ओलम्पिक का स्वर्ण पदक जीतने वाले धावक नहीं बन जाएँगे। और क्योंकि हम सीमित प्राणी रहेंगे, इसलिए जैसे आने वाले जीवन में हमारा ज्ञान बढ़ता रहेगा, वैसे ही हम अपनी योग्यताओं और कौशलों को भी निरन्तर विकसित कर सकेंगे।

भिन्न-भिन्न स्तर की क्षमताओं वाले लोगों के बीच स्वस्थ प्रतियोगिता अपने आप में कोई पाप नहीं है। यह सत्य है कि इस पतित संसार में पापी मनुष्यों के बीच होने वाली

प्रतियोगिता अनेक बार पाप को जन्म देती है और देती भी रही है। परन्तु बाइबल स्वयं मसीही जीवन की तुलना खेल प्रतियोगिताओं से करती है। यदि इस प्रकार की गतिविधि अपने स्वभाव में ही बुरी होती, तो पवित्र आत्मा ऐसी तुलना का प्रयोग ही क्यों करते?

"इसलिए जब गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमें चारों ओर से घेरे हुए है, तो आओ हम हर एक बोझ और उस पाप को जो हमें आसानी से उलझा लेता है, दूर करके उस दौड़ में धीरज के साथ दौड़ें जो हमारे सामने रखी गई है" (इब्रानियों अध्याय 12 आयत 1)।

"क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ने वाले तो सब दौड़ते हैं, परन्तु पुरस्कार केवल एक ही पाता है? इसलिए ऐसे दौड़ो कि तुम उसे प्राप्त कर लो। प्रत्येक खिलाड़ी जो प्रतियोगिता में भाग लेता है, वह हर बात में आत्म-संयम रखता है। वे तो नष्ट हो जाने वाला मुकुट पाने के लिए ऐसा करते हैं, परन्तु हम उस मुकुट के लिए जो कभी नष्ट नहीं होगा" (1 कुरिन्थियों अध्याय 9 आयत 24 से 25)।

यहाँ तक कि इस पाप से क्षतिग्रस्त संसार में भी अनेक प्रतिभाशाली खिलाड़ी अपनी परमेश्वर-प्रदत्त योग्यताओं और क्षमताओं का उपयोग प्रभु का आदर करने के लिए करते हैं। हाल के वर्षों में व्यावसायिक खेलों में प्रसिद्ध और समर्पित मसीही खिलाड़ियों के विषय में सोचिए। वे अपनी सफलताओं के लिए नम्रतापूर्वक सर्वशक्तिमान परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं और खुले रूप से स्वीकार करते हैं कि वही उनकी सामर्थ्य का स्रोत हैं। साथ ही, वे अपनी प्रसिद्धि और सम्पत्ति का उपयोग अपने साथी मनुष्यों की सहायता करने के लिए भी करते हैं।

मैं इस विषय पर अन्तिम अध्याय में और अधिक विस्तार से चर्चा करूँगी, परन्तु आने वाले जीवन के लाभों में से एक यह भी है कि वहाँ हमारी अधूरी रह गई अभिलाषाएँ और स्वप्न पूरे होंगे। कितने ही लोगों ने किसी विशेष खेल में भाग लेने या उसमें निपुण बनने का स्वप्न देखा था, परन्तु जीवन की कठिनाइयों ने उनके मार्ग में बाधा डाल दी और उनका वह स्वप्न कभी पूरा न हो सका।

किन्तु उनकी कहानी वहीं समाप्त नहीं होती। नई पृथ्वी पर वे उन अभिलाषाओं को अवश्य पूरा करेंगे।

परमेश्वर ने मानवजाति और पृथ्वी के लिए जो उद्देश्य ठहराया है, वह पूर्ण रूप से पूरा होगा। उनका घर ही हमारा घर होगा, और हम जो कुछ भी करेंगे—चाहे कार्य करते समय या विश्राम और मनोरंजन के समय—वह सब उनकी महिमा करेगा और हमारे जीवन को पूर्ण सन्तोष से भर देगा। हमारा परिवेश हमें अपने घर जैसा अनुभव कराएगा और वहाँ का जीवन परिचित तथा आत्मीय लगेगा। इस वर्तमान जीवन में जब हम उसके सर्वोत्तम रूप का अनुभव करते हैं, तो वह हमें उस महिमामय जीवन की केवल एक झलक देता है जो नई पृथ्वी पर हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।



स्वर्ग में पशु।

आगे बढ़ने से पहले मुझे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा करनी है—स्वर्ग में पशुओं का स्थान।

यदि आप पशु-प्रेमी नहीं हैं, तो सम्भव है कि पशुओं के अन्तिम भविष्य पर आधारित एक पूरे अध्याय को आवश्यक न समझें। किन्तु हममें से उन लोगों के लिए, जिन्होंने अपने किसी प्रिय पालतू पशु को खोया है, यह विषय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। और यदि आपको बिल्लियों या कुत्तों से विशेष लगाव भी न हो, तब भी उनका भविष्य आपसे जुड़ा हुआ है, क्योंकि हमारा भविष्य भी उनके भविष्य से सम्बन्धित है। पृथ्वी के प्राणियों के लिए परमेश्वर ने जो भविष्य ठहराया है, उसे बेहतर ढंग से समझने से हमें भी यह जानने में सहायता मिलती है कि हमारे लिए आगे क्या रखा गया है।

सृष्टि में पशुओं का स्थान।

आइए सबसे पहले सृष्टि में पशुओं के स्थान पर विचार करें।

मनुष्य के बाद पशु पृथ्वी के दूसरे सबसे महत्त्वपूर्ण निवासी हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उन्हें हमारे लाभ के लिए बनाया है। अन्य अनेक उद्देश्यों के अतिरिक्त, वे हमें संगति और साथ भी प्रदान करते हैं। बाइबल पशुओं की सृष्टि का उल्लेख मनुष्य की सम्बन्धों की आवश्यकता के सन्दर्भ में करती है।

“तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, ‘मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उसके योग्य हो।’ तब यहोवा परमेश्वर ने भूमि में से सब प्रकार के वन-पशुओं और आकाश के सब पक्षियों को रचा और उन्हें आदम के पास लाया कि वह देखे, उनका क्या नाम रखे। आदम ने प्रत्येक जीवित प्राणी का जो नाम रखा, वही उसका नाम हो

गया। इस प्रकार आदम ने सब घरेलू पशुओं, आकाश के पक्षियों और सब वन-पशुओं के नाम रखे। परन्तु आदम के लिए उसके योग्य कोई सहायक न मिला" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 18 से 20)।

यद्यपि इन प्राणियों ने आदम की संगति की आवश्यकता को कुछ सीमा तक पूरा किया, फिर भी प्रभु ने उसके लिए इससे कहीं अधिक उत्तम योजना बनाई थी। परमेश्वर का उद्देश्य आदम के लिए ऐसा सहायक बनाना था जो उसके समान और उसके योग्य हो। मूल इब्रानी भाषा में इस पद का यही अर्थ है। आदम को ऐसा सम्बन्ध हव्वा में मिला, जिसे परमेश्वर ने उसकी पसली में से एक लेकर बनाया।

यद्यपि पशु संगति का अन्तिम और पूर्ण उत्तर नहीं थे, फिर भी जब परमेश्वर अपने बनाए हुए प्राणियों को आदम के पास लाए और उसे उनके नाम रखने का दायित्व दिया, तभी से मनुष्य और पशुओं के बीच एक विशेष सम्बन्ध स्थापित हो गया। किसी का नाम रखना और उसे नाम देना सम्बन्ध स्थापित करने का प्रतीक होता है। बाद में प्रभु परमेश्वर ने आदम को हव्वा का नाम रखने का भी अधिकार दिया (उत्पत्ति अध्याय 3 आयत 20)।

परमेश्वर पशुओं की चिन्ता करते हैं और उनसे आनन्दित होते हैं।

प्रभु यीशु ने सिखाया कि यद्यपि मनुष्य का मूल्य पशुओं से अधिक है, फिर भी पशु परमेश्वर के लिए महत्त्व रखते हैं। जब यीशु ने अपने अनुयायियों को जीवन की आवश्यकताओं के विषय में चिन्ता न करने की शिक्षा दी, तब उन्होंने अपने स्वर्गीय पिता द्वारा पक्षियों और फूलों की देखभाल का उदाहरण दिया।

"आकाश के पक्षियों को देखो। वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न भण्डारों में इकट्ठा करते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हो?" (मत्ती अध्याय 6 आयत 26)।

बाइबल के अनेक पद हमें यह आश्वासन देते हैं कि प्रभु पृथ्वी के सभी प्राणियों की चिन्ता करते हैं।

"यहोवा सब पर कृपालु है, और उसकी कोमल करुणा उसकी सारी सृष्टि पर बनी रहती है" (भजन संहिता अध्याय 145 आयत 9)।

“सब प्राणी आशा भरी दृष्टि से तेरी ओर देखते हैं, और तू उचित समय पर उन्हें भोजन देता है। तू अपना हाथ खोलता है और सब जीवधारियों की इच्छा को तृप्त करता है” (भजन संहिता अध्याय 145 आयत 15 से 16)।

“हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है” (भजन संहिता अध्याय 36 आयत 6)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर केवल पशुओं की चिन्ता ही नहीं करते, बल्कि उनसे आनन्द भी प्राप्त करते हैं। बाइबल कहती है कि “वह अपने सब बनाए हुए कार्यों में आनन्दित होता है” (भजन संहिता अध्याय 104 आयत 31)।

यह स्मरण रखिए कि पृथ्वी के अधिकांश प्राणियों को केवल परमेश्वर ही देखते हैं—वे जो घने वनों, गहरे जंगलों और समुद्र की अथाह गहराइयों में रहते हैं।

बाइबल आगे यह भी प्रकट करती है कि प्रभु ने अपने बनाए हुए प्राणियों को अपने परिवेश का आनन्द लेने की क्षमता दी है, और वे स्वयं उन्हें खेलते हुए देखकर प्रसन्न होते हैं।

“वहाँ समुद्र है, विशाल और विस्तृत, जिसमें छोटे-बड़े असंख्य जीव भरे हुए हैं। वहाँ जहाज़ चलते-फिरते हैं, और वहाँ वह लिव्यातान भी है जिसे तूने उसमें क्रीड़ा करने के लिए बनाया” (भजन संहिता अध्याय 104 आयत 25 से 26)।

• यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “क्रीड़ा करना” किया गया है, उसके मूल अर्थ में “आनन्द से हँसना” और उसके विस्तार में “खेलना” सम्मिलित है। परमेश्वर ने इन प्राणियों को केवल अस्तित्व में रहने के लिए नहीं, बल्कि खेलकर आनन्द लेने के लिए भी बनाया है। यह केवल जीवित रहने की बात नहीं, बल्कि जीवन की समृद्धि और आनन्द का भी प्रमाण है।

• जेरूसलम बाइबल इस पद का अनुवाद इस प्रकार करती है: “लिव्यातान, जिसे तूने अपने आनन्द के लिए बनाया।” (भजन संहिता अध्याय 104 आयत 26)।

इससे स्पष्ट होता है कि स्वयं प्रभु उन पशुओं में आनन्दित होते हैं जिन्हें उन्होंने रचा है।

मनुष्य और पशु एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

सृष्टि अपनी वर्तमान अवस्था में वैसी नहीं है जैसी परमेश्वर ने उसे मूल रूप से बनाया था। उन्होंने न तो सिंहों को मेमनों को खाने के लिए बनाया था, न बाज़ों को कबूतरों का शिकार करने के लिए, और न मगरमच्छों को मनुष्यों को निगलने के लिए। उसी प्रकार उन्होंने वृक्षों और फूलों को रोगग्रस्त होकर मुरझाने और मर जाने के लिए भी नहीं बनाया। प्रभु ने किसी भी व्यक्ति या किसी भी सृष्टि को नाश होने के लिए नहीं रचा था।

भौतिक संसार मृत्यु के अधीन आदम के पाप के कारण हुआ। मानवजाति के प्रधान और पृथ्वी के प्रथम प्रबन्धक होने के कारण आदम के कार्यों का सीधा प्रभाव उसके भीतर निहित सम्पूर्ण मानव परिवार पर भी पड़ा और उस घर अर्थात् पृथ्वी पर भी, जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए बनाया था।

"जब आदम ने पाप किया, तब पाप सम्पूर्ण मानवजाति में प्रवेश कर गया। उसके पाप के कारण मृत्यु पूरे संसार में फैल गई, और तब से सब कुछ पुराना होने लगा और मरने लगा" (रोमियों अध्याय 5 आयत 12)।

आदम की अवज्ञा के कारण स्त्री और पुरुष, पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ और स्वयं पृथ्वी भी मृत्यु के प्रभाव के अधीन आ गए। इस स्थिति का परमेश्वर द्वारा दिया गया उपाय यीशु मसीह के द्वारा उद्धार है। क्रूस का कार्य इतना महान और पर्याप्त है कि वह केवल मानवजाति ही नहीं, बल्कि पृथ्वी और उस पर रहने वाले समस्त प्राणियों को भी पाप और उसके सभी परिणामों से छुड़ा सकता है।

"वही [यीशु] आदि से सर्वोपरि हैं, और पुनरुत्थान की शोभायात्रा का नेतृत्व करने वाले होने के कारण अन्त में भी सर्वोपरि हैं। आदि से अन्त तक वही सब पर महान और सर्वोच्च हैं। वे इतने महान और व्यापक हैं कि परमेश्वर की सम्पूर्ण परिपूर्णता उनमें अपना उचित स्थान पाती है। इतना ही नहीं, उनके द्वारा ब्रह्माण्ड की हर टूटी हुई और बिखरी हुई वस्तु—चाहे वे मनुष्य हों या अन्य सृष्टि, पशु हों या अणु—सबको फिर से ठीक किया जाएगा और पूर्ण सामंजस्य में जोड़ दिया जाएगा। यह सब उनके उस लहू के कारण सम्भव हुआ जो क्रूस पर बहाया गया" (कुलुस्सियों अध्याय 1 आयत 18 से 20)।

मैं किसी भी प्रकार से यह नहीं कह रही कि पशु मनुष्यों के समान हैं। वे समान नहीं हैं। मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं; पशु नहीं। मनुष्य को अपने पापों के कारण उद्धारकर्ता की आवश्यकता है; पशु पाप नहीं करते। फिर भी, एक अर्थ में यह कहा जा सकता है कि यीशु ने पृथ्वी के प्राणियों के लिए भी अप्रत्यक्ष रूप से अपने प्राण दिए, क्योंकि उनका बलिदान उन सब बातों के लिए छुटकारे और पुनर्स्थापना का प्रबन्ध करता है जिन्हें पाप ने नष्ट और विकृत कर दिया है।

प्रभु परमेश्वर उस घर के किसी भी भाग को, जिसे उन्होंने अपने और अपने परिवार के लिए बनाया है, मृत्यु के अधिकार में नहीं छोड़ेंगे—और इसमें पशु भी सम्मिलित हैं। पृथ्वी के सभी प्राणी उन्हीं के हैं।

“क्योंकि वन के सब पशु मेरे हैं, और पहाड़ों पर चरने वाले हजारों पशु भी मेरे ही हैं। मैं पर्वतों के सब पक्षियों को जानता हूँ, और मैदान के सब वन्य पशु मेरे हैं तथा मेरी दृष्टि में हैं” (भजन संहिता अध्याय 50 आयत 10 से 11)।

सृष्टि के आरम्भ से ही पशु इस पृथ्वी पर विद्यमान रहे हैं। वे उस घर का एक महत्वपूर्ण भाग हैं जिसे प्रभु परमेश्वर ने अपने परिवार के लिए बनाया। इसलिए जब हमारा घर नया किया जाएगा और पूर्ण रूप से पुनर्स्थापित होगा, तब वे उससे अनुपस्थित नहीं होंगे। नई पृथ्वी पर निश्चय ही पशु होंगे।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है कि जब उद्धारकर्ता पृथ्वी पर अपना अनन्त राज्य स्थापित करेंगे और पाप तथा मृत्यु के शाप को हटा देंगे, तब पशु न तो एक-दूसरे को हानि पहुँचाएँगे और न ही मनुष्य को। पाप के प्रवेश से पहले परमेश्वर की सृष्टि में जो सामंजस्य था, वह फिर से स्थापित कर दिया जाएगा। सम्पूर्ण सृष्टि अन्ततः वैसी ही हो जाएगी जैसी प्रभु ने प्रारम्भ से उसके लिए इच्छा की थी (टिप्पणी 6 देखें)।

“मेरी प्रजा फिर अन्य राष्ट्रों का शिकार नहीं बनेगी, और न ही वन्य पशु उन्हें फिर कभी हानि पहुँचाएँगे” (यहेजकेल अध्याय 34 आयत 28)।

“उस दिन भेड़िया मेम्ने के साथ रहेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ शान्ति से लेटेगा। बछड़ा, जवान सिंह और पाला-पोसा हुआ पशु साथ-साथ रहेंगे, और एक छोटा बालक उन्हें चलाएगा। गाय और रीछ साथ-साथ चरेंगे, उनके बच्चे एक साथ लेटेंगे, और सिंह बैल की तरह घास खाएगा... मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न कोई हानि पहुँचाएगा और न कोई नाश करेगा” (यशायाह अध्याय 11 आयत 6 से 9)

पशु फिर से जीवित होंगे।

महान प्रेरित पौलुस ने लिखा कि सम्पूर्ण सृष्टि भ्रष्टता और मृत्यु की दासता से छुटकारा पाने की लालसा में प्रतीक्षा कर रही है। उन्होंने यह भी प्रकट किया कि जब प्रभु अपने पुत्रों और पुत्रियों को मरे हुओं में से जिलाएँगे, तब वे अपनी सम्पूर्ण भौतिक सृष्टि को भी इस दशा से मुक्त कर देंगे।

“सम्पूर्ण सृष्टि बड़ी आशा और धैर्य के साथ उस दिन की प्रतीक्षा कर रही है जब परमेश्वर अपने बच्चों को महिमा में प्रकट करेंगे। क्योंकि उसी दिन काँटे और ऊँटकटारे, पाप, मृत्यु और नाश... सब समाप्त हो जाएँगे, और हमारे चारों ओर की सारी सृष्टि भी उस महिमामय स्वतन्त्रता में सहभागी होगी जिसका आनन्द परमेश्वर की सन्तान उठाएगी। हम जानते हैं

कि आज तक सम्पूर्ण सृष्टि—यहाँ तक कि पशु और वनस्पतियाँ भी—पीड़ा सहती हुई उस महान दिन की प्रतीक्षा कर रही हैं" (रोमियों अध्याय 8 आयत 19 से 22)।

"और केवल सृष्टि ही नहीं, हम भी, जिन्होंने पवित्र आत्मा को आने वाली महिमा के पहले फल के रूप में पाया है, अपने भीतर कराहते हुए उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब परमेश्वर हमें अपनी सन्तान होने के पूरे अधिकार प्रदान करेंगे, अर्थात् वे नए शरीर जिन्हें उन्होंने हमारे लिए प्रतिज्ञा की है—ऐसे शरीर जो फिर कभी बीमार नहीं होंगे और कभी नहीं मरेंगे" (रोमियों अध्याय 8 आयत 23)।

इस पद का आशय यह संकेत देता है कि जो कुछ मनुष्य के साथ होगा, वही पशुओं के साथ भी होगा। जब हमें भ्रष्टता से मुक्त किया जाएगा, तब वे भी उससे मुक्त किए जाएँगे। प्रभु केवल हमारे शरीरों को ही कब्र से जीवित नहीं करेंगे, बल्कि वे अपनी मूल पशु-सृष्टि को भी मृत्यु से छुड़ाकर उन्हें भी नया जीवन प्रदान करेंगे।

यदि यह बात आपको विश्वास करने के लिए अत्यन्त अद्भुत प्रतीत होती है, तो इस अध्याय में पहले उद्धृत किए गए उसी भजन के एक और भाग पर ध्यान दीजिए।

"वहाँ समुद्र है, विशाल और विस्तृत, जिसमें छोटे-बड़े असंख्य जीव भरे हुए हैं। वहाँ जहाज़ चलते-फिरते हैं, और वहाँ वह लिव्यातान भी है जिसे तूने उसमें क्रीड़ा करने के लिए बनाया। ये सब उचित समय पर अपने भोजन के लिए तेरी ओर आशा से देखते हैं। जब तू उन्हें देता है, तब वे उसे बटोर लेते हैं; जब तू अपना हाथ खोलता है, तब वे उत्तम वस्तुओं से तृप्त हो जाते हैं" (भजन संहिता अध्याय 104 आयत 25 से 28)।

"जब तू अपना मुख छिपा लेता है, तब वे घबरा जाते हैं; जब तू उनका प्राण ले लेता है, तब वे मर जाते हैं और फिर मिट्टी में मिल जाते हैं। जब तू अपना आत्मा भेजता है, तब वे फिर से रचे जाते हैं, और तू पृथ्वी के स्वरूप को नया कर देता है" (भजन संहिता अध्याय 104 आयत 29 से 30)।

ध्यान दीजिए कि यहाँ इन प्राणियों की मृत्यु का वर्णन किस प्रकार किया गया है। जब पशु मरते हैं, तब उनके शरीर भी हमारी ही तरह मिट्टी में मिल जाते हैं। परन्तु बाइबल के अनुसार, जब परमेश्वर अपना आत्मा भेजते हैं, तब वे फिर से रचे जाते हैं और पृथ्वी का स्वरूप नया कर दिया जाता है। यहाँ "नया करना" का अर्थ ऐसी वस्तु बनाना नहीं है जो पहले कभी अस्तित्व में ही न रही हो, बल्कि उसका अर्थ है "पुनः स्थापित करना", "फिर से बनाना" या "पुनर्निर्माण करना"।

इस पुस्तक में पहले हम देख चुके हैं कि जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर पृथ्वी पर अपना प्रत्यक्ष राज्य स्थापित करेंगे, तब यह पृथ्वी नई कर दी जाएगी और पूर्ण रूप से पुनर्स्थापित होगी। यीशु मसीह की इस संसार में पुनः वापसी उस समय का संकेत होगी जब "सब वस्तुओं की अन्तिम पुनर्स्थापना" होगी (प्रेरितों के काम अध्याय 3 आयत 21)।

परमेश्वर कोई ऐसी पृथ्वी नहीं बनाएँगे जो पहले कभी अस्तित्व में न रही हो। वे इसी पृथ्वी को नया कर देंगे। और इस महान पुनर्स्थापना के एक भाग के रूप में वे पशुओं को भी पुनः जीवन देंगे।

प्रभु नए पशुओं की सृष्टि नहीं करेंगे। बल्कि जिन प्राणियों को उन्होंने पहले ही रचा है, उन्हीं को भ्रष्टता और मृत्यु की दासता से छुड़ाकर नया बना देंगे। वे उन्हें फिर से पृथ्वी पर जीवन प्रदान करेंगे, और यह उनकी मृत्यु पर पूर्ण विजय का एक अद्भुत और महिमामय प्रदर्शन होगा। यहाँ तक कि जो जातियाँ आज विलुप्त हो चुकी हैं, वे भी केवल कुछ समय के लिए ही हमारी दृष्टि से ओझल हुई हैं; वे सदा के लिए नष्ट नहीं हुई हैं।

अभी भी स्वर्ग में पशु हैं!

हम जानते हैं कि वर्तमान अदृश्य स्वर्ग में पशु विद्यमान हैं, क्योंकि प्रेरित यूहन्ना ने उन्हें देखा था। जब वे उस अदृश्य लोक में थे, तब उन्होंने सामूहिक आराधना का एक अत्यन्त महिमामय दृश्य देखा, और उस स्वर्गीय स्तुति-आराधना में पशु भी सम्मिलित थे।

यूहन्ना लिखते हैं, "फिर मैंने स्वर्ग में, पृथ्वी पर, पृथ्वी के नीचे और समुद्र में रहने वाले प्रत्येक प्राणी को, और उन सब वस्तुओं को जो उनमें हैं, यह कहते हुए सुना, 'जो सिंहासन पर विराजमान हैं और मेम्ने को युगानुयुग स्तुति, आदर, महिमा और सामर्थ्य प्राप्त हो'" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 13)।

• यहाँ जिस शब्द का अनुवाद "प्राणी" किया गया है, उसका अर्थ है "सृष्ट की गई वस्तु"। नए नियम के अन्य स्थानों पर भी यही शब्द मनुष्यों और पशुओं—दोनों के लिए प्रयोग किया गया है (2 कुरिन्थियों अध्याय 5 आयत 17; 1 तीमुथियुस अध्याय 4 आयत 4; याकूब अध्याय 1 आयत 18)।

• प्रकाशितवाक्य में केवल एक अन्य स्थान पर, जहाँ यूहन्ना अपने स्वर्गीय दर्शन का वर्णन करते हैं, इसी शब्द का प्रयोग स्पष्ट रूप से "पशुओं" के अर्थ में किया गया है (प्रकाशितवाक्य अध्याय 8 आयत 9)।

जब यूहन्ना ने आगे उस दृश्य का वर्णन किया, तो उसके सन्दर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ मनुष्य और पशु—दोनों—परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे।

"तब उन चार जीवित प्राणियों ने कहा, 'आमीन!' और चौबीसों प्राचीनों ने गिरकर आराधना की" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 14)।

यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इन चौबीस प्राचीनों और चार जीवित प्राणियों का सात बार उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा कि ये प्राणी परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर रहते हैं और निरन्तर उनकी आराधना करते हैं। उनका वर्णन इस प्रकार है—

"सिंहासन के बीचों-बीच और उसके चारों ओर चार जीवित प्राणी थे। वे आगे और पीछे, चारों ओर आँखों से भरे हुए थे। पहला जीवित प्राणी सिंह के समान था, दूसरा बैल के समान, तीसरे का मुख मनुष्य के समान था, और चौथा उड़ते हुए उकाब के समान था। उन चारों जीवित प्राणियों में से प्रत्येक के छह पंख थे, और वे भीतर तथा बाहर चारों ओर आँखों से भरे हुए थे। वे दिन-रात बिना रुके यह कहते रहते थे, 'पवित्र, पवित्र, पवित्र है प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान, जो था, जो है और जो आने वाला है'" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 आयत 6 से 8)।

इन पदों में जिस शब्द का अनुवाद "जीवित प्राणी" किया गया है, उसका अर्थ है "जीवित अस्तित्व", और अंग्रेज़ी में उसका समतुल्य अर्थ "पशु" या "जीव" भी होता है। पवित्रशास्त्र के अन्य पदों में भी यही शब्द स्पष्ट रूप से "पशुओं" के अर्थ में प्रयोग किया गया है (इब्रानियों अध्याय 13 आयत 11; और 2 पतरस अध्याय 2 आयत 12; यहूदा अध्याय 1 आयत 10)।

• यूहन्ना ने लिखा कि ये जीवित प्राणी क्रमशः सिंह, बैल, मनुष्य और उकाब के समान दिखाई देते थे। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से नहीं बताती कि वे वास्तव में कौन हैं, परन्तु इतना अवश्य स्पष्ट है कि वे चौबीस प्राचीनों और स्वर्गदूतों से भिन्न हैं (प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 आयत 11)।

• वे जो भी हों, यह स्पष्ट है कि ये प्राणी बुद्धिमान, स्पष्ट रूप से बोलने वाले, मनुष्य नहीं और स्वर्गदूत भी नहीं हैं। वे स्वर्ग में रहते हैं और निरन्तर परमेश्वर की स्तुति करते हैं। सम्भव है कि वे पृथ्वी के पशुओं के आदर्श रूप या मूल प्रतिरूप हों, क्योंकि उनमें उन पशुओं से कुछ समानता दिखाई देती है जिन्हें यूहन्ना पहचानते थे।

यूहन्ना ने स्वर्ग में अन्य पशुओं को भी देखा। उन्होंने लिखा कि उन्होंने "आकाश के मध्य में एक अकेले उकाब को उड़ते हुए देखा, और उसे बड़े ऊँचे शब्द से पुकारते हुए सुना" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 8 आयत 13)।

उन्होंने यह भी देखा कि प्रभु यीशु और उनकी स्वर्गीय सेनाएँ घोड़ों पर सवार होकर स्वर्ग से निकल रही थीं।

"तब मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखो, एक श्वेत घोड़ा था। उस पर बैठने वाला 'विश्वासयोग्य और सत्य' कहलाता है... और स्वर्ग की सेनाएँ श्वेत घोड़ों पर सवार होकर उसके पीछे-पीछे चल रही थीं" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 आयत 11 से 14)।

और यह भी स्मरण रखिए कि इस्राएल के महान भविष्यद्वक्ता एलीशा ने भी अदृश्य लोक में घोड़ों को देखा था (2 राजा अध्याय 6 आयत 17)।

मेरे पालतू पशुओं का क्या होगा?

मुझे पूरा विश्वास है कि आपमें से कुछ लोग यह सोच रहे होंगे, "मुझे इस बात से विशेष अन्तर नहीं पड़ता कि स्वर्ग में कोई उकाब या श्वेत घोड़ा है। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि मेरे प्रिय पालतू पशुओं का क्या होगा? क्या मैं उन्हें फिर से देखूँगा? और यदि हाँ, तो क्या मुझे मरे हुओं के पुनरुत्थान तक प्रतीक्षा करनी होगी? क्या मेरा कुत्ता या बिल्ली अभी स्वर्ग में है?"

जब हम परमेश्वर, मनुष्य और पशुओं के विषय में बाइबल की सम्पूर्ण शिक्षा पर विचार करते हैं, तो हमारे पास यह मानने के लिए ठोस आधार मिलता है कि हमारे प्रिय रोएँदार और पंखों वाले साथी वास्तव में अदृश्य स्वर्ग में हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दीजिए।

पहला: पशुओं के भी "प्राण" हैं।

कुछ लोग इस विचार का विरोध करते हैं कि पालतू पशु स्वर्ग में जाते हैं। उनका कहना है कि पशुओं के पास आत्मा या प्राण नहीं होते, इसलिए जब वे मर जाते हैं, तो उनका अस्तित्व सदा के लिए समाप्त हो जाता है। परन्तु यह विचार परमेश्वर के वचन की शिक्षा के विपरीत है।

उत्पत्ति की पुस्तक में सृष्टि का जो विवरण दिया गया है, उसमें मनुष्य और पशु—दोनों के लिए समान प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है। इससे यह प्रकट होता है कि जैसे मनुष्य के अस्तित्व में एक अभौतिक और अदृश्य पक्ष है, वैसे ही इस संसार के प्राणियों में भी है।

जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आदम की सृष्टि की, तब पहले उन्होंने पृथ्वी की मिट्टी से उसका भौतिक शरीर बनाया। परन्तु तब तक आदम में जीवन नहीं था, जब तक कि प्रभु ने "उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँका, और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया" (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 7)।

मूल इब्रानी भाषा में "जीवन का श्वास" के लिए "खाय" शब्द का प्रयोग किया गया है। और "जीवित प्राणी" (या जीवित प्राण) के लिए "नेफेश" शब्द प्रयुक्त हुआ है, जो मनुष्य के उस अभौतिक, अदृश्य और आन्तरिक अस्तित्व की ओर संकेत करता है।

उत्पत्ति की पुस्तक में यही दोनों इब्रानी शब्द पशुओं के लिए भी प्रयुक्त हुए हैं। इसलिए पवित्रशास्त्र के प्रारम्भिक पाठक स्वाभाविक रूप से यही समझते कि पशुओं के अस्तित्व में भी एक अभौतिक पक्ष है।

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'जल जीवित प्राणियों [नेफेश] से भर जाए'... तब परमेश्वर ने समुद्र के बड़े-बड़े जीवों और सब प्रकार के जीवित [नेफेश] तथा चलने-फिरने वाले प्राणियों की सृष्टि की, जिनसे जल भर गया" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 20 से 21)।

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी अपनी-अपनी जाति के अनुसार जीवित प्राणियों [नेफेश] को उत्पन्न करे—घरेलू पशु, भूमि पर रेंगने वाले जीव और वन्य पशु'" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 24)।

"और परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी के सब पशुओं, आकाश के सब पक्षियों और भूमि पर रेंगने वाले सब जीवों को, जिनमें जीवन का श्वास [खाय] है, मैं सब हरे-भरे पौधे भोजन के लिए देता हूँ'" (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 30)।

मसीह के जन्म से तीसरी और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया। जिन विद्वानों ने इब्रानी से यूनानी में यह प्रथम अनुवाद किया, उन्होंने "नेफेश" शब्द के लिए यूनानी शब्द "साइके" का प्रयोग किया। "साइके" का अर्थ जीवन का मूल स्रोत या वह अभौतिक अस्तित्व है जो मृत्यु के बाद भी बना रहता है।

जब इन विद्वानों ने ऊपर दिए गए पदों का अनुवाद किया, तब उन्हें पशुओं के लिए ऐसा शब्द प्रयोग करने में कोई कठिनाई नहीं हुई जिसका अर्थ वही था जिसे आज हम सामान्य रूप से "आत्मा" या "प्राण" कहते हैं। यदि हम कलीसिया के इतिहास का अध्ययन करें, तो हमें ज्ञात होता है कि पशुओं में भी एक अभौतिक पक्ष होने का विश्वास मसीही धर्म के प्रारम्भिक दिनों से लेकर सत्रहवीं शताब्दी और ज्ञानोदय के युग तक बना रहा (टिप्पणी 8 देखें)।

जिस किसी ने भी किसी पालतू पशु—जैसे कुत्ते या बिल्ली—के साथ निकटता से जीवन बिताया है, वह जानता है कि वे केवल ऐसे प्राणी नहीं हैं जो बिना किसी चेतना या आन्तरिक अस्तित्व के केवल स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार कार्य करते हों। पशु व्यक्तित्व, बुद्धिमत्ता और भावनाओं जैसे अभौतिक गुणों को भी प्रकट करते हैं।

हम अक्सर समाचारों में ऐसी घटनाएँ सुनते हैं जिनमें पालतू पशु अपने मानवीय साथियों का जीवन बचाने के लिए अपने ही प्राणों को जोखिम में डाल देते हैं। बाइबल भी ऐसी ही एक घटना का वर्णन करती है। एक गदही ने अपने स्वामी को निश्चित विनाश से बचाते समय साहस, करुणा और निष्ठा का परिचय दिया। उस घटना में परमेश्वर ने उस पशु का मुँह खोल दिया, और उसने अपने विचारों तथा भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। उस विवरण में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे यह संकेत मिले कि उसे शाब्दिक रूप से सत्य न माना जाए (गिनती अध्याय 22 आयत 21 से 35)।

क्या पशु मरकर सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं?

कुछ लोग सभोपदेशक की पुस्तक के एक भाग का गलत अर्थ लगाकर यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि पशु मरने के बाद उनका अस्तित्व सदा के लिए समाप्त हो जाता है। परन्तु यह उस पुस्तक का सही अर्थ नहीं है।

सभोपदेशक एक ऐसे व्यक्ति की खोज का वर्णन है जो जीवन के अर्थ और सन्तोष को ढूँढ़ रहा था, साथ ही जीवन में दिखाई देने वाले अन्याय और असमानताओं पर विलाप भी कर रहा था। अन्त में लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि परमेश्वर के बिना जीवन निरर्थक है। उसने पशुओं का उल्लेख इस विचार को व्यक्त करने के लिए किया कि देखने में ऐसा प्रतीत होता है मानो मनुष्य को पशुओं पर कोई विशेष लाभ नहीं है, क्योंकि अन्ततः मनुष्य और पशु—दोनों को मृत्यु का सामना करना पड़ता है।

“क्योंकि मनुष्यों पर जो घटना घटती है, वही पशुओं पर भी घटती है। जैसा एक मरता है, वैसा ही दूसरा भी मरता है। सबमें एक ही श्वास और आत्मा है; इसलिए मनुष्य को पशु पर कोई बढ़ाई नहीं है, क्योंकि सब कुछ व्यर्थ है। सब एक ही स्थान पर जाते हैं। सब मिट्टी से बने हैं और सब फिर मिट्टी में मिल जाते हैं” (सभोपदेशक अध्याय 3 आयत 19 से 20)।

“कौन जानता है कि मनुष्य की आत्मा ऊपर जाती है और पशु की आत्मा नीचे पृथ्वी में जाती है?” (सभोपदेशक अध्याय 3 आयत 21)।

जब लेखक ने ये बातें लिखीं, तब उसका उद्देश्य पशुओं के अनन्त भविष्य या उसके अभाव के विषय में कोई धर्मशास्त्रीय शिक्षा देना नहीं था। उसका मुख्य सन्देश यह था कि कोई भी मृत्यु से नहीं बच सकता।

वास्तव में, यह अंश इस विचार का समर्थन करता है कि पशु केवल भौतिक शरीर मात्र नहीं हैं। ध्यान दीजिए कि लेखक ने मनुष्यों और पशुओं—दोनों के लिए "आत्मा" शब्द का प्रयोग किया है। इससे वह स्वीकार करता है कि दोनों में एक अभौतिक पक्ष है, जिसे हम सामान्यतः "प्राण" या "आत्मा"कहते हैं।

जैसा कि मैं पहले भी कह चुकी हूँ, पशु परमेश्वर के स्वरूप में नहीं बनाए गए हैं और वे मनुष्यों के समान नहीं हैं। फिर भी, यह स्पष्ट है कि उनके अस्तित्व में भी एक अभौतिक, अमानवीय पक्ष है।

दूसरा: यह निरन्तरता का एक भाग है।

हमारे भविष्य में निरन्तरता होगी—वही व्यक्तिगत पहचान, वही पृथ्वी, वही संस्कृतियाँ और वही सभ्यताएँ। यही सिद्धान्त इस बात के पक्ष में भी एक सशक्त आधार प्रस्तुत करता है कि पशुओं का अस्तित्व भी बना रहेगा।

वे ही पशु जो कभी पृथ्वी पर रहते थे, अब स्वर्ग में हैं, और एक दिन नई पृथ्वी पर फिर से जीवित रहेंगे।

यह स्मरण रखिए कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि को अपनी महिमा के लिए बनाया है। हमारी ही तरह पशुओं का उद्देश्य भी प्रभु की स्तुति करना और उनका आदर करना है। यह बात तर्कसंगत नहीं प्रतीत होती कि उनकी सम्पूर्ण सृष्टिगत भूमिका केवल इस पतित संसार के कुछ वर्षों तक ही सीमित रह जाए। आने वाले जीवन में ही हम सब—मनुष्य और पशु दोनों—अपने निर्धारित उद्देश्य की पूर्णता को प्राप्त करेंगे।

"वन्य पशुओं और सब घरेलू पशुओं, रेंगने वाले सब जीवों और उड़ने वाले सब पक्षियों; पृथ्वी के राजाओं और सब जातियों, हाकिमों और पृथ्वी के सब न्यायियों; जवानों और कुँवारियों, वृद्धों और बालकों—सब यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि केवल उसी का नाम महान है; उसकी महिमा पृथ्वी और आकाश से भी ऊँची है" (भजन संहिता अध्याय 148 आयत 10 से 13)।

"जितने प्राणी श्वास लेते हैं, वे सब यहोवा की स्तुति करें" (भजन संहिता अध्याय 150 आयत 6)।

तीसरा: परमेश्वर एक भले परमेश्वर हैं।

हमारे उद्धारकर्ता यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए एक पिता हैं, और वे पृथ्वी के सबसे अच्छे पिता से भी कहीं अधिक भले हैं (मत्ती अध्याय 7 आयत 9 से 11)।

तो फिर वे अपने बच्चों के लिए पशुओं को साथी और पालतू प्राणी के रूप में क्यों बनाएँगे, यदि उनका उद्देश्य केवल इतना हो कि हमें थोड़े-से समय के लिए ही उनका साथ मिले और फिर उन्हें सदा के लिए हमसे छीन लिया जाए?

जब हम परमेश्वर के स्वभाव पर विचार करते हैं, तो ऐसी बात की सम्भावना अत्यन्त कम प्रतीत होती है। कोई भी अच्छा पिता अपने बच्चों के साथ इतनी कठोरता नहीं करेगा।

यद्यपि बाइबल में ऐसा कोई एक पद नहीं है जो सीधे-सीधे यह कहता हो कि पशु स्वर्ग में जाते हैं, फिर भी जब हम इन सभी पदों को एक साथ देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मृत्यु के बाद हमारे पालतू पशुओं का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता।

जिस प्रकार हमारे शरीर मिट्टी में मिल जाते हैं, उसी प्रकार उनके शरीर भी मिट्टी में लौट जाते हैं। परन्तु वे वर्तमान स्वर्ग में प्रवेश करते हैं, जहाँ वे अपने भौतिक शरीरों के साथ पुनर्मिलन और हमारे साथ फिर से मिलने की प्रतीक्षा करते हैं।

इसलिए हम इस आशा के साथ आगे देख सकते हैं कि जब हमारी मृत्यु के बाद हम अदृश्य स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, या जब प्रभु यीशु पृथ्वी पर पुनः आएँगे—जो भी पहले हो—तब हमारा अपने प्रिय पालतू साथियों के साथ फिर से मिलन होगा।

15

पृथ्वी पर स्वर्ग।

स्वर्ग परमेश्वर का निवासस्थान है, और यद्यपि वह एक अन्य आयाम में है, फिर भी परमेश्वर की सदैव यही इच्छा रही है कि वह इस निवासस्थान को मनुष्यों के साथ साझा करें। उद्धार की योजना अपनी पूर्णता को तब प्राप्त करेगी जब ये दोनों आयाम—स्वर्ग और पृथ्वी—एक हो जाएँगे और सदा के लिए प्रभु तथा उनके छुड़ाए हुए परिवार का एक ही घर बन जाएँगे। नई पृथ्वी वास्तव में यही होगी—पृथ्वी पर स्वर्ग। आइए, मैं इसे समझाती हूँ।

पृथ्वी पर स्वर्ग।

आने वाले समय के विषय में सही समझ प्राप्त करने के लिए हमें फिर से उस समय की ओर देखना होगा जब पाप संसार में नहीं आया था।

बाइबल के प्रारम्भिक पृष्ठ हमें बताते हैं कि अदन की वाटिका में परमेश्वर और मनुष्य साथ-साथ चलते और बातचीत करते थे। उत्पत्ति की पुस्तक का वर्णन विशेष रूप से अदन की वाटिका में स्थित दो वृक्षों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है—जीवन का वृक्ष और भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष।

पवित्रशास्त्र बताता है कि प्रभु परमेश्वर ने हमारे प्रथम माता-पिता को चेतावनी दी थी कि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाएँ, क्योंकि जिस दिन वे उसे खाएँगे, उसी दिन अवश्य मर जाएँगे (उत्पत्ति अध्याय 2 आयत 17)।

परन्तु आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, और उनकी इस अवज्ञा के कारण पाप, भ्रष्टता और मृत्यु का श्राप सम्पूर्ण मानवजाति तथा सारी पृथ्वी पर आ गया (टिप्पणी 9 देखें)।

पवित्रशास्त्र में इसके बाद भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फिर कभी उल्लेख नहीं मिलता।

परन्तु जीवन के वृक्ष का पवित्रशास्त्र में दो और स्थानों पर उल्लेख मिलता है, और ये दोनों संदर्भ प्रकट करते हैं कि यह अद्‌वितीय वृक्ष अदृश्य स्वर्ग में स्थित है। प्रभु यीशु ने "जीवन के उस वृक्ष" का उल्लेख किया, "जो परमेश्वर के स्वर्गलोक के बीच में है" (प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 आयत 7)। प्रेरित यूहन्ना ने भी लिखा कि उन्होंने स्वर्ग की राजधानी में जीवन के वृक्ष को देखा (प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 आयत 1 से 2)।

यह तथ्य कि आदम और हव्वा को इस वृक्ष तक पहुँच प्राप्त थी, इस बात का संकेत है कि आरम्भ में पृथ्वी पर अदृश्य आयाम मनुष्यों के लिए खुला हुआ था। अदन की वाटिका में स्वर्ग प्रत्यक्ष रूप से प्रकट था। और यद्‌यपि मनुष्य को भौतिक संसार में रहने के लिए बनाया गया था, फिर भी वह परमेश्वर के निवासस्थान में उनके साथ स्वतंत्र रूप से संगति कर सकता था और अदृश्य परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रख सकता था।

स्वर्गलोक का खो जाना।

जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तब अदन की वाटिका उनके लिए बन्द हो गई, और वे जीवन के वृक्ष तक पहुँचने के अधिकार से वंचित हो गए।

बलवन्त स्वर्गदूतों को, जिन्हें करूब कहा जाता है, अदन की वाटिका के प्रवेश द्‌वार की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया। अदन में इन विशेष स्वर्गदूतों की उपस्थिति भी इस बात का एक और प्रमाण है कि पाप के प्रवेश करने से पहले सर्वशक्तिमान परमेश्वर का निवासस्थान मनुष्यों के लिए खुला हुआ था, और स्वर्ग तथा पृथ्वी के बीच स्वतंत्र संगति और संपर्क था, क्योंकि यही करूब अदृश्य स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर उपस्थित रहते हैं (भजन संहिता अध्याय 99 आयत 1; यशायाह अध्याय 37 आयत 16)।

"इस प्रकार यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी को अदन की वाटिका से निकाल दिया, और आदम को उस भूमि की खेती करने के लिए भेज दिया जिससे वह बनाया गया था। जब उसने उन्हें वाटिका से निकाल दिया, तब उसने अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को नियुक्त किया, और एक ज्वलन्त तलवार जो चारों ओर घूमती रहती थी, जीवन के वृक्ष के मार्ग की रक्षा करने के लिए रखी" (उत्पत्ति अध्याय 3 आयत 23 से 24)।

इसके कुछ समय बाद परमेश्वर का निवासस्थान—अर्थात् स्वर्गलोक या परलोक—न केवल मनुष्यों की पहुँच से बाहर हो गया, बल्कि उनकी दृष्टि से भी अदृश्य हो गया।

स्वर्गलोक की पुनःस्थापना।

लगभग दो हज़ार वर्ष पहले प्रभु यीशु मसीह अदृश्य स्वर्ग से समय और स्थान की इस दुनिया में आए, ताकि क्रूस पर पाप का मूल्य चुकाकर इस स्थिति का समाधान कर सकें। हमारे उद्धारकर्ता ने उन सबके लिए, जो उन पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर और उनके निवासस्थान तक पहुँच को फिर से बहाल कर दिया। जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है, "मसीह ने भी पापों के कारण एक ही बार दुःख उठाया, धर्मी ने अधर्मियों के लिए, ताकि वह हमें परमेश्वर के पास पहुँचा दे" (1 पतरस अध्याय 3 आयत 18)।

अब मसीह पर विश्वास करने, तथा उनके मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान पर भरोसा रखने के द्वारा स्त्री और पुरुष फिर से स्वर्गलोक में जीवन का अनुभव कर सकते हैं। जो कोई भी यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार करता है, वह मृत्यु के समय अपने भौतिक शरीर से अलग होने पर परमेश्वर के अदृश्य निवासस्थान में प्रवेश करता है।

किन्तु परमेश्वर की उद्धार की योजना केवल यहीं तक सीमित नहीं है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर उस सब कुछ को पुनःस्थापित करने जा रहे हैं जो पाप के कारण खो गया था, जिसमें दृश्य और अदृश्य आयामों के बीच बिना किसी बाधा के संगति और संपर्क भी सम्मिलित है।

परमेश्वर की कभी यह इच्छा नहीं थी कि इन दोनों क्षेत्रों के बीच कोई विभाजन बना रहे। उनकी योजना यह थी कि आत्मिक आयाम भौतिक संसार के माध्यम से पूर्ण रूप से प्रकट हो।

प्रभु यीशु के पुनः आगमन के समय परमेश्वर दृश्य और अदृश्य दोनों लोकों को एक साथ मिला देंगे, और उनका निवासस्थान एक बार फिर पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के लिए खुला होगा।

"जब समय पूरा होगा, तब परमेश्वर अपनी योजना के अनुसार मसीह में स्वर्ग और पृथ्वी की सारी वस्तुओं को एक साथ इकट्ठा करेगा।" (इफिसियों अध्याय 1 आयत 10)

यही उद्धार की योजना की परिपूर्णता है—दो अलग-अलग लोकों का प्रभु यीशु मसीह के प्रभुत्व के अधीन एक हो जाना।

निस्सन्देह, उस दूसरे आयाम के साथ स्वतंत्र रूप से संपर्क रखने की कल्पना, जो हमारे वर्तमान संसार के माध्यम से पूर्ण रूप से प्रकट होगा, इस समय हमारी समझ से परे है। फिर भी परमेश्वर का वचन नई पृथ्वी के विषय में हमें इतना अवश्य बताता है कि हम विश्वासपूर्वक जान सकें कि वह स्थान अद्भुत होगा, न कि अजीब या भय उत्पन्न करने वाला।

बाइबल का आरम्भ और अन्त—दोनों ही इस सत्य को प्रकट करते हैं कि परमेश्वर अपनी प्रजा के साथ पृथ्वी पर निवास करते हैं। आरम्भ में वे अदन की वाटिका में अपने मनुष्य आदम के साथ थे, और अन्त में वे नई पृथ्वी पर अपने सभी छुड़ाए हुए पुत्रों और पुत्रियों के साथ रहेंगे।

उस समय उनका घर और हमारा घर एक ही होगा—और तब उद्धार की योजना अपनी पूर्णता को प्राप्त कर चुकी होगी।

जब हम अपने भविष्य के इस अध्ययन में आगे बढ़ते आए हैं, तब हमने बार-बार प्रेरित यूहन्ना और उस प्रकाशन का उल्लेख किया है जो उन्हें स्वर्ग की यात्रा के दौरान प्राप्त हुआ था। अब इस विषय में एक और महत्वपूर्ण बात पर ध्यान दीजिए।

यूहन्ना ने देखा कि अदृश्य लोक इस दृश्य संसार में प्रकट हो रहा है, जब उन्हें स्वर्ग की राजधानी को पृथ्वी पर उतरते हुए दिखाया गया। वह दृश्य इतना मनोहर और हृदयस्पर्शी था कि उन्होंने उसकी तुलना उस दुल्हन की अनुपम शोभा से की, जो अपने पति से विवाह करने के लिए सुसज्जित होकर आती है।

“मैंने पवित्र नगर, अर्थात् नए यरूशलेम को, परमेश्वर के पास से स्वर्ग से उतरते हुए देखा। वह अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के समान तैयार किया गया था। तब मैंने सिंहासन की ओर से एक बड़ा शब्द सुना, जो कह रहा था, ‘देखो, परमेश्वर का निवास मनुष्यों के साथ है। वह उनके साथ वास करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और स्वयं परमेश्वर उनके साथ रहेगा।’” (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 आयत 2 से 3)।

यूहन्ना ने स्वर्ग और पृथ्वी को एक होते हुए देखा, ताकि वे सदा के लिए प्रभु परमेश्वर और उनके परिवार का एक ही घर बन जाएँ।

जब पृथ्वी नई बना दी जाएगी, तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर का निवासस्थान एक बार फिर पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के लिए सुलभ होगा। तब स्वर्गलोक पूरी तरह पुनःस्थापित हो जाएगा—पृथ्वी पर स्वर्ग, और स्वर्ग में परमेश्वर तथा उनकी प्रजा का अनन्त निवास।

16

सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाक़ी है।

हम सब जीवन के उस मोड़ पर पहुँचते हैं जहाँ हमारे पीछे बीते हुए वर्ष, आगे बचे हुए वर्षों से अधिक हो जाते हैं। समय की घड़ी निरन्तर आगे बढ़ रही है। हमें इस वास्तविकता का सामना करना पड़ता है कि हमारी अनेक आशाएँ और सपने इस जीवन में पूरे नहीं होंगे, और जिन हानियों तथा अन्यायों का हमने अनुभव किया है, वे भी इस संसार में पूरी तरह ठीक नहीं होंगे।

बढ़ती हुई आयु केवल हमारी पहले जैसी शक्ति और स्फूर्ति ही नहीं छीनती, बल्कि हमारे पास समय भी सीमित रह जाता है। परन्तु बाइबल हमें एक अद्‌भुत सुसमाचार सुनाती है। यह वर्तमान जीवन पृथ्वी पर हमारे अस्तित्व का अन्तिम अवसर नहीं है। इसलिए हमें इस दबाव के साथ जीने की आवश्यकता नहीं कि यदि हमारे लक्ष्य हमारी मृत्यु से पहले पूरे नहीं हुए, या यदि अन्यायों का न्याय इस जीवन में नहीं हुआ, तो वह कभी नहीं होगा।

हमारे जीवन के सबसे श्रेष्ठ दिन अभी आने वाले हैं—पहले स्वर्ग में, और फिर नई पृथ्वी पर, जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी एक ही हो जाएँगे।

यह जीवन अधूरा है।

आदम और हव्वा के बाद इस संसार में जन्म लेने वाले अधिकांश लोगों का जीवन परिश्रम, पीड़ा, अभाव और निराशा से भरा रहा है। युगों से मानवजाति ने रोग, निर्धनता और अकाल का सामना किया है, साथ ही प्राकृतिक आपदाओं और राजनीतिक उथल-पुथल से उत्पन्न होने वाली विपत्तियों को भी सहा है।

पश्चिमी देशों में रहने वाले बहुत-से लोग इस दृष्टि से सौभाग्यशाली हैं कि वे अपेक्षाकृत शान्ति, स्वतंत्रता और समृद्धि वाले समाजों में रहते हैं, जहाँ आधुनिक विज्ञान, तकनीक और

चिकित्सा की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। फिर भी, यद्यपि हमारा जीवन इस पृथ्वी पर अब तक जीवित रहे अधिकांश लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक सुविधाजनक है, फिर भी जीवन आज भी संघर्षों से भरा हुआ है।

• हम निरन्तर दबाव और निराशा के बीच जीवन बिताते हैं। हममें से अधिकांश लोग ऐसे कार्य करते हैं जिन्हें हम वास्तव में पसन्द नहीं करते। और यदि आप इतने सौभाग्यशाली हैं कि आपको अपनी पसन्द का कार्य मिला है, तब भी आपको कठिन स्वभाव वाले अधिकारियों, अप्रिय सहकर्मियों, कभी समाप्त न होने वाले कागज़ी कार्यों और अनावश्यक सरकारी नियमों का सामना करना पड़ता है।

• जब हमें विश्राम, मनोरंजन या आनन्द के लिए समय मिलता भी है, तब भी वह प्रायः किसी न किसी कठिनाई से प्रभावित हो जाता है। जिस सप्ताह आप समुद्र तट पर छुट्टियाँ बिताने जाते हैं, उसी समय समुद्र तट जहरीली जेलीफ़िश से भर जाता है। आपका सप्ताहांत का कैम्पिंग भ्रमण पास वाले केबिन के शोरगुल करने वाले पड़ोसियों के कारण बिगड़ जाता है। गर्मियों की सुखद छुट्टियाँ भी इस सोच से फीकी पड़ जाती हैं कि सोमवार को फिर काम पर लौटना है।

• यहाँ तक कि जब सब कुछ ठीक चल रहा होता है, तब भी हम जानते हैं कि किसी भी क्षण फ़ोन की एक घंटी ऐसी दुखद समाचार ला सकती है जो हमारे पूरे जीवन को बदलकर रख दे।

• और इस संसार की कोई भी आधुनिक तकनीक हमें परिवारों के टूटने, सम्बन्धों के बिखरने या किसी प्रियजन की मृत्यु से उत्पन्न होने वाले दुःख से नहीं बचा सकती।

जीवन केवल अस्थिर ही नहीं है, बल्कि हमारी बहुत-सी इच्छाएँ अधूरी रह जाती हैं, और हमारी अनेक योग्यताएँ तथा प्रतिभाएँ इस पतित संसार की कठोर परिस्थितियों के कारण कभी विकसित ही नहीं हो पातीं। टूटे हुए सपनों, खोए हुए अवसरों और उपयोग में न आ सकी प्रतिभाओं की सूची बहुत लम्बी है।

• संसार के आरम्भ से लेकर आज तक असंख्य लोग वयस्क होने से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो गए और अपने जीवन की पूरी क्षमता को कभी विकसित ही नहीं कर सके।

• असंख्य लोगों का जीवन और उनका भविष्य इसलिए बदल गया क्योंकि वे युद्ध के समय जन्मे, किसी निर्दयी और अत्याचारी शासक के अधीन रहने वाले देश में रहे, या ऐसे साम्राज्य में जीवन बिताया जहाँ दास-प्रथा प्रचलित थी।

• कल्पना कीजिए कि कोई अत्यन्त प्रतिभाशाली लेखक दास के रूप में जन्मा हो, जिसे लिखना सीखने का अवसर ही न मिला और जिसने कभी एक शब्द भी न लिखा। या कोई विलक्षण आविष्कारक, जिसे अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए सप्ताह में अस्सी घंटे काम करना पड़ता हो और जिसके पास कुछ नया आविष्कार करने का समय ही न हो। सोचिए उस महान खिलाड़ी के बारे में, जो एक दुर्घटना में अपना पैर खो बैठा और कभी पेशेवर खेल न खेल सका। या उस सुरीली गायिका के विषय में, जो किसी निर्धन देश में मलेरिया से अपनी युवावस्था में ही मर गई, इससे पहले कि उसकी आवाज़ पूरी तरह विकसित हो पाती।

• कितने लोग ऐसे रहे होंगे जो विवाह करना चाहते थे, परन्तु उन्हें कभी जीवनसाथी नहीं मिला? और कितने ऐसे थे जिन्होंने विवाह तो किया, परन्तु उनका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुःखद रहा? कितने दम्पतियों ने सन्तान की लालसा की, परन्तु उन्हें कभी सन्तान नहीं मिली, या उनका शिशु गर्भपात में खो गया, अथवा किसी दुर्घटना या बीमारी के कारण उनकी सन्तान उनसे छिन गई? और उन बच्चों का क्या, जिन्होंने अत्याचार और उपेक्षा के कारण कभी एक सुखी परिवार का आनन्द ही नहीं जाना?

• और जिन कुछ लोगों ने अपने सपनों को पूरा किया तथा अधिकांशतः सुखी और समृद्ध जीवन जिया, अन्ततः बुढ़ापा और मृत्यु ने उनसे वह सब भी छीन लिया।

प्रभु की कभी भी यह इच्छा नहीं थी कि जीवन ऐसा हो। यदि हम बाइबल के विवरण को ध्यानपूर्वक देखें, तो पाएँगे कि आदम—और आदम में सम्पूर्ण मानवजाति—की सृष्टि करने के बाद परमेश्वर ने सबसे पहला कार्य उन्हें आशीष देना किया।

“तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में सृजा; परमेश्वर के स्वरूप में उसने उसे सृजा; नर और नारी करके उसने उनकी सृष्टि की। और परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी।” (उत्पत्ति अध्याय 1 आयत 27 से 28)।

अन्य बातों के साथ-साथ, आशीष देने का अर्थ है “समृद्ध और आनन्दित बनाना।” आरम्भ से ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर की योजना यह थी कि उनका परिवार उस घर में, जिसे उन्होंने हमारे लिए बनाया, आनन्द, सन्तोष और समृद्धि के साथ फले-फूले। परन्तु पाप, भ्रष्टता और मृत्यु के कारण यह उद्देश्य पूरा नहीं हो सका।

यदि पृथ्वी पर निरन्तर सुखी और समृद्ध जीवन पाने का यही एकमात्र अवसर होता, तो मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना असफल सिद्ध होती। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद कि ऐसा नहीं है। सम्पूर्ण मानवजाति को आशीष देने की प्रभु की योजना अवश्य पूरी होगी। आने

वाले जीवन में हर अन्याय ठीक किया जाएगा और सब कुछ अपनी सही अवस्था में पुनःस्थापित होगा। उद्धार की योजना अत्यन्त महान और व्यापक है!

पुनःस्थापना और प्रतिपूर्ति।

यद्यपि परमेश्वर इस वर्तमान जीवन में भी अपने लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, फिर भी जीवन के अन्यायों को पूरी तरह उलट देने, हर हानि की प्रतिपूर्ति करने और अधूरे सपनों तथा इच्छाओं को पूरा करने का सर्वोच्च समय अभी भविष्य में है।

इस जीवन के बाद आने वाले जीवन में प्रभु उन सम्बन्धों, अवसरों और प्रतिभाओं को पुनःस्थापित करेंगे जिन्हें इस संसार की कठिनाइयों ने हमसे छीन लिया। स्वर्ग में जाना केवल दुःख और पीड़ा का अन्त होना ही नहीं है, बल्कि यह पुनःस्थापना और प्रतिपूर्ति का भी समय होगा।

• प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा कि इस जीवन के दुःख और अन्याय स्वर्ग में उलट दिए जाएँगे।

“धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त किए जाओगे। धन्य हो तुम, जो अब रोते हो, क्योंकि तुम हँसोगे। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मनुष्य के पुत्र के कारण तुमसे बैर रखेंगे, तुम्हें अपने बीच से निकाल देंगे, तुम्हारा अपमान करेंगे और तुम्हारे नाम को बुरा जानकर अस्वीकार करेंगे। उस दिन आनन्दित होना और खुशी से उछलना, क्योंकि देखो, स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल बड़ा है।” (लूका अध्याय 6 आयत 21 से 23)।

• प्रभु ने अपने मूल बारह शिष्यों को यह आश्वासन दिया कि उनके पीछे चलने के कारण उन्होंने जो कुछ भी त्याग दिया है, वह सब उनके अनन्त राज्य में उन्हें लौटा दिया जाएगा।

“जिस किसी ने मेरे कारण घर, या भाई, या बहन, या पिता, या माता, या पत्नी, या बच्चे, या खेत छोड़े हैं, वह सौ गुना पाएगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।” (मत्ती अध्याय 19 आयत 29)।

• प्रेरित पौलुस ने नई पृथ्वी के सन्दर्भ में लिखा:

“मेरे विचार में इस वर्तमान समय के दुःख उस महान महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं, जो भविष्य में हम पर प्रकट होने वाली है।” (रोमियों अध्याय 8 आयत 18)।

हानियों का प्रतिफल, अवसरों का उद्धार और सम्बन्धों की पुनःस्थापना।

बहुत कम लोग इस सत्य के साथ जीवन जीते हैं कि केवल यही वर्तमान जीवन ही सब कुछ नहीं है। इसलिए जब कोई युवती विवाह किए बिना और परिवार बसाए बिना ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है, या कोई पिता अपने छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तब उस सम्बन्ध के खोने का दुःख उन खोए हुए अवसरों के कारण और भी गहरा हो जाता है।

हम शोक करते हैं कि वह पिता अपने बच्चों को बड़ा होते हुए नहीं देख पाएगा, और हमें उस युवती के लिए दुःख होता है जिसे विवाह और परिवार का अनुभव करने का अवसर नहीं मिला। परन्तु यदि वे दोनों स्वर्ग में हैं, तो अब वे ऐसे लोक में रहते हैं जहाँ कोई हानि नहीं है और जहाँ हर अन्याय को ठीक कर दिया जाता है।

हम कौन होते हैं यह कहने वाले कि उस युवा पिता को अपने बच्चों के बढ़ने और विकसित होने का कोई ज्ञान नहीं है, जबकि बाइबल प्रकट करती है कि स्वर्ग में रहने वाले लोग पृथ्वी पर होने वाली कुछ घटनाओं से परिचित होते हैं?

• प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से कुछ समय पहले मूसा और एलिय्याह अदृश्य लोक से प्रकट होकर प्रभु यीशु के साथ यरूशलेम में होने वाली घटनाओं के विषय में बातचीत करने आए थे (लूका अध्याय 9 आयत 30 से 31)। इससे स्पष्ट है कि वे पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं से परिचित थे।

• मसीहियों को यह स्मरण रखते हुए जीवन बिताने की शिक्षा दी गई है कि "हम गवाहों के ऐसे बड़े बादल से घिरे हुए हैं"—अर्थात् उन लोगों से जो हमसे पहले स्वर्ग में जा चुके हैं (इब्रानियों अध्याय 12 आयत 1)। यह पद संकेत देता है कि जो लोग हमसे पहले जा चुके हैं, वे हमारी प्रगति के विषय में कुछ जानते हैं।

• जब प्रेरित यूहन्ना स्वर्ग में थे, तब उन्होंने वहाँ ऐसे लोगों को देखा जो पृथ्वी पर रहने वालों के लिए प्रार्थना कर रहे थे (प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 आयत 9 से 10)। प्रभावी ढंग से प्रार्थना करने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें उन लोगों के विषय में कुछ जानकारी हो जिन्हें वे पृथ्वी पर छोड़ आए थे।

मैं यह नहीं कह रही हूँ कि अदृश्य लोक में रहने वाले स्त्री-पुरुष हमसे संपर्क करते हैं या हमारे साथ बातचीत करते हैं। वे ऐसा नहीं करते (टिप्पणी 4 और टिप्पणी 10 देखें)। और न ही मेरा यह अर्थ है कि वे हमारे प्रत्येक कार्य पर निरन्तर दृष्टि रखते हैं।

मैं केवल यह समझाना चाहती हूँ कि स्वर्ग में जाने का अर्थ किसी प्रकार की कमी या वंचित होना नहीं है। यह व्यवस्था चाहे जिस प्रकार कार्य करती हो, उस पिता और उस युवती ने वास्तव में कुछ भी नहीं खोया है। वे इस बात का शोक नहीं मना रहे कि युवावस्था में मृत्यु के कारण वे उन अनुभवों से वंचित रह गए जिन्हें हम उनके लिए खोया हुआ मानते हैं।

सबसे पहले, अब उन दोनों का दृष्टिकोण बदल चुका है। वे सब बातों को अनन्तता के दृष्टिकोण से देखते हैं। दूसरे, वे आने वाले जीवन की प्रतिपूर्ति का कुछ भाग पहले ही अनुभव करना आरम्भ कर चुके हैं।

• वह पिता समझता है कि जो कुछ उसे और उसके बच्चों से छिनता हुआ दिखाई देता था, वह उस अनन्त महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं है जो आगे उनकी प्रतीक्षा कर रही है—यदि वे भी उसके पीछे-पीछे स्वर्ग में आने का चुनाव करें। वह जानता है कि वे अस्थायी रूप से जो कुछ खो बैठे हैं, उससे कहीं अधिक उन्हें वापस मिलेगा।

• वह युवती अब उस भावनात्मक परिपूर्णता का अनुभव कर रही है जिसकी इच्छा हम सभी विवाह से करते हैं, परन्तु जिसे इस जीवन में कोई भी पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पाता। साथ ही उसके ऐसे सम्बन्ध भी हैं जिनमें वह किसी दूसरे का मार्गदर्शन कर सकती है, उसका पालन-पोषण कर सकती है और उसके जीवन में अपना प्रेम तथा समय लगा सकती है, ठीक वैसे ही जैसे यदि उसके अपने बच्चे होते तो वह करती। सम्भव है कि वह ऐसे किसी बच्चे का पालन-पोषण कर रही हो जिसके जन्म देने वाले माता-पिता ने स्वर्ग में आने का चुनाव न किया हो।

मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहती हूँ। मेरा उद्देश्य उन लोगों के गहरे दुःख या वास्तविक शोक को कम करके आँकना नहीं है, जो किसी मित्र या प्रियजन की मृत्यु के बाद पीछे रह जाते हैं। बल्कि मैं चाहती हूँ कि आप शोक के बीच भी उस आशा को देख सकें जो परमेश्वर हमें प्रदान करते हैं।

यदि मृत्यु ने आपको किसी ऐसे व्यक्ति से अलग कर दिया है जिसे आप प्रेम करते थे, तो यह ज्ञान कि एक दिन आपका उससे पुनर्मिलन होगा और आपका सम्बन्ध वहीं से आगे बढ़ेगा जहाँ वह इस जीवन में रुक गया था, आपके शोक के समय सच्ची सांत्वना देता है।

यदि आपका शिशु मृत्यु को प्राप्त हो गया है, तो वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। आपको अपने पुत्र या पुत्री का पालन-पोषण करने का अवसर वर्तमान स्वर्ग में या नई पृथ्वी पर अवश्य मिलेगा। उस समय वह कितनी आयु का होगा या होगी? आपके वहाँ पहुँचने तक उसकी देखभाल कौन करेगा? इन सभी प्रश्नों के उत्तर हम अभी नहीं दे सकते। परन्तु मुझे

विश्वास है कि अब आप यह समझने लगे हैं कि हमारे सामने जो भविष्य है, वह हानि का नहीं, बल्कि लाभ का भविष्य है (टिप्पणी 11 देखें)।

हाँ, यह सत्य है कि पाप से प्रभावित इस संसार में वास्तविक बिछोह और गहरे दुःख हैं। बहुत-से सम्बन्ध समय से पहले ही समाप्त हो जाते हैं। परन्तु यह सब केवल अस्थायी है।

जिस पिता का पहले उल्लेख किया गया था, वह अपने बच्चों के साथ फिर से खेलेगा—भले ही जब वे स्वर्ग पहुँचें तब वे आयु में बड़े हो चुके हों—क्योंकि उस समय उन सबमें से बुढ़ापे और नश्वरता का प्रत्येक चिन्ह पूरी तरह मिटा दिया जाएगा।

कल्पना कीजिए कि दादा-दादी फिर से युवावस्था की शक्ति प्राप्त करके पहली बार अपने पोते-पोतियों के साथ दौड़ रहे हों। जो कुछ बुढ़ापे और गठिया ने इस जीवन में उन्हें करने से रोक दिया, वह सब हमारे आने वाले घर में पूर्ण हो जाएगा।

हो सकता है कि आपके जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा यह रही हो कि आपके जन्म देने वाले माता-पिता ने आपको छोड़ दिया, या आपके साथ दुर्व्यवहार किया। शायद आपने कभी प्रेमपूर्ण, सुरक्षित और स्नेह से भरे परिवार का आशीष नहीं पाया, और न ही ऐसा माता-पिता मिला जिस पर आप विश्वास कर सकते थे। स्वर्ग में आपकी इन सभी सम्बन्धों से जुड़ी आवश्यकताओं की पूर्ण पूर्ति होगी—चाहे आपके अपने परिवार के सदस्य वहाँ पूर्णता को प्राप्त होकर आपके साथ हों, या उन नए लोगों के द्वारा जिनसे आप वहाँ मिलेंगे।

जीवन जैसा परमेश्वर ने चाहा था।

मैं यह स्वीकार करती हूँ कि इस अध्याय में कही गई कुछ बातों के समर्थन में मैं प्रत्येक विषय के लिए कोई विशेष बाइबिल पद प्रस्तुत नहीं कर सकती। फिर भी, जब हम परमेश्वर की सम्पूर्ण उद्धार योजना के व्यापक दृष्टिकोण से इन बातों पर विचार करते हैं, तो वे पूरी तरह अर्थपूर्ण प्रतीत होती हैं।

उद्धार में परमेश्वर का उद्देश्य केवल मनुष्य को पाप से बचाना ही नहीं है, बल्कि मानवजाति की सृष्टि करते समय जो मूल उद्देश्य उन्होंने निर्धारित किया था, उसे पुनःस्थापित करना और पाप के कारण जो कुछ खो गया, उसे फिर से लौटा देना भी है। प्रभु का लक्ष्य पृथ्वी के जीवन को किसी ऐसी अपरिचित या अनजानी वस्तु से बदल देना नहीं है, बल्कि उसे वैसा ही बना देना है जैसा उन्होंने आरम्भ से उसके लिए चाहा था।

निरन्तरता को स्मरण रखिए।

स्वर्ग के विषय में हमारे इस अध्ययन के दौरान निरन्तरता एक मुख्य विषय रही है—परमेश्वर के परिवार में हमारी पहचान की निरन्तरता, और उस पृथ्वी की निरन्तरता जिसे प्रभु ने अपने परिवार के निवासस्थान के रूप में बनाया है।

जिस जीवन को हम आज जानते हैं, उसका सर्वोत्तम स्वरूप आगे भी बना रहेगा। इस पतित संसार में जीवन की जो सबसे अच्छी बातें हम अनुभव करते हैं, वे आने वाले जीवन की केवल एक झलक हैं।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक पृथ्वी की प्रत्येक संस्कृति ने परिवार के प्रेम, सामूहिक भोज और आनन्दमय उत्सवों का आनन्द लिया है। आने वाले जीवन में यह सब समाप्त नहीं होगा।

दुःख की बात है कि स्वर्ग के विषय में फैली हुई गलत धारणाओं के कारण बहुत-से लोग यह सोचकर भयभीत रहते हैं कि वे जीवन की इन प्रिय और अनमोल बातों का फिर कभी अनुभव नहीं कर पाएँगे।

जब कोई प्रियजन मृत्यु को प्राप्त होता है, तब पीछे रह जाने वाले लोग अक्सर गहरी वेदना के साथ यह कहते हैं कि काश उन्हें उसके साथ केवल एक और क्रिसमस मनाने का अवसर मिल जाता, केवल एक और जन्मदिन, या परिवार के साथ एक और त्योहार।

मैं इस प्रकार के दुःख को भली-भाँति समझती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं भी इसका अनुभव किया है।

फिर भी, जो कुछ अभी कुछ समय के लिए हमसे दूर हो गया है, उसके बीच भी आशा बनी रहती है, क्योंकि आने वाले जीवन में हम अपने परिवार और मित्रों के साथ फिर से आनन्दपूर्वक उत्सव मनाएँगे।

हाँ, हम उनके साथ एक और क्रिसमस भी मनाएँगे!

मैंने कई बार उद्दण्ड पुत्र के दृष्टान्त का उल्लेख किया है। प्रभु यीशु ने यह कहानी इस बात को समझाने के लिए सुनाई कि जब कोई भटका हुआ पुत्र लौटकर आता है, तो स्वर्ग किस प्रकार आनन्द मनाता है (लूका अध्याय 15 आयत 11 से 32)।

प्रभु ने इस दृष्टान्त में पिता और पुत्र के बीच सम्बन्ध की पुनःस्थापना तथा उनके पुनर्मिलन के उत्सव का वर्णन किया। अत्यन्त आनन्दित पिता ने अपने लौटे हुए पुत्र के स्वागत में एक बड़ा भोज आयोजित किया। वह संगीत, नृत्य, उत्तम भोजन, पेय और अतिथियों

से भरपूर एक भव्य उत्सव था—ठीक वैसा ही जैसा हम किसी आनन्दमय समारोह की कल्पना करते हैं।

यदि आने वाले जीवन में परिवार और मित्रों के साथ आनन्दपूर्ण संगति और उत्सव का कोई स्थान न होता, तो प्रभु यीशु इस चित्र का प्रयोग कभी नहीं करते। वास्तव में, बाइबल यह भी बताती है कि नई पृथ्वी पर स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने परिवार के लिए एक महान भोज का आयोजन करेंगे।

"सेनाओं का यहोवा इस पर्वत पर सब जातियों के लिए उत्तम-उत्तम भोज तैयार करेगा, उत्तम दाखमधु का भोज... वह इसी पर्वत पर उस पर्दे को नष्ट कर देगा जो सब जातियों पर पड़ा हुआ है, और उस ओढ़नी को जो सब राष्ट्रों को ढाँपे हुए है। वह मृत्यु को सदा के लिए निगल जाएगा, और प्रभु यहोवा सब लोगों के आँसू पोंछ डालेगा।" (यशायाह अध्याय 25 आयत 6 से 8)

आने वाले जीवन में जो उत्सव हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, वे पाप से प्रभावित इस संसार में अब तक हुए सबसे भव्य समारोहों को भी फीका कर देंगे।

क्या आप उस दिन की कल्पना कर सकते हैं जब हम अपने परिवार और मित्रों के साथ उत्सव मनाएँगे, और हम सब पूर्ण हो चुके होंगे, तथा पाप और भ्रष्टता का प्रत्येक चिन्ह सदा के लिए मिट चुका होगा? कल्पना कीजिए कि हम किसी पर्व के भोजन पर साथ बैठे हों, जहाँ कोई भी नशे में धुत्त न हो, और न ही किसी प्रकार का झगड़ा, चिल्लाहट या कलह हो।

जीवन का आनन्द।

इस वर्तमान जीवन में सुखद क्षण चाहे कितने ही सुन्दर क्यों न हों, वे प्रायः इस पतित संसार की वास्तविकताओं के कारण धूमिल हो जाते हैं। यहाँ तक कि जब जीवन की खुशियाँ हमारी सभी अपेक्षाओं को पूरा कर देती हैं, तब भी उनके भीतर कहीं न कहीं बिछड़ने का भय छिपा रहता है, क्योंकि हम जानते हैं कि समय निरन्तर बीत रहा है।

हम यह भी जानते हैं कि यह सुख अधिक समय तक टिकने वाला नहीं है। परन्तु हमारे आने वाले घर में यह सब बदल जाएगा। वहाँ बुढ़ापे और मृत्यु की भयावह छाया सदा के लिए समाप्त हो जाएगी, और जीवन का सच्चा आनन्द हमें फिर से प्राप्त होगा।

हर व्यक्ति बच्चों को खेलते हुए देखकर प्रसन्न होता है, क्योंकि वे हमें उस आनन्द, आश्चर्य और निष्कपटता की याद दिलाते हैं जिसका अनुभव हमने उस समय किया था, जब हम जीवन की कठोर वास्तविकताओं से अभी परिचित नहीं हुए थे।

हममें से प्रत्येक अपने बचपन की उन गर्मियों को याद कर सकता है, जब ऐसा लगता था मानो वे कभी समाप्त ही नहीं होंगी।

हम घंटों तक घास पर लेटकर दोपहर के आकाश में बादलों को बदलते हुए आकार लेते देखते रहते थे। रात के समय हम अपने मित्रों के साथ दौड़ते थे और काँच की बोतल में जुगनू पकड़ते थे। जीवन के प्रति वही बाल-सुलभ उत्साह, भविष्य की आशा से उत्पन्न होने वाला आनन्द और आशावाद—अर्थात् **जीवन का सच्चा आनन्द**—एक दिन फिर हमारा होगा।

अब किसी 'बकेट लिस्ट' की आवश्यकता नहीं होगी।

बहुत-से लोग एक 'बकेट लिस्ट' बनाते हैं—अर्थात् उन कामों और स्थानों की सूची जिन्हें वे अपनी मृत्यु से पहले अवश्य पूरा करना या देखना चाहते हैं; जैसे ग्रैंड कैन्यन देखना, स्काइडाइविंग करना, माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना, या हवाई की यात्रा करना।

ऐसी सूची इस सोच से उत्पन्न होती है कि यदि इस जीवन में कोई काम पूरा नहीं हुआ, तो फिर उसे कभी पूरा करने का अवसर नहीं मिलेगा। परन्तु ऐसा विचार हमारे भविष्य के विषय में सही समझ के अभाव से उत्पन्न होता है।

केवल यही वर्तमान जीवन ही सब कुछ नहीं है। हमारी बहुत-सी योग्यताएँ, प्रतिभाएँ, रुचियाँ और गहरी इच्छाएँ केवल इस जीवन के लिए नहीं, बल्कि आने वाले जीवन के लिए भी हैं। जब हम इस सत्य को समझ लेते हैं, तब समय समाप्त हो जाने से पहले सब कुछ प्राप्त कर लेने का दबाव समाप्त हो जाता है, और उन अधूरे सपनों का दुःख भी कम हो जाता है जिन्हें हम इस जीवन में पूरा नहीं कर पाए।

मेरे पास भी एक "नई पृथ्वी की सूची" है—उन कार्यों और स्थानों की सूची जिन्हें मैं पृथ्वी के नई बना दिए जाने के बाद पूरा करना चाहती हूँ।

उस सूची में सबसे ऊपर इतिहास के प्रति अपने प्रेम को पूरा करना है। बचपन से ही मुझे इतिहास का अध्ययन करना अत्यन्त प्रिय रहा है, परन्तु इस जीवन में मेरे पास न तो पर्याप्त समय है और न ही आवश्यक साधन कि मैं इस रुचि को पूरी तरह आगे बढ़ा सकूँ। नई पृथ्वी पर मुझे यह अवसर अवश्य मिलेगा।

मैं संसार के ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करूँगी। मैं उन स्त्री-पुरुषों से मिलने की आशा रखती हूँ जो वास्तव में उन स्थानों और कालों में जीवित थे जिनका मैं अध्ययन करूँगी। वे मुझे उन स्थानों पर ले जाकर विस्तार से बताएँगे कि वहाँ क्या-क्या हुआ था, और वे ऐसी बातें भी बताएँगे जो इतिहास की पुस्तकों में कहीं लिखी नहीं हैं।

जहाँ तक मुझे स्मरण है, मेरी इच्छा हमेशा से रही है कि मैं प्राचीन इतिहास की घटनाओं को अपनी आँखों से देख सकूँ। जब भी मैं किसी ऐतिहासिक स्थान पर खड़ी होती हूँ, तो कल्पना करती हूँ कि सदियों पहले वह स्थान कैसा दिखाई देता होगा।

क्योंकि प्रभु समय की सीमाओं से बँधे हुए नहीं हैं, इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि वे मुझे इतिहास की घटनाओं को ऐसे देखने का अवसर देंगे मानो मैं स्वयं उस समय वहाँ उपस्थित रही हूँ। मैं देखना चाहती हूँ कि सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक परमेश्वर ने मनुष्यों के इतिहास में किस प्रकार कार्य किया और प्रत्येक घटना को अपनी महान योजना की पूर्ति के लिए कैसे उपयोग में लाया।

यदि आप स्टार ट्रेक के प्रशंसक हैं, तो आप निश्चय ही होलोडेक से परिचित होंगे। यह स्टारशिप एंटरप्राइज़ पर स्थित एक आभासी वास्तविकता प्रणाली थी, जिसके द्वारा उसके चालक दल के सदस्य अपने कार्यों से कुछ समय के लिए विश्राम लेकर अतीत में पहुँचने जैसा अनुभव कर सकते थे।

निश्चित ही परमेश्वर की व्यवस्था उस कल्पना से भी कहीं अधिक अद्भुत होगी जिसे इस भविष्यवादी कल्पना के रचयिता ने सोचा था।

इस अध्याय में पहले जिस पिता का उल्लेख किया गया था, उसे स्मरण कीजिए—वही पिता जो असमय मृत्यु के कारण अपने छोटे-छोटे बच्चों से बिछड़ गया था। जब उसका अपने बच्चों से पुनर्मिलन होगा, तब सम्भव है कि वह और उसके अब बड़े हो चुके बच्चे उन खोए हुए बचपन के वर्षों को फिर से जीने का निर्णय लें।

चाहे आप इस विचार से सहमत हों या नहीं, मेरा मुख्य सन्देश यही है कि हमारे सामने जो भविष्य है, वह हानि का नहीं, बल्कि लाभ का भविष्य है।इसलिए अपनी 'बकेट लिस्ट' को छोड़ दीजिए और उसकी जगह 'नई पृथ्वी की सूची' बनाइए।

नई पृथ्वी पर आप उस रुचि, व्यवसाय या खेल को अपनाने का अवसर पाएँगे जिसके लिए इस जीवन में आपके पास कभी समय नहीं था। सम्भव है कि आप एक महान उपन्यास लिखें, या एक अत्यन्त सुन्दर संगीत-रचना तैयार करें, क्योंकि उस समय वे प्रतिभाएँ भी पूरी तरह विकसित होंगी जो इस जीवन की परिस्थितियों के कारण सुप्त पड़ी रह गई थीं।

और कौन जाने, शायद आप ही वह पहले व्यक्ति हों जो सौरमण्डल की सीमा पर स्थित किसी ग्रह पर कदम रखे और इस प्रकार अन्तरिक्ष की यात्रा करने का अपना जीवनभर का अधूरा सपना पूरा करे।

इस पृथ्वी पर जब मनुष्य वृद्ध हो जाता है, तो सामान्यतः वह केवल पीछे मुड़कर ही देख सकता है—जब तक कि वह प्रभु को न जानता हो और अपने भविष्य की आशा को न समझता हो।

यह वर्तमान जीवन पृथ्वी पर जीवन का आपका एकमात्र अवसर नहीं है। आपका वास्तविक जीवन आपके पीछे नहीं, बल्कि आपके आगे है।

नई पृथ्वी पर कोई भी पीछे मुड़कर पुरानी पृथ्वी को देखते हुए यह नहीं कहेगा, "काश! मुझे केवल एक बार और यह करने का अवसर मिल जाता।"

हाँ, इस संसार में समय की घड़ी निरन्तर आगे बढ़ रही है, परन्तु निराश मत होइए।

कोई अवसर वास्तव में खोया नहीं है; वे केवल कुछ समय के लिए स्थगित हुए हैं।

हमारा भविष्य केवल वर्तमान स्वर्ग में ही नहीं है, बल्कि नई पृथ्वी पर भी है, जहाँ हम पुनरुत्थान प्राप्त, पूर्ण रूप से सिद्ध, सदैव युवा स्त्री-पुरुषों के रूप में जीवन व्यतीत करेंगे। वहाँ हम समय के भीतर जीवन जीएँगे, परन्तु कभी इस दबाव में नहीं कि समय हमारे हाथों से निकलता जा रहा है।

"धर्मियों का मार्ग भोर के प्रकाश के समान है, जो पूर्ण दिन होने तक निरन्तर अधिक से अधिक चमकता जाता है।" (नीतिवचन अध्याय 4 आयत 18)।

निष्कर्ष।

आज बहुत-से मसीही समुदायों में मुख्य ध्यान केवल इसी वर्तमान जीवन पर केन्द्रित है—कि इस जीवन को जितना सम्भव हो उतना अच्छा कैसे बनाया जाए। हमारे अन्तिम और अनन्त भविष्य पर बहुत कम, या कई बार बिल्कुल भी, ध्यान नहीं दिया जाता।

निस्सन्देह, इस जीवन को सर्वोत्तम ढंग से जीने का प्रयास करना गलत नहीं है। परन्तु हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम अनन्त अस्तित्व रखने वाले प्राणी हैं, और हमारे जीवन का सबसे बड़ा भाग इस संसार को छोड़ने के बाद का है।

यदि यही वर्तमान जीवन हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व का सर्वोच्च भाग होता, तो वास्तव में हम अत्यन्त दयनीय लोग होते। जैसा कि महान प्रेरित पौलुस ने लिखा है,

"यदि हमारी मसीह में आशा केवल इसी जीवन तक सीमित है, तो हम सब मनुष्यों से अधिक दयनीय हैं।" (1 कुरिन्थियों अध्याय 15 आयत 19)।

इसलिए हमें अपना दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है।

जो जीवन हमारे आगे है, वह केवल 'मृत्यु के बाद का जीवन' नहीं है; बल्कि यह वर्तमान जीवन ही वास्तविक जीवन की तैयारी है।

स्वर्ग के विषय में अपने इस अध्ययन को समाप्त करते हुए प्रेरित पौलुस का एक और कथन विशेष रूप से स्मरण रखने योग्य है।

"अपना मन स्वर्गीय बातों पर लगाओ; पृथ्वी की बातों में ही उलझे मत रहो।" (कुलुस्सियों अध्याय 3 आयत 2)।

उनके इन शब्दों में कितनी गहरी बुद्धिमानी है।

पाप से प्रभावित इस संसार में जीवन कई बार अत्यन्त कठिन हो सकता है। परन्तु जो कुछ आगे आने वाला है, उसका ज्ञान हमें इस यात्रा के लिए आशा और सामर्थ्य प्रदान करता है।

प्रेरित पौलुस ने यह भी लिखा है,

“हमारे वर्तमान के हल्के और क्षणिक क्लेश हमारे लिए ऐसी अनन्त महिमा उत्पन्न कर रहे हैं, जिसकी तुलना उनसे नहीं की जा सकती... इसलिए हम उन बातों पर दृष्टि नहीं लगाते जो दिखाई देती हैं, बल्कि उन बातों पर जो अभी दिखाई नहीं देतीं। क्योंकि जो बातें दिखाई देती हैं वे थोड़े समय की हैं, परन्तु जो दिखाई नहीं देतीं वे अनन्त हैं।” (2 कुरिन्थियों अध्याय 4 आयत 17 से 18)।

स्वर्ग के विषय में फैली हुई गलत धारणाओं ने बहुत-से लोगों से उस आनन्द को छीन लिया है जो आने वाले जीवन की प्रतीक्षा करने से मिलना चाहिए। इन भ्रान्तियों के कारण हमारा अनन्त घर हमें लाभ के स्थान पर हानि जैसा प्रतीत होने लगता है।

परन्तु यदि प्रभु यीशु आपके उद्धारकर्ता और प्रभु हैं, तो आपको इस जीवन के बाद आने वाले जीवन से डरने या भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

हमारा भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है—पहले वर्तमान अदृश्य स्वर्ग में, और फिर नई पृथ्वी पर, जब स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आएगा।

नई पृथ्वी वही पृथ्वी होगी जिसे हम जानते हैं और जिससे हम प्रेम करते हैं—नई भी होगी और परिचित भी; परिवर्तित भी होगी और फिर भी पहचान में आने योग्य होगी।

हमारा अनन्त घर न तो नीरस होगा, न विचित्र, और न ही हमारे अनुभव से बिल्कुल परे कोई अनजान संसार होगा।

वह जीवन वैसा ही होगा जैसा परमेश्वर ने आरम्भ से मनुष्य के लिए चाहा था।

वहाँ परमेश्वर के उद्देश्य पूर्ण होंगे, और हम अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य तथा क्षमता को प्राप्त करेंगे। उनका घर हमारा घर होगा, और हम जो कुछ भी करेंगे—चाहे कार्य हो या विश्राम, सेवा हो या आनन्द—सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए होगा, हमारे सह-मनुष्यों के लिए आशीष का कारण बनेगा, और हमारे हृदय को पूर्ण सन्तोष प्रदान करेगा।

निस्सन्देह, आने वाले जीवन के विषय में हम प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अभी नहीं दे सकते।

परन्तु जो बातें हम अभी नहीं जानते, उन्हें उन स्पष्ट सत्यों पर हमारा विश्वास कमज़ोर करने या आने वाले भविष्य के प्रति हमारे उत्साह को छीन लेने की अनुमति न दें, जिन्हें बाइबल स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।

स्वर्ग हानि नहीं, बल्कि महान लाभ है—और सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाक़ी है!

स्वर्ग का मार्ग।

हममें से अधिकांश लोग अपने आप को एक अच्छा व्यक्ति मानते हैं। परन्तु स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए भलाई का मापदण्ड हमारा नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर का है—और हममें से कोई भी उस मापदण्ड पर खरा नहीं उतरता।

“क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।” (रोमियों अध्याय 3 आयत 23)।

हमने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है और एक पवित्र परमेश्वर के सामने पापी ठहरे हैं। हमारे पाप ने हमें प्रभु के साथ उनके अनन्त निवासस्थान में रहने के योग्य नहीं रहने दिया।

इस स्थिति का एकमात्र समाधान प्रभु यीशु मसीह का क्रूस पर किया गया बलिदान है।

यीशु केवल एक भविष्यद्वक्ता या महान नैतिक शिक्षक नहीं हैं। वे स्वयं परमेश्वर हैं, जिन्होंने परमेश्वर होना छोड़े बिना मनुष्य का स्वरूप धारण किया। लगभग दो हज़ार वर्ष पहले वे अनन्तता से समय और स्थान की इस दुनिया में आए।

उन्होंने मानव स्वभाव को धारण किया और हमारे पापों का मूल्य चुकाने के लिए क्रूस पर अपने आपको बलिदान कर दिया, ताकि स्वर्ग का द्वार एक बार फिर स्त्री और पुरुष—सभी मनुष्यों के लिए खुल सके।

जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं और विश्वास करते हैं कि उनके बलिदान ने हमारे पापों का पूरा मूल्य चुका दिया है, तब हमारे पाप धो दिए जाते हैं।

परन्तु प्रभु यीशु के बलिदान को स्वीकार करना केवल उनके मृत्यु और पुनरुत्थान के ऐतिहासिक तथ्यों पर विश्वास कर लेना ही नहीं है। इसका अर्थ है कि हम उन्हें अपना प्रभु मानते हुए उनके सामने समर्पण करें और अपना सम्पूर्ण जीवन उन्हें सौंप दें।

यदि आप इस जीवन में अपना हृदय, अपना मन और अपना सम्पूर्ण अस्तित्व सर्वशक्तिमान परमेश्वर को समर्पित कर देंगे, तो वे आपको अपने साथ अनन्त जीवन देंगे—पहले वर्तमान अदृश्य स्वर्ग में, और फिर नई पृथ्वी पर।

जीवन अनिश्चित है, और किसी को भी आने वाले कल का भरोसा नहीं दिया गया है।

यदि आपने अभी तक प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार नहीं किया है, तो मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि आज ही उनके प्रति यह समर्पण करें।

उनके बिना अनन्तता में प्रवेश मत कीजिए।

स्वर्ग तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग प्रभु यीशु मसीह ही हैं।

टिप्पणियाँ।

2 कुरिन्थियों अध्याय 12 आयत 4 में प्रेरित पौलुस ने लिखा कि उन्होंने "ऐसी अवर्णनीय बातें सुनीं, जिन्हें मनुष्य के लिए कहना उचित नहीं।" इस पद का कभी-कभी यह अर्थ लगाया जाता है कि परमेश्वर नहीं चाहते कि हम स्वर्ग के विषय में कुछ भी जानें, क्योंकि पौलुस ने अपने अनुभव का वर्णन नहीं किया।

यदि ऐसा ही होता, तो फिर प्रेरित यूहन्ना को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में स्वर्ग की अपनी यात्रा का इतना विस्तृत विवरण लिखने की आज्ञा क्यों दी गई?

पौलुस ने अपने अनुभव का वर्णन दो कारणों से नहीं किया।

पहला, स्वर्ग में उन्होंने ऐसी बातें सुनीं जिनका वर्णन करने के लिए उनके पास उपयुक्त शब्द ही नहीं थे।

दूसरा, केवल परमेश्वर ही जिन कारणों को जानते हैं, उनके अनुसार प्रेरित पौलुस को अपनी स्वर्ग-यात्रा के कुछ विशेष विवरण प्रकट करने की अनुमति नहीं दी गई थी।

यरूशलेम का मन्दिर वास्तव में उससे पहले बने मिलापवाले तम्बू (तम्बू-ए-मुलाकात) के आधार पर निर्मित किया गया था।

मिलापवाला तम्बू इस उद्देश्य से बनाया गया था कि वहाँ प्रभु अपने लोगों से मिलें, जब वे उनकी आराधना करें और बलिदान चढ़ाएँ।

जब मूसा परमेश्वर की व्यवस्था ग्रहण करने के लिए सीनै पर्वत पर गए, तब परमेश्वर ने उन्हें मिलापवाले तम्बू के निर्माण के विषय में विस्तार से निर्देश दिए।

प्रभु ने उनसे कहा,

"वे मेरे लिए एक पवित्रस्थान बनाएँ, ताकि मैं उनके बीच निवास करूँ। इस निवासस्थान और उसके सब सामान को उसी नमूने के अनुसार बनाना, जो मैं तुझे दिखाता हूँ।" (निर्गमन अध्याय 25 आयत 8 से 9)।

बाद में प्रेरित पौलुस ने प्रकट किया कि मूसा को दिया गया यह नमूना स्वर्ग में स्थित वास्तविक निवासस्थान के आधार पर था (इब्रानियों अध्याय 8 आयत 5; अध्याय 9 आयत 23)।

कुछ लोग भिखारी लाज़र और धनवान व्यक्ति के वर्णन को केवल एक दृष्टान्त या कहानी मानते हैं, न कि वास्तविक घटना।

परन्तु ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि प्रभु यीशु ने उस भिखारी का नाम **लाज़र** बताया।

प्रभु यीशु ने अपने अनेक दृष्टान्त सुनाए, परन्तु उनमें यह एकमात्र अवसर है जब उन्होंने किसी पात्र का व्यक्तिगत नाम लिया।

प्रभु का एक प्रिय मित्र भी था जिसका नाम लाज़र था (यूहन्ना अध्याय 11 आयत 5)।

यदि यह केवल एक काल्पनिक कहानी होती, तो किसी भिखारी के लिए यही नाम चुनने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि इससे उनके वास्तविक मित्र लाज़र के साथ भ्रम उत्पन्न हो सकता था। इसलिए यह मानना अधिक स्वाभाविक है कि यह किसी वास्तविक व्यक्ति का नाम था।

प्रभु यीशु के अनुसार उन दोनों व्यक्तियों का अन्त बिल्कुल भिन्न था, और उनका भविष्य इस जीवन में उनके आचरण से सीधे जुड़ा हुआ था।

धनवान व्यक्ति नरक में गया, जो पीड़ा का स्थान है।

लाज़र उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसे वह "सान्त्वना और आनन्द" प्राप्त हुआ जिससे वह इस जीवन में वंचित रहा था (लूका अध्याय 16 आयत 25)।

प्रभु यीशु ने यह घटना उन धार्मिक अगुओं के एक समूह—फरीसियों—को उत्तर देते समय सुनाई थी।

फरीसी भी उस धनवान व्यक्ति की तरह अत्यन्त लोभी थे।

इस वर्णन के माध्यम से प्रभु ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर न फिरें, तो उनकी लोभपूर्ण जीवन-शैली का परिणाम भी वही होगा।

प्रभु यीशु द्वारा सुनाए गए इस वर्णन के कुछ पहलुओं को समझाने के लिए जितनी विस्तृत चर्चा की आवश्यकता है, उसके लिए इस पुस्तक में पर्याप्त स्थान नहीं है। फिर भी, इससे हम अदृश्य लोक में रहने वाले मनुष्यों के विषय में कई महत्वपूर्ण बातें समझ सकते हैं।

जब लोग यह जान लेते हैं कि अदृश्य लोक में रहने वाले स्त्री-पुरुष पृथ्वी पर होने वाली कुछ घटनाओं से परिचित होते हैं, तब प्रायः एक प्रश्न पूछा जाता है:

यदि हमारे मित्र और प्रियजन हमारे दुःखों और आँसुओं के विषय में जानते हैं, तो क्या इससे उनके आनन्द में कमी नहीं आएगी?

उत्तर है—नहीं।

इसका कारण यह है कि स्वर्ग में रहने वाले लोगों का दृष्टिकोण हमारे वर्तमान दृष्टिकोण से भिन्न होता है। वे सब बातों को अनन्तता के परिप्रेक्ष्य से देखते हैं और समझते हैं कि पृथ्वी के दुःख आने वाले अनन्त आनन्द की तुलना में अत्यन्त छोटे और क्षणिक हैं।

यह उसी प्रकार है जैसे किसी छोटे बच्चे का अपना प्रिय खिलौना खो जाना। यद्यपि उस समय बच्चा वास्तव में बहुत दुःखी होता है, फिर भी उसके माता-पिता जानते हैं कि पूरे जीवन की दृष्टि से देखा जाए तो एक खिलौने का खो जाना उतनी बड़ी विपत्ति नहीं है जितनी उस क्षण बच्चे को प्रतीत होती है।

इसी प्रकार, स्वर्ग में रहने वाले लोग जानते हैं कि इस जीवन की कठिनाइयाँ और पीड़ाएँ अनन्त जीवन की तुलना में केवल थोड़े समय की हैं। इसलिए वे इस संसार की विपत्तियों से उसी प्रकार व्याकुल नहीं होते जैसे हम होते हैं (2 कुरिन्थियों अध्याय 4 आयत 17 से 18; रोमियों अध्याय 8 आयत 18)।

जब प्रेरित यूहन्ना स्वर्ग में थे, तब उन्होंने वहाँ ऐसे स्त्री-पुरुषों को देखा जो उन लोगों के लिए परमेश्वर से पुकार रहे थे जिन्हें मसीह पर विश्वास के कारण शहीद किया जाना था।

उन्होंने यह प्रार्थना नहीं की, "हे प्रभु, हमारे भाइयों और बहनों को मारे जाने से बचा लीजिए।"

इसके स्थान पर उन्होंने प्रार्थना की,

"हे प्रभु, आप पृथ्वी पर न्याय कब स्थापित करेंगे और सब कुछ कब ठीक करेंगे?"

वे और स्वर्ग के अन्य निवासी यह भली-भाँति समझते हैं कि परमेश्वर का अन्तिम उद्देश्य केवल किसी एक व्यक्ति के अस्थायी दुःख या पीड़ा को रोक देना नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण मानवजाति और सारी पृथ्वी को स्थायी रूप से उसी स्थिति में पुनःस्थापित करना है, जैसी स्थिति पाप के प्रवेश करने से पहले थी।

क्या स्वर्ग में रहने वाले लोग यह जानते हैं कि हमें नई गाड़ी मिली है या हमें नौकरी में पदोन्नति मिली है?

बाइबल इस विषय में कुछ नहीं कहती।

हाँ, वह इतना अवश्य संकेत करती है कि उनकी सबसे बड़ी चिन्ता हमारी आत्मिक अवस्था और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की प्रकट होती हुई उद्धार-योजना के विषय में होती है (लूका अध्याय 9 आयत 28 से 31; इब्रानियों अध्याय 12 आयत 1)

जो लोग गैर-मसीही देशों में रहते हैं और अपने पूरे जीवन में कभी प्रभु यीशु का नाम भी नहीं सुन पाते, उनके अनन्त भविष्य के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी वेबसाइट www.richesinchrist.com पर जाएँ। वहाँ आपको इस विषय पर दो विस्तृत श्रव्य शिक्षाएँ मिलेंगी—"जंगल में रहने वाले मूल निवासी का क्या होगा?" (4 अक्टूबर, 2013) और "जंगल में रहने वाले मूल निवासी के विषय में और अधिक" (11 अक्टूबर, 2013)।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को पृथ्वी पर परमेश्वर के अनन्त राज्य की स्थापना से सम्बन्धित घटनाओं का प्रत्येक विवरण नहीं दिया गया था। इसलिए एक ही भविष्यवाणी में कभी-कभी ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख होता है, जिनके बीच अनेक वर्षों का अन्तर हो सकता है।

उदाहरण के लिए, यशायाह ने लिखा,

"क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कन्धे पर होगी।" (यशायाह अध्याय 9 आयत 6)।

इस भविष्यवाणी का आरम्भिक भाग प्रभु यीशु के प्रथम आगमन का वर्णन करता है, जब वे बैतलहम में मरियम से एक बालक के रूप में जन्मे। परन्तु इसका दूसरा भाग उस कार्य की ओर संकेत करता है जिसे वे अपने दूसरे आगमन के समय करेंगे—अर्थात् पृथ्वी के शासन को अपने अधिकार में ले लेंगे।

प्रभु के पुनरागमन के भी विभिन्न चरण हैं, और उससे सम्बन्धित अनेक घटनाएँ समय की एक अवधि में क्रमशः घटित होंगी—जैसे कलीसिया का उठा लिया जाना, महाक्लेश, विभिन्न न्याय, और एक हजार वर्ष का राज्य।

इन विषयों पर विस्तार से चर्चा किसी अन्य पुस्तक का विषय है। इस समय हमारा उद्देश्य इन सभी घटनाओं के अन्तिम परिणाम का अध्ययन करना है—नए आकाश और नई पृथ्वी।

नई पृथ्वी पर जीवन का वर्णन करने के लिए जिन पवित्रशास्त्र के पदों का मैंने उल्लेख किया है, वे ऐसे अंशों में पाए जाते हैं जिनमें प्रभु के पुनरागमन के अन्य पहलुओं का भी वर्णन है। आशा है कि यदि आपने पहले इन पदों को अन्त-समय की किसी अन्य विशेष घटना के संदर्भ में सुना हो, तो यह टिप्पणी किसी भी सम्भावित भ्रम को दूर कर देगी। इन पवित्रशास्त्रीय अंशों में विषयों का कुछ परस्पर मेल है।

निम्नलिखित उद्धरण "कार्य और तथ्य" नामक एक मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेख से लिया गया है, जिसे सृष्टि अनुसंधान संस्थान प्रकाशित करता है:

"वर्षों से सृष्टि पर अध्ययन करने वाले विद्वानों ने जलप्रलय से पहले की पृथ्वी के सम्बन्ध में अनेक सम्भावनाओं का परीक्षण किया है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी के वायुमण्डल के ऊपर जलवाष्प की एक विशाल परत होने का संस्थान का पुराना प्रतिरूप कठोर वैज्ञानिक परीक्षणों में सफल सिद्ध नहीं हुआ। जब तक कोई नया प्रमाण उपलब्ध नहीं हो जाता, तब तक हमें जलप्रलय-पूर्व संसार का अत्यन्त विस्तृत पुनर्निर्माण करने पर आग्रह नहीं करना चाहिए। फिर भी हम थोड़े-से विज्ञान और उत्पत्ति की पुस्तक के प्रचुर मार्गदर्शन के साथ उस रोचक युग का अध्ययन करते रह सकते हैं।" (थॉमस, जनवरी 2016, पृष्ठ 20)।

इस बात के एक और प्रमाण के रूप में कि प्रारम्भिक मसीही विश्वास करते थे कि पशुओं के अस्तित्व में भी एक अभौतिक भाग होता है, ध्यान दीजिए कि नए नियम के लेखकों ने पवित्रशास्त्र के एक प्रसिद्ध पद में यूनानी शब्द "सुखे" का किस प्रकार प्रयोग किया है। यह पद प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के केवल कुछ वर्षों बाद लिखा गया था। नीचे दिए गए पद में गाढ़े अक्षरों में जिन शब्दों का उल्लेख है, मूल यूनानी भाषा में वे सभी "सुखे" शब्द का अनुवाद हैं।

"क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खो देगा; परन्तु जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खो देगा, वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे संसार को प्राप्त कर ले, पर अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? अथवा मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?" **(मत्ती अध्याय 16 आयत 25 से 26)।**

कुछ लोगों के मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि जीवन का वृक्ष और भले तथा बुरे के ज्ञान का वृक्ष वास्तव में किस प्रकार के वृक्ष थे, और उनका उद्देश्य क्या था।

बाइबल यह नहीं बताती कि वे किस प्रकार के वृक्ष थे। जहाँ तक उनके उद्देश्य का प्रश्न है, उस पर विस्तार से चर्चा करने के लिए यहाँ पर्याप्त स्थान नहीं है, फिर भी इस एक विचार पर ध्यान दीजिए।

यद्यपि वे दोनों वास्तविक वृक्ष थे, फिर भी वे प्रतीकात्मक अर्थ भी रखते थे।

यदि आदम जीवन के वृक्ष का फल खाता, तो वह प्रभु के प्रति अपने समर्पण और उन पर अपनी निर्भरता को प्रकट करता। यह चुनाव आदम (और आदम में सम्पूर्ण मानवजाति) को परमेश्वर के अनन्त जीवन के साथ जोड़ देता।

परन्तु दूसरे वृक्ष का फल खाना प्रभु से स्वतन्त्र होने का चुनाव था। उसका परिणाम आदम और सम्पूर्ण मानवजाति के लिए मृत्यु बना, क्योंकि उसने मनुष्य को जीवन के एकमात्र स्रोत—सर्वशक्तिमान परमेश्वर—से अलग कर दिया।

यह तथ्य कि मूसा और एलिय्याह ने प्रभु यीशु से बातचीत की, इस बात का प्रमाण नहीं है कि अदृश्य लोक में रहने वाले मनुष्य पृथ्वी पर रहने वाले लोगों से सामान्य रूप से बातचीत करते हैं।

वह एक असाधारण और विशेष घटना थी।

ये दोनों पुराने नियम के पवित्र जन प्रभु यीशु से बात करने आए थे, जो उस समय भी और आज भी देहधारी परमेश्वर हैं।

उन्होंने पतरस, याकूब या यूहन्ना से कुछ भी नहीं कहा।

मूसा और एलिय्याह—दोनों ने अपने पृथ्वी के जीवनकाल में परमेश्वर की प्रकट होती हुई उद्धार-योजना में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

प्रभु यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना उसी उद्धार-योजना की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना थी, और इन दोनों पुरुषों को यह विशेष सम्मान दिया गया कि उसके घटित होने से कुछ समय पहले वे प्रभु के साथ उस विषय में वार्तालाप करें।

क्या हम पूरी निश्चितता के साथ यह कह सकते हैं कि शिशु और छोटे बच्चे स्वर्ग में जाते हैं?

इस विषय पर विस्तार से चर्चा करने के लिए एक अलग पुस्तक की आवश्यकता होगी। फिर भी, इस सम्बन्ध में कुछ संक्षिप्त बातों पर विचार कीजिए।

बाइबल में ऐसा कोई एक पद नहीं है जो स्पष्ट रूप से यह कहता हो कि शिशु और छोटे बच्चे स्वर्ग में जाते हैं या नहीं जाते। किन्तु परमेश्वर का वचन हमें कई सशक्त संकेत अवश्य देता है।

पवित्रशास्त्र बताता है कि जब राजा दाऊद के छोटे शिशु की मृत्यु हुई, तब इस शोकाकुल पिता को इस ज्ञान से सान्त्वना मिली कि वह आने वाले जीवन में अपने बच्चे को फिर से देखेगा (2 शमूएल अध्याय 12 आयत 23)।

परमेश्वर न्यायी हैं, और वे प्रत्येक मनुष्य के साथ न्याय करते हैं, यहाँ तक कि उन शिशुओं और छोटे बच्चों के साथ भी जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मिलने वाले उद्धार के सुसमाचार को समझने और स्वीकार करने की आयु तक पहुँचने से पहले ही इस संसार से चले जाते हैं।

जैसा कि हमने स्वर्ग के इस अध्ययन में बार-बार देखा है, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की योजना अपने सृजे हुए को नष्ट करने की नहीं, बल्कि उसे पुनः प्राप्त करने और उसका उद्धार करने की है।

बाइबल घोषणा करती है कि अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा प्रभु यीशु मसीह ने मानवजाति के लिए उससे कहीं अधिक उपलब्ध कराया है, जितना आदम के पाप ने परमेश्वर की सृष्टि से छीन लिया था (रोमियों अध्याय 5 आयत 12 से 19)।

इसलिए, प्रभु के स्वभाव और उनकी उद्धार-योजना के आधार पर हम विश्वास के साथ यह आशा रख सकते हैं कि किसी न किसी प्रकार क्रूस के द्वारा शिशुओं और छोटे बच्चों के लिए भी परमेश्वर ने उद्धार का प्रबन्ध किया है।

संदर्भ सूची।

मिस्लर, चक, और मार्क ईस्टमैन। 2013. एलियन मुठभेड़ें: यूएफ़ओ घटना के पीछे का रहस्य। कोर डी'अलेन, इडाहो: कोईनोनिया हाउस, पृष्ठ 85–87।

स्ट्रॉन्ग, जेम्स। 2004. स्ट्रॉन्ग का सम्पूर्ण शब्द-अध्ययन अनुक्रमणिका: विस्तारित संस्करण। सम्पादक: वॉरेन बेकर। चैटनूगा, टेनेसी: ए.एम.जी. प्रकाशन।

थॉमस, ब्रायन। 2016. "सृष्टि सम्बन्धी प्रश्न और उत्तर: जलप्रलय से पहले का संसार कैसा था?" *एक्ट्स ऐंड फ़ैक्ट्स*, जनवरी, पृष्ठ 20।

वाइन, डब्ल्यू. ई.। 1984. नए नियम के शब्दों का विस्तारित व्याख्यात्मक शब्दकोश। सम्पादक: जॉन आर. कोहलेनबर्गर। मिनियापोलिस, मिनेसोटा: बेथनी हाउस प्रकाशन।

वेब्स्टर का नवीन विद्यार्थी शब्दकोश। 1969. स्प्रिंगफ़ील्ड, मैसाचुसेट्स: जी एंड सी मेरियम कम्पनी।